Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-8.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

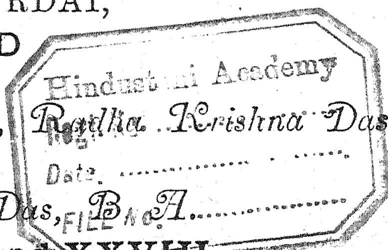
EDITED

BY

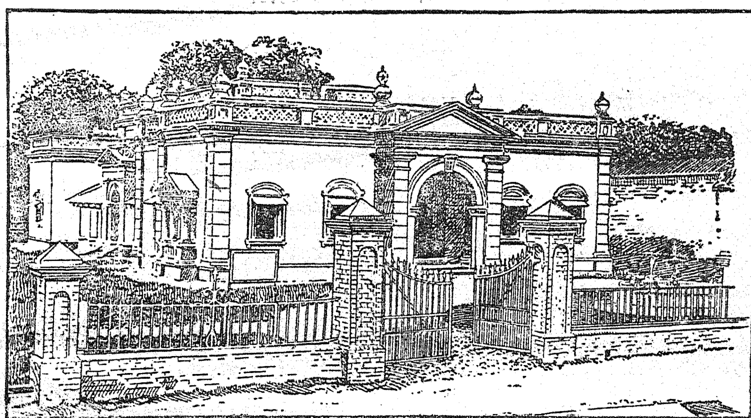
Mohanlal Vishnulal Pandia, Radha Krishna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.



CANTOS XXV and XXVIII.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

पजान ॥

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया ।

पर्व्व २५ और २८

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1906.

मूल्य १॥)]   Issued 15th December 1906.   [*Price Re. 1-8.*

सूचीपत्र ।

—:o:—

(२५) शशिवृता वर्णन .... पृष्ठ ८३३ से ८६४ पृष्ठ

(२६) देवगिरि समय .... ,, ८६५ ,, ८८१ ,,

(२७) रेवातट समय .... ,, ८८२ ,, ९१२ ,,

(२८) अनंगपाल समय .... ,, ९१३ ,, ९४४ ,,

दूसरे भाग का टाइटिल पेज और सूचीपत्र ।

—:o:—

रासोसार .... पृष्ठ १ से ६४ पृष्ठ तक ।

बीरा रस्स उतावल न रहै बरजिंदा।
अलबेला सु उछंछला अनमी अवलंदा॥
गाहड़ मल्ल गुमान गुर गुन गात गुरंदा।
बजे निसान नफेरियान घोर घुरंदा॥ छं० ॥ ५३९ ॥
त्तत्त बीर सुनंत तन तामस्स भरंदा।
सुनि चौसट्ठी जुगिन किलकि किलकंदा॥
भूत भयानक भाव भरि भहरें भहरंदा।
थेइ थेई गति षेच पाल किलकार करंदा॥ छं० ॥ ५४० ॥
बावन बीर [1]बलिष्ट बर बल करि बिलसंदा।
देषैं देव विमान चढ़ि कौतिग्ग अनंदा॥
तारी दै दै तान तुट्टि नारद्द नचंदा॥ छं० ॥ ५४१ ॥
गाथा॥ नंचै नारद सिद्धं। बुद्धे बुद्धिवंत सुभहाई॥
बंधे वुधिवर भट्टं। सहकारं बीर [2]भट्टायं॥ छं० ॥ ५४२ ॥

सुसज्जित सेना से पावस की उपमा वर्णन।

चौपाई॥ नाम नाम जिम पूरन स्याम। तडित बेन धुक्की धर धाम॥
गर्जित सिंह अपास सबद्द। करनि भज्जि होत जिन मद्द॥छं०॥५४३॥
गाथा॥ मदंक रीति भग्गा। आकास यौ सद्दयौ सद्दं॥
सो क्रमं वर मंचं। फेरं अकुंस सीसए मारं॥ छं० ॥ ५४४ ॥

अंकुस लगा कर हाथी बढ़ाए गए और शस्त्र निकाल कर शूरबीर लोग आगे बढ़े।

दूहा॥ अकुंस मारि प्रहारि गज। बंधन अध पूजान॥
शस्त्र कढ़ि संमुह भिरन। धनि संभरि चहुआन॥ छं० ॥ ५४५ ॥

कमधज्ज के शीश पर छत्र उठा उसकी शोभा।

अरिल्ल॥ उठ्यौ छत्र कमधज्ज नरिंदह सीश पर॥
मनों कनक दंड पर ज्यूं इंदी इंदबर॥

(१) ए० कृ० को०—अरिष्ट। (२) ए. कृ. को.-भट्टाई।

घोड़ों की टापों से आकाश में धूलि छागई।

हय षुर [1]उच्छरि षेह अयासह धुंधरी।
बान गंग प्रथिराज देषनह उत्तरी ॥ छं० ॥ ५४६ ॥

चहुआन का घोड़े पर सवार होना।

दूहा ॥ बहकि निरह नष्षर भिदै। यह पारथ पविचान ॥
सो प्रति सारह उत्तरन। फिरि चढ्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ५४७ ॥

उस दिन तिथि दसमी को युद्ध के समय के तिथि योग नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त ॥ देव दसमि दिन दीह। दीह पद्धरौ नरिंदं ॥
गुरु पंचम रवि नमो। सुवर ग्यारमो सुचंदं ॥
चतिय थान बर भोम। सुक्र सप्तम बर कीनौ ॥
नृप सुपनंतर आइ। ईस [2]जीपन बर दीनौ ॥
चौसठ्ठि पुठ्ठि वि पुठ्ठियन। अरिन सेन संमुह [3]परे ॥
त्रिघोष सद्द बज्जंत सब। सुवर लोह कट्ठे करे ॥ छं० ॥ ५४८ ॥

युद्ध वर्णन।

छंद त्रिभंगी ॥ कविचंद सुबरनं करै सुकरनं सूरह लरनं भर भिरनं ॥
तिरभंगी छंदं नाग नरिंदं कथ्य करिंदं दुष हरनं ॥
[4]पढ़ मंदह मत्ता पुनि अठ मत्ता असु वसु मत्ता रस मत्ता ॥
घन घाइ सघत्ता सूर सरत्ता में गल मत्ता करि धत्ता ॥ छं० ॥ ५४९ ॥
बज्जे बर कोहं लग्गै लोहं छक्कै छोहं तजि मोहं ॥
सूरा तन सोहं स्वामिन द्रोहं मत्ते जोहं रिन डोहं ॥
बर बान बिछुट्टै बगतर फुट्टै पारन षुट्टै धर तुट्टै ॥
तरवारनि तुट्टै धब्भर लुट्टै अंग अहुट्टै गहि झुट्टै ॥ छं० ॥ ५५० ॥
बीरा रस रज्जं सूरस गज्जं सिंधुअ बज्जं गज गज्जं ॥
अच्छरि तन मज्जं बरे बर जंजं चित्ते बज्जं मन मज्जं ॥

(१) मो.-उत्सरि। (२) को.-जीयन (३) मो.-परे, करे।
(४) ए. कृ. को.-पीर मंदह मन्तापुर नन्दी।

कायर रन भज्जं तज्जि सलज्जं स्वामि सु कज्जं भर सज्जं ॥
जम दड्ढ सु सज्जे हथ्थह मज्जे छिन्छन छज्जे रिन रज्जे ॥छं०॥५५१॥

घायल सामंतों की शोभा।

सोरठा ॥ रिन मंते सामंत। घाइ अंग तज्जे घने ॥
मनो मत्त [1]मय मंत। बिना महावत रारि मिलि ॥ छं० ॥ ५५२ ॥

शूरवीरों का क्रोध में आकर युद्ध करना।

छंद भुजंगी ॥ कढै लोह कोहं दुदीनंति बज्जै।
सजे तामसं राज सा [2]तुक्क तज्जै ॥
[3]कटे कंध सूरं मिले सार कोहं।
सना हंत सूरं फिरैं [4]बेस सोहं ॥ छं० ॥ ५५३ ॥
उडै टोप टूकं बजै सार घंटै।
मनो अग्ग दंगी लगी बंस फुट्टै ॥
मनों मीन माया जलं सब्ब तुट्टै।
.... ॥ छं० ॥ ५५४ ॥
असी मंस तुट्टै करं कंस हल्लै ॥
मनो कग्गदं काल बूतं सु चल्लै
सु भट्टं सु सूरं कुघट्टं सु कीनं।
उलथ्थं सभेजी छतं जान धीनं ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
चढ्यौ पावसं जद्दवं संभरेसं।
दलं बद्दलं सद्दलं त नरेसं ॥
घनं घोर घंटा निसानं दिसानं।
तिनं भूलियं सब्ब आषाढ मानं ॥ छं० ॥ ५५६ ॥
झवै दामिनी तेग वेगं प्रमानं।
पढ़ै भट्ट बीरं बुलै मोर बानं ॥
लगै बाइ बुट्ठे सरं सार गोरी।
रुधिं नार मानो प्रवाहै स [5]जोरी ॥ छं० ॥ ५५७ ॥

(१) ए. कृ. को.-मैं। (२) मो.-सात्विक्क।
(३) ए. कृ. को.-कढ़े। (४) ए. कृ. को.-त्रेस। (५) ए.-जारी।

करैं कायरं चीय करुना प्रमानं।
लगै बाह कालंदि चंपे समानं॥*
ऊनं चीय जंपी उनं पीय जंप्यौ।
सोई ओपमा चंद बरदाइ थप्यौ॥ छं०॥ ५५८॥

कवि का कथन कि उन सामंतों की जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

दूहा॥ देवप्पति देवह सु दुति। मति सामंत सधंत॥
जिन अच्छरि सच्छरि कहैं। सो जस बाढ बर कंत॥ छं०॥ ५५९।
गाथा॥ जस धवली बर बढयं। चय लोकं साध [1]यौ तरयं॥
जानिज्जै परिमानं। सतं समुद्द सींचयो [2]नीरं॥ छं०॥ ५६०॥
छंद लघुचोटक॥ मिलि जुद्ध मच्यौ। रन षेत रच्यौ॥
सम सार सच्यौ। नव एक मुच्यौ॥ छं०॥ ५६१॥
रस बीर षच्यौ। तन रारि [3]तच्यौ॥
कहँ जाइ बच्यौ। .... ॥ छं०॥ ५६२॥
जुग्गनि जितनी। किलकैं तितनी॥
घन घाइ घुरैं। पट सीस परैं॥ छं०॥ ५६३॥
दोउ वीर बड़े। लगि लोह अड़े॥
घट घाइ पड़े। झुर होइ झड़े॥ ५६४॥
सस केश डफै। तन सों तड़फै॥
फिफरा फड़कै। कढि सों कड़कै॥ छं०॥ ५६५॥
पग हथ्थ परैं। ढी चाल [4]ढुरैं॥
धक धींग धकें। मुष मार बकें॥ छं०॥ ५६६॥
रस बीर छकें। हक हूक हकें॥
बहु सूर लरें। न्रप भार परें॥ छं०॥ ५६७॥

---

* ए. कृ. को. प्रतियों में इसके आगे ये दो पंक्तियां हैं।
उनै मैन त्रासं उनै सत्र सारं। लभ्यो काइरं कामनी ना प्रभासं॥

(१) ए. कृ. को.-सो। (२) मो.-नीयं।
(३) ए. कृ. को.-रच्यौ। (४) मो.-ढरे।

कमधज्ज के बीर खवास का युद्ध और पराक्रम वर्णन।

दूहा ॥ सुबर बीर षावास भिरि। मुक्कि सु धाम धमारि ॥
सो ओपम कविचंद कहि। झुकि कढ्ढी परिहार ॥ छं० ॥ ५६८ ॥
अरिल्ल ॥ मोह पारि जिन छंडिय सूर। तिरन बीर भारथ्थयह पूर ॥
दैव जुद्ध आक्रत्ति अबुद्ध। कढ़े लोह दुव कोदह जुद्ध ॥ छं० ॥ ५६९ ॥
छंद विराज ॥ कढ़ै लोह बीरं। महा मल्ल तीरं ॥
हको हक्क वज्जी। गिरं जानि गज्जी ॥ छं० ॥ ५७० ॥
कढें मत्त मंती। अदृतं न दंती ॥
वहै लोह सारं। प्रहारंत भारं ॥ छं० ॥ ५७१ ॥
झनंके झनंकी। रथं भान थक्की ॥
हलक्कंत सूरं। बजे देव तूरं ॥ छं० ॥ ५७२ ॥
उतं मंग तुट्टै। [1]घरी दोम लुट्टै ॥
घरी इक जानं। सु भारथ्थ मानं ॥ छं० ॥ ५७३ ॥
दूहा ॥ सुबर बीर षावास षिजि। कढ्ढी बंकी असि ॥
सोभै सीस गयंद कै। मनु तेरस कौ ससि ॥ छं० ॥ ५७४ ॥

खवास तो मारा गया परंतु उसका अखंड यश युगान युग चलेगा।

कवित्त ॥ सुबर बीर षावास। षिझ्झि कढ्ढी सु बंकि असि ॥
सुभै सीस गज राज। अब तेरसि कि बाल ससि ॥
मुट्ठि चंपि द्रग पानि। नीर बानं सुढारह ॥
मनु मुत्तिय वारुन्न। बंदु बंधे इन बारह ॥
साम रम देन पावरि धनि। स्वामि सु अंतर फुनि मिलिय ॥
जीरन [2]युमास संदेस सदि। गल्ह एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ॥ ५७५ ॥

खवास के मरने से कमधज्ज को बड़ा दुःख हुआ और उसने अपने मंत्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए।

(१) मो.-धरी। (२) ए. कृ. को.-जुगा।

अरि मंडल षंडल करन। तिरन मोह मति [1]सिंध ॥
रस्स बली बीरा विषम। लै भारथ्थ सकंध ॥ छं० ॥ ५९१ ॥

दुपहर के समय कमधज्ज की फौज फिर से लौट पड़ी।

कंध बंध संधिय निजर। परी पहर मध्यान ॥
तब बहुर्यौ पारस फिरिय। फिर्यौ [2]भीछ चहुआन ॥ छं० ॥ ५९२ ॥

कमधज्ज और चहुआन खड्ग लेकर क्षत्री धर्म्म में प्रवृत्त हुए।

कवित्त ॥ छल संज्यौ बल जोग। बुद्धि बलजोग पसारिय ॥
चाहुआन कमधज्ज। षग्ग षचीवस डारिय ॥
रत्तन जुद्ध विरुद्ध। सद्द सद्दह मति कीनी ॥
चारद्दिसि विढ्ढुरै। बीर बीरं रस पीनी ॥
संग्राम धाम धंमार परि। काम धाम धम्मार तजि ॥
सामंत सूर सामंत बर। धीर बीर धारहति लजि ॥ छं० ॥ ५९३ ॥

शूरबीर हाथियों के दांत पकड़ पकड़ कर पछाड़ने लगे।

दूहा ॥ मैं लज्जानी लज्ज बर। गब्ब दब्ब सामंत ॥
अंत अलुभभ्भय पंति पय। भिरि भंजै गज दंत ॥ छं० ॥ ५९४ ॥
भै रत्त अरत्त सरीर गति। सिंध सरोज सु पान ॥
सूर बदौं सामंत दुज। जिन अप्पै जिय दान ॥ छं० ॥ ५९५ ॥
जीव दान अप्पन सु रत। दल दंतिय बढ़ि कंत ॥
हनूमान जिम द्रोन बर। बारधि मंत [3]सुपंति ॥ छं० ॥ ५९६ ॥
चौपाई ॥ बार बारधि बर पंति सुमान। सूर धीर सामंत सुजान ॥
दल बल बल बिछोरहि बीर। षग्ग मुष झलकंतह नीर ॥ छं० ॥ ५९७ ॥

महाभारत में अर्जुन के अग्निबाण के युद्ध से इस युद्ध की उपमा देना।

कवित्त ॥ षग मुष बर चढ्ढिये। धाइ तुट्टै है राजं ॥
बार बार हक्कही। करै अग्या बिन साजं ॥

(१) ए. कृ. को.-छंध, छंद। (२) मो. भीच। (३) ए. कृ. को.-सुपाति।

[1]बाल स्वामि अग्या । विभंग चित ओपम चंदं ॥
चिय कठोर निड्डन । क्रमै अग्या गुन मंदं ॥
करतलह सु कवि कित्तिय सुबर । पथ थकै आजान जिम ॥
भारथ्थ वीर पारथ्थ जिम । अग्गिवान सामंत [2]भ्रमि ॥ छं० ॥ ५९८ ॥

घोर संग्राम का वर्णन ।

छंद हनूफाल ॥ इति हनूफालय छंद । कवि पढ़ै भारथ चंद ॥
भ्रम भ्रमहि बीर प्रकार । ज्यों चक्र चक्रिय धार ॥ छं० ॥ ५९९ ॥
घरि घट्टै एक विघट्ट । बर बीर भंज्या पट्ट ॥ छं० ॥ ६०० ॥
दूहा ॥ पट्टन भंज्या बीरवर । ज्यों दद्धीच सु अस्ति ॥
देवकाज बज्जी लियौ । सोइ बर तत्त सबत्ति ॥ छं० ॥ ६०१ ॥
कवित्त ॥ बस चत्तीय प्रकार । घाइ बज्जै घट घुम्मै ॥
मार मार उच्चार । सार सारहु बर झुम्मै ॥
एक मार संमार इक । सु मारति तै मारै ॥
एकं भार उभार । एक जारति उझ्झारै ॥
घरि एक तरंगनि जक्कि जल । कमल जानि नंच्यौति सर ॥
सामंत सूर सामंत बल । पहर बज्जि बज्जे पहर ॥ छं० ॥ ६०२ ॥
दूहा ॥ पहर बज्जि पर पहर बर । पहर पहर आवत्त ॥
मत्त दंत मद्दह सुकै । वान राज सावत्त ॥ छं० ॥ ६०३ ॥
बान राज सावत्त दुति । छिति छत्री आकार ॥
धन्नि सूर जे अंग में । धनि [3]झिल्लै सु दुधार ॥ छं० ॥ ६०४ ॥
गाथा ॥ दुद्धार सार सहियं । हय गय नर बीर बीरायं ॥
जुद्धिय धीमति धीमं । सा बीरं बीरयो राजं ॥ छं० ॥ ६०५ ॥
बीरं राजिय बीरं । बीरं बीरं सु बीर मुष बीरं ॥
बीरं होइ सबीरं । सो बीरं उव्वियं नथ्थी ॥ छं० ॥ ६०६ ॥
दूहा ॥ नथ्थह सुन्नी बीर बर । वल बंकम घट घाइ ॥
घरी एक आचिज्ज भौ । जोति मग्ग विरुझाइ ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

(१) मो.-ज्यौं वाजि ।		(२) ए. कृ. को.-भरि ।
(३) मो.-झेलै ।

छंद भुजंगी ॥ विरुभ्भ्काय उठ्ठेरनं रोस बीरं। महा मत्त दंतीन की पंति भीरं ॥
गहै दंत धावै सु वाहै पचारै। महा मत्त बोलै सुवारं अषारै ॥
छं० ॥ ६०८ ॥

कली क्रित्त कूहं करै दूरि दंदं। वजै सार सारं महा काल मंदं ॥
महा ठट्ट घट्टै अहुट्टै जु थट्टं। बजै घाइ ऐसे बकै जानि भट्टं ॥
छं० ॥ ६०९ ॥

रुधिं धार रत्ती सु मत्ती उछारै। इसी बीर बत्ती सु भारथ्थ भारै ॥
छं० ॥ ६१० ॥

दूहा ॥ भारथ्थह नथ्थी सुहृत। अहृत वृत्त गति देव ॥
जिन सांई दुज्जन हत्यौ। सो सांई प्रति सेव ॥ छं० ॥ ६११ ॥
सेव देव देवन सुबल। रुधत गिद्ध सु मंस ॥
मोह पान माया सुहृत। उडत मुक्ति तिन हंस ॥ छं० ॥ ६१२ ॥
हंसन हंसिय हंस बर। मुगति सरोवर बीय ॥
तनु छंड्यौ उह मंडि कै। निसा भ्रम्म नह नीय ॥ छं० ॥ ६१३ ॥
हू सांई पर हथ्थरें। [1]परम तंत पद पाइ ॥
देवग्गिरि भंजन मती। रा चामंड विरुझाइ ॥ छं० ॥ ६१४ ॥

कवित्त। रा चामंड जैतसी। राम बड़ [2]गुज्जर बुल्लिय ॥
वल्लियभद्र बलिराम। सार धारह मति षुल्लिय ॥
कलह कित्ती विस्तरै। राइ निड्डुर सम सारं ॥
दुहू बोल दुअ चरन। मरन कित्ती [3]अधिकारं ॥
बैकुंठ लेन लिन्ने सु षग। विहंग मग्ग पंषी सुगति ॥
नरसिंह सिंह छंडै नहै। सार धार मारह दिपति ॥ छं० ॥ ६१५ ॥

गाथा ॥ सारं धार वरदियंति। रुधिरं छंडेव स्त्ररयो अंगं ॥
जानिज्जै मधु मासं। सा फूलेव षष्षरो वनयं ॥ छं० ॥ ६१६ ॥

अरिल्ल ॥ रत्त सु रत्त सु बीर उडाइय। घाइ मृदंग उपंग बनाइय ॥
के माया मोह ग्गति छंडै। काल दंड कालह क्रत छंडै ॥ छं० ॥ ६१७ ॥

दूहा ॥ काल दंड षंडन करै। भिरै बीर भारथ्थ ॥
सुबर बीर सामंत गति। दै दुवाह पारथ्थ ॥ छं० ॥ ६१८ ॥

---

(१) मो.-मुगति परम पद पाय। (२) मो.-गूजर। (३) मो.-अवधारं।

पारथ पारत्थिय सुवत्त । सारथ्थिय चहुआन ॥
मानहु बीर समुद्र गति । तिरन मते भ्रम पान ॥ छं० ॥ ६१९ ॥

प्रातःकाल से युद्ध होते संध्या हो गई और कमधज्ज की सेना मुड़ गई परंतु चौहान की सेना का बल न घटा।

भ्रम्म पार सामंत बर । उदै अस्त भौ भान ॥
बहुरि पंग पारस फिरिय । बल न घट्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ६२० ॥

दोनों सेनाओं के बीर युद्ध से संतुष्ट न हुए तब इधर से भीमराय और उधर से मृत षवास के भाई ने क्रुद्ध होकर धावा किया।

कवित्त ॥ बल छंड्यौ न विराज । सूर उभ्भै दुअ पासं ॥
जंघारौ रा भीम । स्वामि सन्नाह सुभासं ॥
दुहु वाहां सामंत । दून दह दहु अधिकारिय ॥
अमर बधं षावास । षग्ग षोल्यौ षिष्क्षि सारिय ॥
जंघार राव जोगिंद बर । भुगति मुगति अप्पन अनिय ॥
तामस [1]न बुझ्झयौ दोउ सेन कौं । बजि निसान आभा धुनिय ॥
छं० ॥ ६२१ ॥

गाथा ॥ आभ सुनिय सु देवो । बज्जे साराइ मंदरे बज्जे ॥
नीसानं निसि सारं । साहारं [2]पारषं होई ॥ छं० ॥ ६२२ ॥

दूहा ॥ पर पषरत्त पविच गति । रा निड्डुर राठौर ॥
बंधु दोष जान्यो नहै । स्वामि ध्रंम पति मौर ॥ छं० ॥ ६२३ ॥

स्वामिकार्य्य के लिये जो शरीर का मूल्य नहीं करता वही सच्चा स्वामिभक्त सेवक है।

कुंडलिया ॥ तजिय पुंज षावास बर । तिरन तुंग तन अप्प ॥
चरन लग्गि बंध्यो मरन । सो सांइ भ्रत तप्प ॥
सो सांई भ्रत तप्प । जन्म जानत जंजारे ॥

(१) ए. कृ. को.-तज्यौ न। (२) मो.-पारखा।

.... ॥
मयन मत्त विच्छुरिय। मोह पारी तजि पग्गिय ॥
धनि निड्डुर रट्ठौर। स्वामि छल स्वामि सु जग्गिय ॥ छं० ॥ ६२४ ॥
गाथा ॥ जग्गिय स्वामित कामं। भ्रमियं बीर बीर बिस्तारं ॥
तिम तिम तामस तेजं। सेनं सज्जि मुक्ति साधीरं ॥ छं० ॥ ६२५ ॥

शशिवृता का व्याह धन्य है जिस में अनन्त वीरों को मुक्ति मिली।

मुत्ती धारन धीरं। पंजर सज्जेव मथ्थनो परयं ॥
बर ससिवृत्त सु व्याहं। दाहं देहाइ दुष्षनो तजयं ॥ छं० ॥ ६२६ ॥

कमधज्ज के दस बड़े बड़े शूरवीर थे वे दसों इस युद्ध में काम आए।

दूहा ॥ देह दुष्ष कट्टिय सुक्रम। रन जित्तिय सुग पान ॥
पंच दून पंचो परिग। सुनिय बीर रस पान ॥ छं० ॥ ६२७ ॥
गाथा ॥ परियं बीरति नामं। सुरति चौदूह नंदह घट्टी ॥
सजखे सूर सुधारी। भारी भरनेव भारथं भिरयं॥ छं० ॥ ६२८ ॥

कमधज्ज के जो वीर मारे गए उन के नाम।

दूहा ॥ परे सूर तिन नाम कहि। बरनत बनै बिसेष ॥
देव देव अस्तुति करहिं। नाग रह्यौ सिर सेष ॥ छं० ॥ ६२९ ॥
छंद भुजंगी ॥ परे बीर बीरं तिनं नाम आनं।
पर्यौ पुंज राजं महा (१)वीर थानं॥
पर्यौ देव सिड्डंत सादुल्ल बंधं।
मुर्यौ षग्ग नाहीं भयो रंध रंधं ॥ छं० ॥ ६३० ॥
पर्यौ किल्ह कामं जु जट्टौ जुवानं।
तिनं कट्टिया जेन गयदंत मानं ॥
पर्यौ बीर भट्टी कियौ अंग घट्टं।
जिनें मोरिया पंग रा मीच यट्टं ॥ छं० ॥ ६३१ ॥
पर्यौ राइ राइं अजम्मेर सूरं।

(१) ए. कृ. को. वंध।

जिनं स्वामि ध्रंमं तज्यौ सिंध पूरं ॥
पर्‌यौ अंग अंगं सु जर्जोन रायं।
लगे पंच दूनं मह्वा बीर घायं ॥ छं० ॥ ६३२ ॥
परे पंच बंधो बलीभद्र बीरं ।
जिनें अंग अंगं कियौ सा सरीरं ॥ छं० ॥ ६३३ ॥

कवित्त ॥ परत देव वर क्रंन । सरन रष्षन सांई बर ॥
परि मुष रन पुंडीर । सार सारंग देव धर ॥
पर्‌यौ बीर बलिभद्र । जात पँावार पविचं ॥
धार धनी चढि धार । सलष लष्षन दुति मंचं ॥
लाषन्न सिंह भुज पाइ बर । अरिन पाइ उठ्ठाइ लिय ॥
धनि धन्नि स्तूर सामंत बर । जुग जीरन जीरन सुजिय ॥छं०॥६३४॥

शूरवीरों की प्रशंसा।

दूहा ॥ जुग जीरन जीरन सुबर । चरन किति सा किद्ध ॥
सुबर बीर सामंत बर । गत्ति न पुज्जै सिद्ध ॥ छं० ॥ ६३५ ॥
सिद्ध न पूजै गत्ति तिन । छाया मोहन माय॥
इन छाया मंडी तहां । ध्रंम छांह रहि छाइ ॥ छं० ॥ ६३६ ॥
ध्रंम छांह रहि छाइ बर । करिय स्तूर सामंत ॥
सो करनी करिहै न को । करिय बीर गुन मंत ॥ छं० ॥ ६३७ ॥
गुननि मंत गंभीर गुर । जै जै सद्द सु सिद्ध ॥
बरन बिहुसि बरनिय बरहि । रंभ अरंभन सिद्ध ॥ छं० ॥ ६३८ ॥

गाथा ॥ रंभा अरंभ वरयौ । अच्छी अच्छीव अच्छरी सरनौ ॥
केकी गवनी कित्ती । साकित्ती बंधयौ रष्षी ॥ छं० ॥ ६३९ ॥

चौपाई ॥ बह्नि रष्षि कित्तिय परिकार । सार सिंध उत्तर बन पार ॥
जोग सिद्ध जोगाधिय अंत । बजि डक डमरु उमया कंत ॥छं०॥६४०॥
उमा कंति जोगाधि सु जानैं । बीर सगुन बीरा रस मानैं ॥
जै जै सद्द भयौ तिन वार । राज द्वार घरियार बिभार ॥छं०॥६४१॥

दूहा ॥ राज द्वार घरियार बजि । सार बज्जि रति सार ॥
स्तूर सुमति सामंत की । बीर उतारन पार ॥ छं० ॥ ६४२ ॥

छंद चोटक ॥ सु उतारन पारति बीर भटं। घटकै घन नद्द उमद्द घटं ॥
झननंकत हथ्थत हथ्थ करं। मनु पाइक पंति पुंतार बरं ॥
छं० ॥ ६४३ ॥
किधों केवल की मुगती मति पान। किधौं रस [1]बीर विस्रम सु मान ॥
किधों करुना करकै किधु काम। मनों मय मत्त भिरं रस जाम ॥
छं० ॥ ६४४ ॥
किधों विधि बंधन बंधहि जोर। पढ़े दोउ मंच सु बीरह और ॥
करै दोउ बीर दुहाइय मुष्ष। मनो रवि उग्गव मासम पुष्ष ॥
छं० ॥ ६४५ ॥
दूहा ॥ पुष्ष मास रवि उग्गयौ। भूमि न छिचन सीस ॥
मनहु बुद्ध बंदन सु बुधि। करन काम क्रत ईस ॥ छं० ॥ ६४६ ॥
क्रतन ईस बल बुद्धि बल। बुद्धि पराक्रम संधि ॥
सुबर बीर संग्राम गुन। अति गुन निर्गन बंधि ॥ छं० ॥ ६४७ ॥
गाथा ॥ बंधे बुद्धि सु धारे। प्राहारे बीर सु भहायं ॥
निजतं नेह सुधारी। आहारी अंकुरी बीरं छं० ॥ ६४८ ॥
दूहा ॥ अंकुरि बीर शरीर गति। सुभट सुथट्ट सुभट्ट ॥
अघट घट्ट नह कियो परै। परं बीर दह पट्ट ॥ छं० ॥ ६४९ ॥

कमधज्ज का स्वेत छत्र देख कर चामुंड राय का उसे काट देना और सब सेना का आश्चर्य और कमधज्ज की सेना में हाय हाय मच जाना।

कवित्त ॥ हाइ हाइ आरिष्ट। दिष्ट अंबरिय सूर बर ॥
मुक्कि कर बल चामंड। करहु गोलक उप्पर धर ॥
गोलक तुंबा भग्ग। बंध भग्गै चहुआनं ॥
स्वेत छच दिषि सीस। पर्यौ कमधज्ज निधानं ॥
घरी एक विभ्रम भयौ। सार सार प्राहार बर ॥
जानै कि मत्ति दंतिन कला। कूट मंच धारह सुधर ॥ छं० ॥ ६५० ॥

(१) ए. कृ. को.-वीरा रस, वीर रस ।

दूहा ॥ धारा हर बित्यौ सुधर । चर चरिष्ट चतुरंग ॥
रा निड्डुर रठ्ठौर बर । रुप्यौ षेत भ्रत भंग ॥ छं० ॥ ६५१ ॥

गाथा ॥ पंगुर पाइ सुधारं । पंगु भयौ चित तिन बीरं ॥
नह पंगुर कर नैनं । पंगुर नां ह्रयौ बैनं ॥ छं० ॥ ६५२ ॥

दूहा ॥ बयन ह्रर चंचल भइय । निहचल पग सिर नाग ॥
अदग दग्ग भंजै सकल । करत अदग्ग न दाग ॥ छं० ॥ ६५३ ॥
अदग दग्ग मग्गिय सु कृत । बर बीरा रस पान ॥
छित्ति छित्ति स्वामित्त गति । सु कति सु अप्पन बान ॥ छं० ६५४ ॥

कवित्त ॥ घरी इक्क इक रंग । रंग सवरथ्थ बिछोरिय ॥
पगी जानि पारष्ष । जेम दरिया हिल्लोरिय ॥
यौं [1]षग धपि दोउ सेन । ह्रर सामंत विलोकिय ॥
मनों मत्त उठि द्रष्टि । पिय बीयोग विसोकिय ॥
झुम्मयौ धार धारह धनी । सुनिय कित्ति मित्तह पनौ ॥
सामंत ह्रर सामंत गुन । सु [2]बर बीर सत्तह सुनौ ॥ छं० ॥ ६५५ ॥

छंद रसावला ॥ सार बुठ्ठी अनी । मत्त मत्तं धुनी ॥
कूह मच्ची घनी । अंत तुट्टै रनी ॥ छं० ॥ ६५६ ॥
बीर बीरं अनी । देव बज्जी धुनी ॥
नेह भंज्यौ षनी । काल [3]जैसो पनी ॥ ६५७ ॥
बीर बीरं बनी । रत्त रंगं रनी ॥
सार सारं धुनी । जोति मग्गं जनी ॥ छं० ॥ ६५८ ॥
पिंड सारे घनी । कब्बि [4]चंदं तनी ॥
.... । मुक्ति [5]लुट्टै फनी ॥ छं० ॥ ६५९ ॥

दूहा ॥ फनि मनि लुट्टन काज गुर । भौ गुर इत गुर देव ॥
सार ह्रर संग्रह्यौ भिरिय । बरन पथ्थ मुष सेव ॥ छं० ॥ ६६० ॥

कमधज्ज का छत्र गिरने से शूरवीरों को भय न हुआ ।

(१) मो.-षग्ग ।　　(२) मो.-बीर, बीर ।
(३) मो.-जैसें, जैसे　　(४) ए. कृ. को.-चित　　(५) मो.-लुट्टैं ।

गाथा॥ लग्गिय चास न सूरं। बीरं सुभटाइ मत्तयो दंती॥
जानिज्जै परिमानं। भारथ्थं बीरयो कंती॥छं०॥ ६६१॥

दूहा॥ हल देवत बिछुरत्त बर। परषिय जंपहि जोग॥
सुबर सूर सामंत गुन। [1]अग्ग मत्त [2]मति भोग॥ छं०॥ ६६२॥

स्त्रियों की प्रशंसा।

भोग जोग दुअ बिद्धि बिध। दान भुगति संगाइ॥
त्रीय कहै नट्टै सु त्रिय। त्रियन गती मुह पाइ॥ छं०॥ ६६३॥
त्रियन गत्ति पावहि पुरुष। धरन धरत्तिय ताम॥
सूर धीर सूरह भिरत। वर विश्राम तजि जान॥ छं०॥ ६६४॥

चौपाई॥ एक एक उट्ठै परिमानं। सुमति मंत मंत्रिय गुरु दानं॥
[3]षग्ग टेकि बाहै बर षग्गं। ज्यों बावन छलि भूमि [4]विगंगं॥छं०॥६६५॥

दूहा॥ भुमि विभग कीनिय सुहत। देवत्तह प्रति देव॥
महन रंभ मच्यौ सु भर। गुन श्रम न ग्रभ भेव॥ छं०॥ ६६६॥
मरन सीस मुक्यौ सु वसु। रस पारायन देव॥
दुतिय मुतिय दुति बैर तिन। भ्रम भग्गा जुग भेव॥ छं०॥६६७॥
अहत हत्त विभ्रम [5]भइग। हय गय दुल चतुरंग॥
चाहुआन कमधज्ज सों। भय बीरा रस भंग॥ छं०॥ ६६८॥

गाथा॥ भौ बीरा रस भंग। जंग जुग तीय बीर सु [6]भट्टाइं॥
सद्धिर सुद्धिर सुघटं। साठट्टई घट्टयौ भंगं॥ छं०॥ ६६९॥

रात्रि का कुछ अंश बीतने पर चन्द्रमा का उदय हो गया और दोनों सेनाओं के बीर विश्राम के लिये रण से मुक्त हुए।

मुरिल्ल॥ ठट्ठ सेन [7]भग्गौ चतुरंगह। लुथ्थिय लुथ्थिय आलुथ्थिय विभंगह॥
कल किंचित किंचित रस भारी। इते अस्तमित भानं [8]सारी॥छं०॥६७०॥

गाथा॥ अस्तमितं [9]बर भानु। पायानौ परम संतोषं॥
जानिज्जै जस बंधुअं। नव चंदनं तिलकयौ दीयं॥ छं०॥ ६७१॥

(१) ए.कृ. को.-स्वर्ग (२) को.-मानि। (३) मो.-खडग। (४) मो.-वगंगं।
(५) मो.-ए-भइय। (६) ए. कृ. को.-सुट्टयं।
(७) ए. कृ. को.-भग्गौं (८) ए.-सारं। (९) ए. कृ. को.-मांनु सु भानु

चंद्रायना॥ दुरि निसान गत भान भद्दग बर।
सिंधु संपतौ जाइ तिमिर चढ़ गुर॥
कुमुद विमुद अंकूर सूरातन धरियं।
मानौ तम को तेज सु तत्त उधरियं॥ छं० ॥ ६७२॥

[1]मुरिल्ल॥ बर भान संपतौ थान गुरं। [2]सरसीरुह उद्दित मुदित बरं॥
बर बीर कमोदनि की सु गती। सु भए रिसिराज उदोतपती॥
छं० ॥ ६७३॥

सूर्य्योदय से भ्रमर चकवा चकई और शूरवीरों को आनन्द होता है।

दूहा॥ निसि गत बंछे भान बर। भँवर चक्कि अरु सुर॥
मंतह मत्त पयान गति। बर भारथ्थ अँकूर॥ छं० ॥ ६७४॥

रात्रि को संयोगिनी स्त्री और रण से श्रमित सेना विश्राम करती है पर कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नहीं पड़ती।

कवित्त॥ कुमुद उघरि मूँदिय। सु बंधि सतपच प्रकारय॥
चकिय चक्क विच्छुरहि। चक्कि शशिवृत्त निहारय॥
जुवती जन चढ़ि काम। जाहि कोतर तर पंषी॥
अवृत वृत्त सुंदरिय। काम बढ्ढिय बर अंषी॥
नव नित्त हंस हंसह मिलै। विमल चंद उग्यौ सु नभ॥
सामंत सूर न्वप रषिष कै। करहि बीर वीश्राम सभ॥ छं० ॥ ६७५॥

गाथा॥ विश्रामं वर लैही। सूरं सूग्यौ धरयं॥
धायं अंग विअंगं। जानिज्जै [3]कैतु यो लग्गी॥ छं० ॥ ६७६॥

दूहा॥ तम बढ्ढिय धुंधर धरा। परष पयं पन मुष्ष॥
तम्म तेज चावद्दिसह। जुभ्भनि भग्गि अरुष्ष॥ छं० ॥ ६७७॥
जुभ्भ भग्गि आरुष्ष बर। रोकि रहिग बर स्याम॥
सुबर सूर सामंत गुन। तम पुच्छे न्वप ताम॥ छं० ॥ ६७८॥

(१) मो.-त्रोटक।   (२) ए. कृ. को.-सरूही रुह उद्दित जरं।
(३) ए. कृ. को.-केन, केत।

सहस्त्रों सेना में भी छिपा हुआ चहुआन का शत्रु बच नहीं सकता।

गाथा॥ जै जै घर चहुआन। एकं होइ सथ्थयौ सूरं॥
को रष्षो परमानं। अरि रष्षै कट्टयौ मच्छी॥ छं०॥ ६७६॥

चौपाई॥ कोटि मझ्झि अरि होइ प्रमान।
ता भंजै निश्चै चहुआन॥
हरि शशिवृत्त जाइ पहु इंद।
रुकमनि ब्याह बरिय गोविंद॥ छं०॥ ६८०॥

गाथा॥ गोविंदं प्रति ब्याहं। सनमानं सूरयो वृत्ती॥
अप रष्षै अरि जुद्धं। रष्षै स्वामि मरनयौ अप्पं॥ छं०॥ ६८१॥

चहुआन के सामंत स्वामिकार्य्य के लिये प्राण को कुछ वस्तु नहीं समझते और यह स्वभाव चहुआन का स्वयं भी है।

दूहा॥ अप्प वृत्त इह सूर किय। सूर वृत्त चहुआन॥
स्वामि रहै लज्जै जलनि। भौ वृत [1]वृत्तिय पान॥ छं०॥ ६८२॥

गाथा॥ कालिंदी तन स्यामं। लग्गे नथ्थि अगनतं स्यामं॥
भय अवि वृत्तिय तामं। अन्यं जानि तत्तयो सारं॥ छं०॥ ६८३॥

सामंतों का पृथ्वीराज से कहना कि आप दिल्ली को जांय हम लड़ाई करेंगे।

अरिल्ल॥ तत्त सार प्रति प्रत्ति प्रमानं। जाहु राज दिल्ली चहुआनं॥
गुन बड्ढे हम बड्ढे सत्तं। दुष्ष मानि सुनि सुनिय विरत्तं॥
छं०॥ ६८४॥

पृथ्वीराज का कहना कि सूर्य्य बिना चंद्र तथा तारागण से कार्य्य नहीं हो सकता, हनुमान के समुद्र लांघने पर भी रामचंद्र जी के बिना कार्य्य नहीं हो सका। मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता।

(१) मो.–वृतपौ।

कवित्त ॥ दुष्ष मानि सो रत्त । सुनै सामंत सूर बर ॥
[1] चंद उडग्गन काम । सर्‌यौ कहुं दिष्षि सूर नर ॥
भान काम नन सरें । अरुन जो होइ तेज बर ॥
काम राम [2] नन सरै । हनू [3] क्रूद्यौति लंक धर ॥
नन सरै काम मंगल सु विधि । जो मंगल आक्नत्त तप ॥
सामंत सूर इम उच्चरै । कढ्ढि मोहि भुभ्भहुति अप ॥ छं० ॥ ६८५ ॥

तुम्हें रण में छोड़ कर मैं दिल्ली में जाकर आनन्द करूं यह मैंने नहीं पढ़ा है।

दूहा ॥ मुहि कढ्ढिर तुम रहौ बर । जियत जांहि उन थान ॥
ऐसी रीति अरीत वर । पढ्ढी नह चहुआन ॥ छं० ॥ ६८६ ॥

गाथा ॥ जम्मन मभ्भि सुरंगं । सो जंपेव सूर तुम तत्तं ॥
दिन भौ रव संग्रामं । [4] सम्मान दारेति एव गसं ॥ छं० ॥ ६८७ ॥

राजा का उत्तर सब को बुरा लगा परंतु किसी ने राजा की बात का उत्तर न दिया।

विष लग्गा न्टप बैनं । हाला हलयो तत्तयो सूरं ॥
उत्तर दिय नह राजं । गाम निस भा बुद्धि जन बत्तं ॥ छं० ॥ ६८८ ॥

कवि चंदादि सब सामंतों ने समझाया पर राजा ने न माना और यही उत्तर दिया कि शत्रु के साम्हने से भागने वाले क्षत्री को धिक्कार है, मैं प्रातः काल भारत मचाऊँगा।

कवित्त ॥ बार बार भर कहिग । राज मानै न तत्त [5] मत ॥
बीर चंद ता अग्ग । चलै प्रथिराज हारि गत ॥
मो भंजै अरि गज्ज । मोहि [6] मंजै अरि भंजै ॥

(१) मो.-चंद उगन काम सऱ्यौ। (२) ए. कृ. को.-तन। (३) मो.-उद्यौत।
(४) मो.-समान दारें निय वगसं। (५) ए. कृ. को.-व्रत। (६) मो.-गंजै।

ता छत्री कुल लज्ज। छच धरि सिर हति [1]लज्जै ॥
जं होइ प्रात दिष्षौ सकल। महन रंभ इत्तौ करौं ॥
चहुआन चिंत चिंतह सुरा। बर भारथ गुन विस्तरौं ॥ छं० ॥ ६८९।

गाथा ॥ विस्तरि गुनयो प्रातं। रत्तं रत्त सूर बीरायं ॥
चावदिसि बर बीरं। सा धीरं मत्तयो बीरं ॥ छं० ॥ ६९० ॥

सब का यह मत होना कि सूर्योदय से प्रथम ही युद्ध आरंभ हो जाय।

दूहा ॥ मत्ति बीर संमुह [2]भिरत। कठिन शस्त्र अति पान ॥
भान पयानह दीह गुन। लोह पयान पयान ॥ छं० ॥ ६९१ ॥

सूर्योदय से प्रथम ही फौज का तैयार हो जाना।

चोटक ॥ बिन भान पयानति लोह कढ़े।
जल मत्तिय रत्तिय बीर पढ़े ॥
दोउ बीर दुवं दिशि धूंध धरी।
कलहं तत केलिय ता उघरी ॥ छं० ॥ ६९२ ॥

रण मदमाते निढ्ढर का घोड़े पर सवार होना और साठ योधाओं को लेकर हेरावल में बढ़ना।

गाथा ॥ अंकुर बीर सुभट्टं। अघटं घट्टाइ क्रोधयो कलहं ॥
हय मुक्या चलि बंधी। निढुर सथ्थव सठयो बीरं ॥ छं० ॥ ६९३

शूरबीर लोग माया मोह को छोड़ कर आगे बढ़े।

दूहा ॥ बीर बीर बीराधि बर। [3]कढ़े लोह तजि छोह ॥
सूर धीर सामंत गति। नहिं माया नहिं मोह ॥ छं० ॥ ६९४ ॥

तीसरे दिवस का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ जिते सूर पत्ती। लगै लोह तत्ती ॥
नचे सूर छत्ती। उड़े काल पत्ती ॥ छं० ॥ ६९५ ॥

(१) मो.-भज्जे। (२) मो.-भिरन। (३) मो.-कढ्ढि।

[1] जुटे जोध पत्ती । उडी रेन गत्ती ॥
महा वेन तत्ती । कला कोटि कत्ती ॥ छं० ॥ ६९६ ॥
ग्रवै ग्राव गत्ती । सुरं पंच छत्ती ॥
मचे क्रूह मत्ती । षचे रोस रत्ती ॥ छं० ॥ ६९७ ॥
करे घाव कत्ती । इसे सूर चित्ती ॥
भिए फल्ल सत्ती । घुमें घाइ घत्ती ॥ छं० ॥ ६९८ ॥
भजै भीम मत्ती । हनूमान जत्ती ॥
अनाभूत अत्ती । दिषे दारु दत्ती ॥ छं० ॥ ६९९ ॥
रुधिं धार [2] रुक्कं । भभक्कै भभक्कं ॥
धका धीग धक्कं । बकै मार बक्कं ॥ छं० ॥ ७०० ॥
इसे चित्त अक्कं । छुटे मत्त छक्कं ॥
डकारंत डक्कं । त्रिलोकंत हक्कं ॥ छं० ॥ ७०१ ॥
मनो मोह थक्कं । हको हक्क बक्कं ॥ छं० ॥ ७०२ ॥

युद्ध करते हुए वीरों की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ हको हकि बजिय प्रकार । सार बज्जै सु बीर बर ॥
सु बुधि बुद्ध आबुद्ध । मत्त लग्गै असि वर झर ॥
इकत रुद्ध आरुद्ध । नद्द नारद अधिकारिय ॥
रंभ सिंभ आरंभ । सिद्ध बुद्धं दै तारिय ॥
धनि धनि सूर दिन धनित बल । छल छचिय अंकूर रजि ॥
कलहंत काल कालह विषम । सुबर बीर बीरत्त रजि ॥ छं० ॥ ७०३ ॥
दूहा ॥ बीर रज्जि बीराधि भर । बलिय बीर गन सज्जि ॥
सुबर सूर सामंत के । मंत कलह तुटि बज्जि ॥ छं० ॥ ७०४ ॥
मंत कलह बज्जिय तुटहि । घटहि अघट तुटि मंस ॥
सुबर सूर सामंत कौ । बर उड्डै तन अंस ॥ छं० ॥ ७०५ ॥
हंसति उड्डहि अंस दै । कंसत केसिय प्रान ॥
बर पंषिय पावै न जन । बर छुट्टै किरवान ॥ छं० ॥ ७०६ ॥

(१) यह छंद मो. प्रति में नहीं है ।　　(२) मो.-रुकं ।

शूरवीर सामंतों का रणमत्त होकर विचित्र कौशल से शास्त्राघात करते हुए युद्ध करना।

रसावला॥ षंष छुट्टै ननं। सूर मत्त धनं॥
घाव बज्जै घनं। टूक टूकं तनं॥ छं० ॥ ७०७ ॥
आज इक्कं मनं। बान नंसं [1]धनं।
भीतकं विग्घनं। कीय लीयं पनं॥ छं० ॥ ७०८ ॥
जद्ध भुभ्भै बनं। जानि कुल्लालनं॥
षोदि कढ्ढै गनं। देव चढ्ढि विमनं॥ छं० ॥ ७०९ ॥
पेषि इक्कं मनं। कुहक बानं घनं॥
नारि छुट्टै पनं। ....॥ छं० ॥ ७१० ॥
गज्ज तें गग्गनं। सार वे सग्गनं॥
सिद्धता मग्गनं। लोह ज्यों लग्गनं॥ छं० ॥ ७११ ॥
इक्क इक्कं गनं। कुंभ हथ्थी [2]छिनं॥
रुद्धि धारा घनं। दुद्ध मानों थनं॥ छं० ॥७१२ ॥
दोड पट्टै दनं । ओप इभ्भै इनं॥
इष्ष वेसं मनं। मन्न गिज्जं गनं॥ छं० ॥ ७१३ ॥
गोरियं छन छनं। टूक होयं रनं॥
सूर ह्वै तन तनं। नंमतं फन फनं॥ छं० ॥ ७१४ ॥
बार पारं जनं। रोस चट्टै रनं ॥
लग्ग गे बंभनं। रुंड केसिं भनं॥ छं० ॥ ७१५ ॥
गिद्ध सिद्धं गनं। टारि रषषै तनं॥
दद्धि ज्यों उप्फनं। अस्सि वाहै बनं॥ छं० ॥ ७१६ ॥
मीन जातं पनं। पिषषनं चिम्मनं॥
कोन को चिम्मनं। भूत प्रेतं धुनं॥ छं० ॥ ७१७ ॥
जुग्गनी जित्तनं। पत्त भृत्तं तनं॥
नारदं नंचनं। मुक्ति मै मंचनं॥ छं० ॥ ७१८॥
अंमरं गंमनं। विष्टता सुंमनं॥ छं० ॥ ७१९ ॥

(१) मो.-घनं। (२) ए. कृ. को.-छिन, बिन।

शूरवीर स्वामिकार्य्य साधन करने के लिये वीरता से रण में प्राण दे कर पूर्व्व कर्म्मों की संधि को लांघ कर स्वर्ग पाते हैं।

कवित्त ॥ सूर संधि विधि करहि। क्रम्म संधी जस तोरहि ॥
इक्क लष्ष आहुटहि। एक्क लष्षं रन मोरहि॥
सुवर बीर मिथ्या। विवाद भारथ्थह षंडै ॥
[1]विच्चि बीर गजराज। बाद अंकुस को मंडै ॥
कलहंत केलि काली विषम। जुद्ध देह देही सु गति ॥
सामंत सूर भीषम बलह। स्वामि काज लग्गे ति मति ॥ छं० ॥ ७२०॥

स्वामिकार्य्य में जो वीर रण में मारे जाते हैं उन का शिर श्री महादेव जी की माला (हार) में गुहा जाता है।

दूहा ॥ [2]स्वामि काज लग्गे सुमति। षंड पंड धर धार ॥
हार हार मंडै हियै। गुथ्थि हार [3]हर हार ॥ छं० ॥ ७२१ ॥
गाथा ॥ सिर तुट्टै पुर तारं। [4]लारं तुट्टि बीरयो सिरयं ॥
धर तुट्टै प्राहारं। सा बज्जै तारयं तारं ॥ छं० ॥ ७२२ ॥
तारं तार प्रहारं। देवल दरियाइ झल्लरी बज्जं ॥
बज्जं ते सिर सारं। प्राहारं पंच घट्टि कांई ॥ छं० ॥ ७२३ ॥

तीसरे दिन एकादशी सोमवार को युद्ध होते होते पांच घड़ी चढ़ आई शूरवीर मार मार कर हाथियों की कला कला को पछेलते जाते थे।

कवित्त ॥ घटिय पंच दिन घट्यो। उमरि आरब्भ पुंज षिरि ॥
एक दिना दोउ सेन। मोह छंड्यो क्रम निक्करि ॥
बान गंग पत्तयौ। बीर ग्यारसि दिन सोमं ॥
सूर धीर सामंत। सूर उड्डे रन रोमं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-वेचि। (२) मो.-पाति काज लग्गे तिमत।
(३) मो.-हाथ। (४) को.-लारयं।

क्रत काम काज सांईं विभ्रम। दल दंतिय पंतिय[1] गमै ॥
सामंत सूर सांईं विभ्रम। रोम रोम राजी [2]भ्रमै ॥ छं० ॥ ७२४ ॥

इधर पृथ्वीराज ने शशिवृता की उत्कंठा पूर्ण की।

दूहा ॥ रोम राज राजी भ्रमहि। [3]थोर थनी ढुंढि बाल ॥
उतकंठा उतकंठ की। ते पुज्जी प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ७२५ ॥

साटक ॥ साता से उतकंठ रंभति गुना रंभा अरं भावरं ॥
संधं बिद्धि सु सुद्ध कारन मिते देवंगना सुंदरी ॥
जा बंदे मिति चंद कारन मिते निर्भासितं भासितं ॥
पाषंडं तजि लीन सूरति बरं आरंभ पारं भनं ॥ छं० ॥ ७२६ ॥

साम्मिलन के प्रारंभ में पृथ्वीराज ने प्रण किया कि मैं तुझे तीनों पन में एक सा धारण किए रहूंगा।

गाथा ॥ आरंभं प्रारंभौ। उतकंठा किंनयौ हतयं ॥
साधा धरी सु धरयं। रन छुट्टै तीनयौ पनयं ॥ छं० ॥ ७२७ ॥

यह वर पाने के लिये कवि का शशिवृता को धन्य कहना।

मुरिल्ल ॥ बालप्पन जुब्बन पन बीर। दई बीर बडपनह [4]धीर ॥
बडपन्नइ मति सु तजि डिढाइ। धंनि लई तिहुं पन्न बड़ाइ ॥ छं० ॥ ७२८ ॥

दूहा ॥ बालप्पन जुवपनह गति। कथ तिय पनहति काज ॥
भर कढ्ढे न्रप राज गुन। नह चल्लै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७२९ ॥

पृथ्वीराज का अटल प्रेम देख कर पैर पकड़ कर शशिवृता का कहना कि दिल्ली चलिए।

नह चल्लै पृथिराज रिन। लज्ज लपट्टिय पाइ ॥
चय जोरै कर हथ्थ दो। चलि संभरि वै राइ ॥ छं० ॥ ७३० ॥

---

(१) मो.—गमें, ग्रसें। (२) मो.-भूसें।
(३) मो.-थोरि। (४) मो.-भीर।

उक्त विषय पर पृथ्वीराज का बिचार में पड़ जाना कि क्या करना चाहिए।

लज्ज परब्बत ह्वै रही । बैन तजै न्रप पास ॥
दुहूं बीर [1]मंडन सु बुधि । अति गत्तिय रति चास ॥ छं ॥ ७३१॥

यह देख शशिवृता का कहना कि मेरी लज्जा रखिए।

फिरि बुल्ली लज्जी सुनहि । हों मंडन तन बीर ॥
मो बिन इक्कै काज न्रप । बुद्धि न आवै तीर ॥ छं० ॥ ७३२ ॥

राजा का कहना कि तेरी सब बातें रस कसूम (अफीम के शर्बत) के समान मेरे जीवन भर मेरे साथ हैं।

तूं वै एकह पन रहै । रंग कसूंभ प्रमान ॥
हों नन छंडों पास तुअ । तीनों पनह समान ॥ छं० ॥ ७३३॥
तूं लज्जी मो सथ्थ है । दान षग्ग अरु रूप ॥
मों चल्लै तीनों चलैं । संची चवै न भूप ॥ छं० ॥ ७३४ ॥
सुन रे वै लज्जी चवै । हूं मंडन नर लोइ ॥
मो बिन अप्पन [2]लद्ध है । नर [3]न्निभासन होइ ॥ छं० ॥ ७३५ ॥

शशिवृता का कहना कि मैं भी क्षण क्षण आपकी प्रसन्नता का यत्न करती रहूंगी।

बै बुल्ली लज्जी कलह । क्रत कै काम सुनंत ॥
इक्कै पल पल मंडनौ । हो रज्जन रजकंत ॥ छं० ॥ ७३६ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि चहुआन का धर्म ही लज्जा का रखना है।

अरिल्ल ॥ [4]लज्जी सुनि सुनि हसी प्रमान । तूं जानै सुनि [5]बैन निधान ॥
लज्ज रूप मंडन चहुआन । सुबर बीर [6]आकास निधान ॥ छं० ॥ ७३७॥

(१) मो.-मंतह ।　(२) मो.-लद्ध, लम्भ, लभ ।　(३) मो.-निर्भासन ।
(४) मो.-लज्जा सुन रहसी प्रमान । (५) ए.-कृ. को.-वै सुन निधान । (६) मो.-आकार ।

तू अपने धर्म अनुसार सत्य कहती है।

दूहा ॥ तूं लज्जी सची चवै। तत लगि ध्रंम प्रकास ॥
आहत्तह गुन भृत्त किय। जोग सुंहंदा चार ॥ छं० ॥ ७३८ ॥

इस प्रकार शशिवृता और पृथ्वीराज का परामर्श होता रहा, पृथ्वीराज रूप रस में मत्त था और उस के स्वामिधर्म में रत सामंत उस तक कोई बाधा न पहुंचने देते थे।

छंद पद्धरी ॥ निब्बर्यौ बाद वै वर [1]प्रमान।
मानहि न वत्त लज्जी निधान ॥
वै जाहु जाहु तन रूप छंडि।
जिन चलै लज्ज लज्जी चिषंडि ॥ छं० ॥ ७३९ ॥

कहि बीर राज आए स बीर।
मानहु कि छुट्टि धन वर सरीर ॥
आभास भार तुट्टैति अंग।
जोर वरज हर मत्तीत जंग ॥ छं० ॥ ७४० ॥

क्रतत केलि क्रत करहि काम।
सोभहति सूर दक्षिन ति[2]ताम ॥
अति स्वामि ध्रंम तह वाम मग्ग।
लग्यौ न सूर जिम स्वामि दग्ग ॥ छं० ॥ ७४१ ॥

प्रथिराज दिष्ट दिष्टत प्रमान।
अरि भजत मनहुं तिन अग्गि जान ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

यद्यपि सामंत बड़े बलवान थे किन्तु तब भी पृथ्वीराज का मन युद्ध ही की ओर लगा था।

दूहा ॥ अग्गि पान सामंत बल। अत धीरत्त न जोध ॥
शस्त्र लग्गि लग्गै न मन। तउन पच पति जोध ॥ छं० ७४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रकांम। (२) मो.-नाम।

शशिवृता की आशा पूजी, शिवजी की मुंडमाल पूरी हुई और भगवती रुधिर से तृप्त हुई।

त्रिय त्रिघाइ सूरन भए। त्रिपति उमापति मुंड॥
उमा त्रपति रुधिरं भई। धनि सूरन भुज दंड॥ छं० ॥ ७४४ ॥

शूरवीरों के शौर्य्य और बल की प्रशंसा।

सूर सुधनि भुज दंड बल। बल विक्रम ज्यों [1]पाय॥
बल किन्नौ छल छंडयौ। बर बीरा रस चाइ॥ छं० ॥ ७४५ ॥

कवित्त॥ बीर घाइ आघाइ। बीर विरुझाइ सेन बर॥
लष्य लष्य इक मद्धि। लष्य उभ्भिरे लषष झर॥
दल दंतन विच्छुरै। घाइ है बर किन तंकहि॥
एक लष्ष रुंधियै। षग्ग षग्गनि झननंकहि॥
ठननंकि घंट घंटिय परहि। कज्जल कूट विवान भ्रम॥
सामंत सूर सामंत हथ। करहि चंद अस्तुति सु क्रम॥ छं० ॥ ७४६ ॥

शशिवृता के ब्याह की देवासुर संग्राम से उपमा वर्णन।

छंद पद्धरी॥ आसंभ सेन सेना विरुद्ध। शशिवृत्त ब्याह दैवान जुद्ध॥
नर मथहि मेघ रथ गज सु वादि। होमियै षग्ग रिस अग्ग सादि॥
छं० ॥ ७४७ ॥

उच्चरे बैन बाजंत बीर। सद्दै जु जुद्ध बुद्धं सरीर॥
दैवत्त दुग्गं छिति मति अक्रूर। निर्घोष दोष बज्जै सपूर॥ छं० ॥ ७४८॥
हय गय गँभीर तन तुंग ताम। सूरह सु बीर विश्राम जाम॥
छं० ॥ ७४९ ॥

गाथा॥ रन घन तन विश्रामं। सँग्रामं इक्क घरी पाइ॥
दावानल चहुआनं। सा बीरं बीर बीराधं॥ छं० ॥ ७५० ॥
बीराधं बर बरयौ। सा भज्जै आवनं गवनं॥
[2]मोहं सलाकं भंजो। नां सज्जं पंजरो दिवो॥ छं० ॥ ७५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-आइ। (२) मो.-माहे।

शूरवीरों का कहना कि हमारी जय तो हुई किन्तु जयचंद का भाई कमधज्ज क्यों जीवित जाने पावे।

चौपाई ॥ नह सज्जै पंजर प्रतिमान। कहै सूर निहचै प्रतिमान ॥
बीरचंद बंधव कमधज्ज। जीवत स्यामि जाइ क्यों लज्ज ॥छं०॥७५२॥

गाथा ॥ हम बहुलं वेसतयं। बंधे तेग मुक्कि न्रप जायं ॥
जीवत सुनि कमधज्जं। ना मुक्कै लष्षयो बलयं ॥ छं० ॥ ७५३ ॥

मुरिल्ल ॥ लष्ष लष्ष बर सुभट सु भट्टह।
अघट घट्ट सु घटै न घट्टह ॥
सुट्टत बीर छचिय छिति राजै।
मनो इंद घन मद्धि विराजै ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

गाथा ॥ यों रज्जै न्रप भरयौ। सरनं सूर सूर गत्ताइं ॥
उग्गं ती रवि मानं। यों रत्ताइ रत्तयो मुषयं ॥ छं० ॥ ७५५ ॥

राजा का कहना कि उसे मार कर क्या करोगे।

दूहा ॥ सत्य सु तुम्झ कह्यौ सु सब। सुभट भट्ट बड़ भृत्य ॥
क्यौं न जाइ जीवत घरह। कहा करौगे मृत्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥

आताताई का कहना कि उसे युद्ध में खंड खंड कर ही दूंगा।

छंद भुजंगी॥ तबै उच्चर्‌यौ अत्तताइ अभंगं। सज्यौ नैन सीसं जुर्‌यौ जुद्ध रंगं॥
हनों याहि भंजों सु गंजो पलानं। करों षंड षंडं जु मंडै बलानं॥
छं० ॥ ७५७ ॥

इसी प्रकार गुरुराम की आज्ञा होने से घोर युद्ध का होना।

तबै गज्जि कम्यौ गुरु चाहुआनं। अगे जोगिनी जग्गि कम्यौ गुरानं॥
कम्यौ सथ्थ जद्दो स जामानि तामं। दुअं बद्ध हड्डा चले बंध ठामं॥
छं० ॥ ७५८ ॥

मिली रारि अंकं दुअंकं प्रमानं। परे जादवं राइ अरु चाहुआनं॥
कहै भूलि भारत्थ इत्तं सपूरं। उठे कंदलं हक्कि ते कौन सूरं॥
छं० ॥ ७५९ ॥

नरं रक्त बीजं बिनं केन दिट्ठं। इतें हंकि सामंत की बुंद उट्ठं॥
मिले घाइ घायं असी पंगदायं। मिली रीठ आवद्ध सावद्ध घायं॥
छं० ॥ ७६० ॥

परे सीस भारं चहुआन धारं। मनो इम्भ भंकोर अंबूज भारं॥
गजं वाज तुट्टं परे षंड षंडं। नचंतं पिनाकी करं सज्जि दंडं॥
छं० ॥ ७६१ ॥

कटे तुच्छ हड्डं सु मंसं निमंसं। परे सूर मुभ्भेति मध्यं उतंसं॥
तिनं सत्त नामं जुअं जू वषानं। रठं निद्दुरं कन्ह वर वीर जानं॥
छं० ॥ ७६२ ॥

तहां अत्तताई रु गोविंद मानं। उठे हक्कि हाकं सु पज्जून पानं॥
रघूवंस भीमं तिनं नाम जानं। परीहार नन्हं तिनं नाम ठानं॥
छं० ॥ ७६३ ॥

इते उग्गरे कंदलं चंद कब्बी। मनों देषियं जानता जोति हब्बी॥
परे पंच रायं ढहे राज सत्तं। सुरं पंच रा इत्त मा वेद इत्तं॥ छं०॥७६४॥

दुहुं पष्ष लग्गे तिनं नाम जानं। तिनं जाति चंदं रु सूरं बषानं॥
पऱ्यौ भूभ्भि रघुबंस परताप राजं। परयौ राव चालुक्क ता जैत लाजं॥
छं० ॥ ७६५ ॥

पऱ्यौ दलपती राउ दल सब्ब संध्यौ। पऱ्यौ कन्ह राजा दलं नेत बंध्यौ॥
भूँडा गढ्ढि बीरं पऱ्यौ राज षीची। जिने कित्ति लच्छी तियं लोक सींची॥
छं० ॥ ७६६ ॥

पऱ्यौ जावलौ राव सारंग सूरं। तिने भ्भग्गरीं अच्छरी छंडि हूरं॥
पऱ्यौ दाहिमा देव मिलि धार पंती। हरै अंत कंती विराजै सुंदती॥
छं० ॥ ७६७ ॥

पऱ्यौ किल्हनं राव माल्हन हंसं। तुच्यौ सार धारं मिल्यौ हंस बंसं॥
पऱ्यौ जंगली राव दहिया नरिंदं। नृपं कित्ति भषषी भषी कित्ति चंदं॥
॥ छं० ॥ ७६८ ॥

पऱ्यौ टांक सूरं मिल्यौ सूर मंडे। मिल्यौ सार धारं जमं डंड षंडे॥
चच्यौ धार धारं धनी धार नाथं। मुकी मोह माया लई कित्ति हाथं॥
छं० ॥ ७६९ ॥

पऱ्यौ राव मोरी मुरयौ अव्व सथ्थं। ननं पाइ चल्लै चलै हथ्थ वथ्थं ॥
परे हूर हक्केव धक्के कलेवं। सिरं जुद्ध आनुद्ध देषंत देवं॥
छं० ॥ ७७० ॥

करे जोगिनी डक्क हक्कं गहक्कं। गजै बीर हूरं सु आवद्ध धक्कं ॥
चलै श्रोन अंमान पूरं प्रनारं। अदभ्भूत माया न रच्चौ सु भारं॥
छं० ॥ ७७१ ॥

तवै अत्तताई लग्यौ लोह रस्सं। भगी फौज कमधज्ज दिस्सं विदिस्सं॥
परे सेत सेते न थानं सु दिस्सं। लगे अच्छरी माल नभ्भं सु जिस्सं॥
छं० ॥ ७७२ ॥

अनंछित्त अंगं बरं अत्तताई। भई जीत चहुआन प्रथिराज राई ॥
छं० ॥ ७७३॥

रण में अगनित सेन को मरा देख कर निढ्ढर का कमधज्ज से कहना कि अब तूं किस के भरोसे युद्ध करता है। पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर चला गया।

दूहा॥ परे सुभर दोऊन दल। निढ्ढुर देष्यौ बंध ॥
कोन भुजा बल जुध करै। सुनि कमधज्ज अमुंद्ध ॥ छं० ॥ ७७४ ॥
बाला लै प्रथिराज गय। गहिय बग्ग कमधज्ज॥
रोस रीस बिरसोज भय। रह बाजे अनबज्ज॥ छं० ॥ ७७५ ॥

पृथ्वीराज शशिवृता को लेकर आध कोस आगे जाकर खड़ा हुआ।

कवित्त॥ अद्ध कोस न्टप अग्ग। बीर ठढ्यौ करि ठढ्ढौ ॥
मद समूह गजराज। छंडि पट्टै बल गढ्ढौ ॥
लाज बंधि संकरिय। बीर बंध्यौ सु अष्ट कसि ॥
अरिन बीर छंडै न। क्रन्न मंडै दिलीय दिसि ॥
मनमत्थ महावत बंधि अति। मन मत्तौ उन को धरै ॥
घन घाइ रुधिर छुट्टै परे। अमर पुहप पूजा करै ॥
छं० ॥ ७७६ ॥

अपनी और कमधज्ज की सब सेना मरी देख कर यद्दव का हार मानना और सब डोलीं पृथ्वीराज को सौंप देना।

षूब राज प्रथिराज। षूब जैचंद बंध बर॥
षूब सूर सामंत। षूब नृप सेन पंग बर॥
षूब सेन ढंढोरि। षूब झोरी करि डारिय॥
षूब षेत विधि गाम। बानगंगा पथ झारिय॥
आसेर आस छंडिय नृपति। विपति सपति जानीय भर॥
सुठिहार राज प्रथिराज कौ। धरे सबह चौंडोल घर॥छं०॥७७७॥

पृथ्वीराज ने तेंतालीस डोलियों सहित बीच में शशिवृता को ले कर दिल्ली को कूच किया।

चौपाई॥ गौ ढिल्ली ढिल्ली प्रति बीर। सूर घाइ जर्जर किय श्रीर॥
कित्ति सजी त्रैलोक प्रमानं। अंग कियौ जर्जर चहुआनं॥छं०॥७७८॥
दूहा॥ डोला ग्यारहु दून दस। एकादस तिन मद्धि॥
मद्धि अमोलिक सुंदरी। काम विरामन संधि॥ छं० ॥ ७७९॥
डोला घाइन बंधि नृप। वजि निसान त्रिघोष॥
सब सामंत समंध चढ़ि। विच सुंदरी [1]अमोघ॥ छं० ॥७८०॥

शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज तेरस को दिल्ली पहुंचे।

गाथा॥ विच सुंदरी अमोघं। दोषं नैव बालयो मद्धिं॥
तेरसि गुन अधिकारी। संपत्त राजयो ग्रेहं॥ छं० ॥ ७८१॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा वर्णन।

दूहा॥ इन परंत पत्तौ सु ग्रह। सुबर राज प्रथिराज॥
हय गय दल बल मथत बर। रंभ सजीवन काज॥ छं० ॥ ७८२॥

चामुंडराय की प्रशंसा।

सह जद्दों चामंड बर। बर बर जुद्ध विरुद्ध॥
सुद्ध करै सामंत की। बर धीरज्ज सु बुद्ध॥ छं० ७८३॥

(१) ए. कृ. को.-अदोष।

युद्ध में कमधज्ज और यद्धव को जीत कर शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज दिल्ली जा पहुंचे।

चाहुआन चतुरंग जिति। निगम बोध रहि राज॥
बर शशिव्रत्ता जित्तिगौ। धाम सु ढिल्ली साज॥ छं०॥ ७८४॥

शशिवृता के साथ विलास करते हुए सब सामंतों सहित पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करने लगे।

गाथा॥ तपय सु नरपति ढिल्ली। दीह दीहं पद्धरे राजं॥
जं मंगै क्रत कामं। सा देवं सोइयं देहिं॥ छं०॥ ७८५॥
दीहं पासा रूवं। सारूवं भूपयो सब्बं॥
जे नष्षै ते मंगै। देवानं देवयो दीहं॥ छं०॥ ७८६॥
दूहा॥ सारिन सालैं पंस बर। सारि पंस बर भोग॥
सुबर स्त्रर सामंत लै। करि ढिल्ली प्रति जोग॥ छं०॥ ७८७॥

इस जय के प्राप्त होने से चहुआन का यश और बादशाह से बैर बढ़ा।

जं जं जस लद्धौ सुबर। बैर न्रपति सुरतान॥
सुबर बैर बर बढ्ढयौ। सुबर जित्ति चहुआन॥ छं०॥ ७८८॥

पृथ्वीराज शत्रुओं को पराजय कर के अदंड बादशाह को दंड दे कर नीति पूर्वक दिल्ली का राज्य करता था।

कवित्त॥ भई जीति चहुआन। अरिय भंजे अभंग भर॥
जं जं स्त्रर बषान। देव नंषैं सुमन्न वर॥
लै शशिव्रत्ता राज। अप्प दिल्लीय संपत्तौ॥
अति तोरन आनंद। चित्त रत्तौ मन मत्तौ॥
अरि अवनि कौन मंडै मनहु। षग्ग दाग अरि षंडइय॥
कवि चंद दंद दारुन कयहि। इक अडंड करि डंडइय॥ छं०॥ ७८९॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासक शशिव्रता कथा नाम पचीसमो समय संपूर्ण॥

———:o:———

अथ देवगिरि समयौ लिख्यते ।

(छब्बीसवां समय ।)

जयचन्द की सेना ने देवगिरि गढ़ को घेर रक्खा ।

दूहा ॥ ना चल्लै कमधज्ज ग्रह । गढ़ घेर्‌यौ फिरि भान ॥
मानहु चंद सरद्द [1]जिम । गिर नछिच [2]परिमान ॥ छं० ॥ १ ॥

कुंडलिया ॥ गढ़ घेर्‌यो फिरि भान कौ । दूत सु दिल्लिय मुक्कि ॥
[3]यह अजोग संजोग करि । अदिन कज्ज हम रुक्कि ॥
अदिन कज्ज हम रुक्कि । प्रान इन कै दुष मुक्कै ॥
इन समान भर सत्त । जीव जावंतै धुक्कै ॥
* प्रथम पुंजा लष्षिन । कुंआरि ससिवृत्त धीर बढ़ ॥
धन भर लज्ज सुबंध । घेरि सह बीर राजगढ़ ॥ छं० ॥ २ ॥

राजा जयचन्द के भाई ने कन्नौज को और देवगिरि के राजा ने पृथ्वीराज के पास सब समाचार भेजा ।

दूहा ॥ इन कग्गद चहुआन पै । उन मुक्कलि [4]कनवज्ज ॥
दुहूं बीर कविचंद इह । कै बज्जै कै बज्ज ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूत ने लज्जा के साथ जयचन्द को पत्र दिया । जयचन्द के पूछने पर दूत ने युद्ध और पराजय का हाल कहा ।

---

(१) ए. कृ. को.-दिन ।　　(२) ए. कृ. को-परजावि ।

(३) ए. कृ. को.-ग्रह ।　　(४) ए.कृ.को.-कमधज्ज ।

* छंद २ की अंतिम दोनों पंक्तियों का चारों प्रतियों में समान मूल पाठ इस प्रकार है— "प्रथम पुंज लष्षिन कुँआरि कुँअर ससिवृत सुधीरह । धन भर लज्ज सुबंध राजगढ़ घेरि सबीरह "— यह कुँडालिया छंद के नियम से विरुद्ध पड़ता है परंतु यह कवि की भूल नहीं है, लेखकों की असावधानी या भूल से ऐसा हुआ है क्योंकि उन्हीं शब्दों के हेर फेर से शुद्ध पाठ होगया है और अर्थ में भी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हुई ।

कवित्त ॥ सुबर बीर कग्गदह। पंग करि अप्पि सु जंपिय ॥
बहु दुचित्त संजुत्त। लज्ज आजुत्त प्रकंपिय ॥
सुर सुकीय कर पंग। नैन नीचे न्रप दिट्ठौ ॥
तब पहु पंग नरिंद। कुशल जानी न गरिट्ठौ ॥
पुच्छी सु बात इह करिय तम। जानि सोक कह उप्पनिय ॥
संग्राम तेज भंजन भिरन। मरन कहौ मारन पुनिय ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दुज्जन दवने पीर के। वज्जै पै बर केक ॥
भर भीरी रहि अंक के। मरन सरन के केक ॥ छं० ॥ ५ ॥

कुंडलिया ॥ तब पहु पंग नरिंद प्रति। दूत सु उत्तर जप्पु ॥
इह अपुब्ब कथ सुनि न्रपति। जीतें हार सु अप्पु ॥
जीतें हारि सु अप्पु। देषि कह्यौ चहुआनं ॥
ढिल्ली वै अधकोस। बीर मुक्यौ तिहि थानं ॥
आइ सेन घन घाइ। अद्ध भर पारि असुर जब ॥
दिषि निढ्ढुर कमधज्ज। वग्ग सेना पंचय तब ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ देवगिरि गढ़ घेरि फिरि। [1]हौं मुक्यौ न्रप काज ॥
मतौ मंडि रा पंग पै। वे [2]पुक्करि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७ ॥

चौपाई ॥ इह कहंत न्रप पंग सु अष्षी। वियौ दूत न्रप अंषन दष्षी ॥
दुचित चित्त मुक्की बर बानी। कुसल बीर कमधज्ज न [3]जानी ॥
छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ भयौ स्वेद सुर भंग भौ। नैन झलक्यौ पानि ॥
कै फिरि दंद सु उप्पनौ। कै वर बंधव हानि ॥ छं० ॥ ९ ॥

कवित्त। [4]कही कुसल तन दूत। कित्ति कुसलत्तन भग्गिय ॥
जेनि रहे कमधज्ज। रहे सो जम्भह लग्गिय ॥
जे निकलँक ग्रह आदि। कलँक कालंक सु कुप्पै ॥
[5]दे विधान न्त्रिम्मान। कौन मेंटै को थप्पै ॥
भष जोइ सिंघ जम्बक हरै। काकलंब पप्पील गहि ॥
जद्दिनह भई भावी विगत। जिम रक्खै तिमि तिमि सुरहि ॥ १० ॥

(१) कृ.-होन। (२) मो.-पुकारि। (३) ए. को.-आनी।
(४) मो.-कहै। (५) मो.-दो।

कवित्त। यह कहंत पहु पंग। दूत तिय आन सपत्तौ ॥
वाचा शीतल जंपि। अंग आरम्भ न सत्तौ ॥
चढ़ि नरिन्द कमधज्ज। तौन तन सज्जन वारौ ॥
मिलि यद्दव चहुआन। बीर परिहैं ससि भारौ ॥
दाहिम्मराय चामुंड सौं। सब्ब साथ न्टप थप्पयौ ॥
ते काज राज सम्हैं सुमति। लिषि कग्गद महिं अप्पयौ ॥ ११ ॥

जयचन्द की महा क्रोध से कहना कि पृथ्वीराज की कितनी सेना है। उसे मेरा एक मीर बंदा जीत कर बांध सकता है।

क्रोध भरिय कमधज्ज। काक बर बोल उचारै ॥
जो भज्जे ग्रह अपन। कौन अप्पनौ विचारै ॥
अरे सुनहु भर सुभर। जुझ्झ भग्गौ पति छंडै ॥
बेचि बीर गजराज। बाद अंकुस कौ मंडै ॥
चहुआन सेन कित्तिक है। एक मीर बंदा बधै ॥
लभ्भयौ राज अप अप्पुनह। लोह धार मो सम सधै ॥ छं० ॥ १२ ॥

जयचन्द ने मंत्रियों से मत करके अपने स्नेही राजाओं को सेना सहित आने को पत्र भेजा।

कुंडलिया ॥ सुनि सुमंत्त मंचिय समत। कुमति मंत क्यों मंत ॥
बचन भेद जिहि हम कही। सोइ गही बल तंत ॥
सोइ गहि बल तंत। बल न अप्पन पहिचान्यौ ॥
उद्दो राग उच्चर्‍यौ। संच तेता करि मान्यौ ॥
उननें कुंवरी [1]बरी। तिनं कु कारै तिन गुन्नौ ॥
[2]सु वरि एक वुल्ले दुवान। सो सब सह सुन्नौ ॥ छं० ॥ १३ ॥

पत्र भेज कर अपनी तयारी की आज्ञा दी। सवारी के लिये घोड़ा तय्यार कराया।

कवित्त ॥ बर अथवंत सु दीह। आइ चतुरंग सपन्नौ ॥
मझ्झ महल न्टप बोल। बंचि कग्गद कर लिन्नौ ॥

(१) मो.-मुरी। (२) कृ-सुवरन।

निसा मंत उप्पाइ। सहस नव लिषि बर पट्टै॥
इष्ट अत्त सगपन्न। सु अत बहु फट्टत पट्टे॥
वज्जित्त न्निघोष अरि घोष पर। छोरि पंग दिष्षे सु हय॥
रवि रथ्थ तथ्थ आवहि जु सम। [1]गात गिरव्वर नाग सय॥छं०॥१४॥

घोड़े की प्रशंसा वर्णन।

भुजंगी॥ [2]तियं फेरियं अश्व दीसैति पंगा। तिनं देषते छाँह कंपंत अंगा॥
तिनं ओपमा चंद बरदाइ कैसो। दिषै तीर मानों छुट्टै अंग तैसो॥
छं०॥१५॥
पयं मभ्भ मंडै तिमं चित्त इष्षं। पयं पातुरं चातुरं तो बिसष्षं॥
षुरं वज्जतें भुम्मि [3]धुज्जै धसक्कै। फनं फेलि से संमुहं फूंक सक्कै॥
छं०॥१६॥
द्रुमं सीस दीसै सु केकी पुछंगी। मनों मंडियं नील[4]कंठं उछंगी॥
तिनं भाल संमेलयं धाट भुभ्भै। [5]छिलै पूर ऐसें सरित्तान सुभ्भै॥
छं०॥१७॥
डुलै कंन नाही छुरी कास ग्रीवं। मनो देषियं सीष निर्वात दीवं॥
दिषै कब्बि चंदं सुरंगं सु सेसी। दुहं पष्ष नाहीं तिनं घोरि कैसी॥
छं०॥१८॥
सुभै सालिग्रामं समानंत अंषी। तिनं पूजिवै चित्त चित्तंत नंषी॥
पियें अंजुली नीर दीसै उपंगा। फिरै कच्छ रचीन में रत्त गंगा॥
छं०॥१९॥
दिसानं दिसानं सबै जाति राकी। कही चंद कब्बी उपंमा सु ताकी॥
छं०॥२०॥
[6]कवित्त। चत्तिय नयन रुद्र कै। उड्डि घन अग्गि तिनंगा॥
तास मध्य ते प्रगटि। तेजवंता सु तुरंगा॥
भुअपत्ती संग्रहे। पीठ मंडै पल्लानं॥
अंबर करत बिहार। देषि कोप्पौ मघवानं॥

(१) ए. जात। (२) ए. नियं।
(३) कृ.-भूजे। (४) मो-कंठी।
(५) ए.-दिले। (६) २१ छंद मो. प्रति में नहीं है।

प्रगट्टि नषि दिय वज्र सों। गयन गवन तब मिट्टि गय ॥
कहि चंद मनहु [1]पहुपंग तें। फेरि आज पष्षरत हय ॥ छं० ॥२१॥

जयचन्द घोडे पर चढ़ा। तीन हजार डंका निशान और तीस लाख पैदल सजकर झट से तय्यार हुआ।

चढ़त पंग हय सज्जि। सज्जि गजराज सज्जि [2]नर ॥
यों जानी सुर असुर। करै कमधज्ज बिया पुर ॥
बजि त्रिघोष चिय सहस। मीर बंदा दस लष्षिय ॥
तीस लष्ष पाइक्क। सुबक पारंक विअष्षिय ॥
जू सन विराग बल बीर सजि। दल सज्ज्यौ गंजन अरिन ॥
पहु पंग बीर परतष्षि लै। किरन सु सम सज्जी किरन ॥छं०॥२२॥

जयचन्द ने प्रतिज्ञा की कि जादव और चौहान दोनों को मार कर तब मैं राजसूय यज्ञ करूंगा।

दूहा। इह प्रतंग पहुपंग लिय। बधि जद्दव चहुआन ॥
जग्य अरंभ जु मंडिहौं। ता पच्छै परवान ॥ छं० ॥ २३ ॥

सेना की शोभा वर्णन।

कवित्त। चढ़त पंग मिलि सेन। पूर जिम नदिय मिलत चिन ॥
वज्जि बीर वा तूल। जत्थ कथ्थह उड्डै षिन ॥
एकट्ठां फुनि जम्म। तुट्टि जू जू फल लद्धौ ॥
दैव क्रम्म करि जोग। आइ एकट्ठ अरुद्धौ ॥
बंधेत काल डोरी तनै। छूटि धार घन मिलहि [3]तिम ॥
आवत्त क्रम्म लिष्षे बिना। मिलै न पंचौ [4]पंच [5]जिमि ॥छं०॥२४॥

जयचन्द्र की स्त्री का विरह वर्णन।

दूहा। इह अवस्थ पहु पंग की। बाल अवस्था कौन ॥
जियन आस नहिं सांस तन। डरहि देषि [6]अलि जौन्ह ॥छं०॥२५॥

(१) ए.को.-पकु। (२) ए.-हय। (३) ए. कृ.-जिम।
(४) ए. को.-पंप। (५) ए. कृ. को. जिम। (६) ए. कृ. मो.-अति।

गाथा। बाले मलयं चंपं । दै दै चंपत उरह [1]उरहीती ॥
तिन बिपरीतं बामं । कामं रस जग्गयौ घनयौ ॥ छं० ॥ २६ ॥

भ्रमरावली ॥ बढ़ि बाल वियोग सिंगार छुच्यौ ।
सुख कौ अभिराम कि काम लुच्यौ ॥
घन सार सुगंध सु घोरि घनं ।
बनि जानि प्रकीन क्रपान बनं ॥ छं० ॥ २७ ॥
तल पत्ति तजे तल पत्ति मनों ।
बहु बाढ़िहै अंग अनंग घनों ॥
नव चंदन अंग अनंग जरै ।
दिप दीपक भौन में भान बरै ॥ छं० ॥ २८ ॥
लगि मोदक से अन मोदकयं ॥
दिसि प्राचिय देषि परी धुकयं ॥
प्रति हत्ति सरत्ति यपी पयनं ।
उमगे तहां अंसुअ द्वै नयनं ॥ छं० ॥ २९ ॥
घन ज्यों तन छंडि न उत्तर [2]देइ ।
लगि कानन नाम पिया अलि लेइ ॥
कछू बर भोंहन उत्तर देत ।
मनौं दस [3]वस्थन दंग अचेत ॥ छं० ॥ ३० ॥
चषयं सुभि चंचल रंजनयं ।
सु मनो गहि मुत्तिय षंजनयं ॥
बिय भाव सु अंसु अनंदि लता ।
हर नंषिय रष्ष तिगी पतिता ॥ छं० ॥ ३१ ॥
तिन अंग अचेतकिता भ्रमयं ।
दुष दूषन भूषन से तनयं ॥
दिषि दिष्षि अली अलिके जकरें ।
लय सास उसासन तानि परे ॥ छं० ॥ ३२ ॥
पन प्रान प्रियान प्रयान पुटं ।
लगि साहस एक घटी न घटं ॥

(१) ए. कृ. को.-उरहीति । (२) मो.-देत, लेत । (३) ए. कृ. को.-अयस्थन ।

सु[1]थनं सब तैं विमनं मन तैं।
निज निश्चल [2]रैंनि गई गिनतैं ॥ छं० ॥ ३३ ॥
चलि सीत सुगंध सुमंदय बात।
मनों लगि पावक अंभन जात ॥
डुलावत अंचल शीतल काज।
लगै मनों तीर [3]तरुन्निय जाज ॥ छं० ॥ ३४ ॥
भुअंगम भोजन अंगम नारि।
करै करुना रसकी उनिहारि ॥
सबै सु सषी मिलि पूछत ताहि।
मनों जड़ श्रोत सुनें रस जाहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥
चल्यौ कुटिलं रथ चित्तह धाइ।
[4]सु जे मरविंद समादक लाइ ॥
इनं रिति नारि न मुक्कह नाह।
लगे विहजानि कुमुद्दिन राह ॥ छं० ॥ ३६ ॥
नदीय निवान [5]अपीत सयं।
नव पंथय सुभ्भय बुभ्भ कयं ॥
बजि मारुत तत्त समीत प्रकार।
उड़ै घन भ्रम्म बहै अनिवार ॥ छं० ॥ ३७ ॥
करै तरु तुंग गई सुधि धाम।
तजी पहु पंग नरिंद सु वाम ॥ छं० ॥ ३८ ॥

जयचन्द की चढ़ाई का वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ पंग कमधज्ज राय। सो छिन्न भिन्न डम्मरित छाइ ॥
पद्धरी छंद बरनो सुरंग। लहु बरन बीच विचि अति सुरंग ॥ छं० ॥ ३९ ॥
ढ़लकंत ढाल तरवर प्रमान। हलके हलंत गज नग समान ॥
अपसुकन सुकन [6]चित्तहि न चित्त। [7]न्निम्मान वत्त गुन धरत तत्त ॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. को.-सुथानं। (२) ए. को.-नैनि। (३) मो.-तरुन्नित।
(४) ए..सजे। (५) ए. को.-अपीन।
(६) मो.-मन्नहि। (७) ए.-न्रिम्मान, न्रिमान।

कद्दवत्ति सलिल जहां सलिल पंक। चित चित्त बकं जे करें कंक॥
चल्ले नरिंद अरि पुब्ब गाव। भुमियां ससंक सव लगत पांव॥छं०॥४१॥

गढ़ घेरि पंग किय अप्रमान। मानौं कि मेर पारस्स भान॥
पंगह सुबीर गढ़ करि गिरद्द। सर्वरी परस चंदा सरद्द॥छं०॥४२॥

चढ़ अमरसीय चढ़ि अमरसिंघ। गहिलौत स नरवर लहु सु वंध॥
पंगुरा सुभर लगि उंच गत्त। जाने कलंक लंगूर यत्त॥छं०॥४३॥

जयचन्द का दक्षिण की ओर चढ़ चलना।

कबित्त॥ दिशि दष्षिन को बलिय। गयौ कमधज्ज चित्त करि॥
यों फिरंत तहँ सूर। छित्त आगस्ति पान फिरि॥
पंच तत्त बिय बिरह। छुट्टि लगो सु पंच पथ॥
तोइ काज हम करैं। चरन सेवकह जंपि तथ॥
तो अंब प्रपी अब जानि बस। जस क्रीड़ा धर उग्गनह॥
कच्छू सु जोसि बलि जोति तन। हबि सरुक भेदै मनह॥छं०॥४४॥

हाथियों की शोभा वर्णन।

गज्जनेस कमधज्ज। दान बरषंत बीर सजि॥
नव अंगुर इक विहथ। स्त्रर तन इक प्रवाह लजि॥
सिरी सत्त सोभै। बिसाल सिंदूर विराजै॥
मनु कज्जल गिरि शिखर। शूर मंगल तन साजै॥
सज्जिय अनेक न्त्रप पंग ने। गामी तर गोड़न बियौ॥
जाने कि अकासह भान दिन। ऐ वसट्ट गिर पय दियौ॥छं०॥४५॥

दूहा। रंभ ऊन तट पंषुरी। लग्गि बधू सित माल॥
भ्रंग सुता की पंति तें। बढ़ी विरह बनमाल॥ छं० ॥ ४६ ॥

राजा भान का यह समाचार पृथ्वीराज को लिखना।

बान पंग पहु पंग परि। मिली क्रंन की कान॥
इह अपुब्ब बर भान सजि। दै कग्गद चहुआन॥ छं ॥ ४७ ॥

उक्त समाचार पाकर काम क्रीड़ा प्रवृत्त पृथ्वीराज का वीरता के जोम में आजाना।

रति पति पत आलुझ्झि घन। तिहि कग्गद मुकि दूत ॥
तजि सिंगार भौ [1]बीर रस। जिमि आयौ बर [2]धूत्त ॥छं०॥४८॥

बाल कमोदनि पीय ढिग। ससि समान रस पान ॥
बर बिलोकि जो देषियै। तौ [3]चहुआनह भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कवित्त ॥ लाज सरस चहुआन। जोग उज्जै जुध मुत्तम ॥
चियन पाइ दिषि काम। बेर दिष्षे जु बीर सम ॥
घरि इक पंग नरिंद। कलँक उननि करि देषै ॥
इत्त सु जद्दव राइ। सजन अप्पनौ सु लेषै ॥
सुरतंत स्वामि अभिलाष रिन। ग्रव्व राज मद्दह न्रपति ॥
मार सु नरिंद संकर भयौ। अति निकलंकह चित दिपति ॥ ५० ॥

इधर शहाबुद्दीन की चढ़ाई उधर जयचन्द की राजा भान से लड़ाई देखकर पृथ्वीराज ने चित्तौर के रावल समर सिंहजी को सब वृत्तान्त लिख कर सहायता चाही और सम्मति पूछी।

दूहा। घरी एक बंधी सुनी। पै मुक्कलि प्रथिराज ॥
बीय सोम अप्पन चढ़न। लै दीनी रस पाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥

चढ़त गाज प्रथिराज को। चढ़ अवाज सुरतान ॥
समर सिंघ रावर दिशा। दै कग्गद चहुआन ॥ छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ दिल्ली धर गोरी नरिंद। बँध पल्हन प्रपत्तौ ॥
षां हुसेन कै बैर। अनगपालं सु मिलत्तौ ॥
तिर भर जल गंभीर। हसम है गै कमधज्जी ॥
देवग्गिरि दिसि भान। बीर पावस जिम सज्जी ॥

(१) ए.-बार। (२) ए. को.-धत्त। (३) मो.-चहुआनै।

धर लई सब्ब साहिब जुरत। भान न उप्पर मुक्कही॥
चित्रंग राज रावर समर। इह अवसान न चुक्कही॥ ५३॥

समर सिंह ने पत्र पढ़कर कहा इस समय पृथ्वीराज को दिल्ली में अकेले न छोड़ना चाहिए। मेरे साथ अपने सावंत और अपनी सेना दें मैं पंग से लड़ लूंगा।

बंचिय कग्गद समर। समर साहस उच्चारिय॥
तव सुमंत बर न्त्रपति। मंत जानै न विचारिय॥
हम सुमंत जो करै। राज दिल्ली मति छंडौ॥
इह गौरी सुरतान। अनगपालह फिर मंडौ॥
सामंत [1]देहु हम संग बर। रन रुंधै पहुपंग नर॥
आरंभ महन रंभह मतौ। इह [2]सुमंत कुसलंत घर॥ ५४॥

समरसिंह की सलाह मान पृथ्वीराज ने अपने सावंत चामुंडराय और रामराय बड़गूजर के साथ अपनी सेना रवाना की।

कुंडलिया॥ समुद रूप गोरिय सुबर। पंग ग्रेह भय कीन॥
चाहुआन तिन बिवध कै। सो ओपम कवि लीन॥
सो ओपम कवि लीन। समर कग्गद लिय हथ्थं॥
भिरन पुच्छि बट सुरँग। बंधि चतुरंग रजथ्थं॥
समर सु मुक्कलि सोर। लोह फुल्यो जस कुमुदं॥
रा चावँड जैतसी। रा बड़गुज्जर समुदं॥ छं०॥ ५५॥

रावल समरसिंह ने अपने भाई अमरसिंह को साथ लिया। ये लोग देवगिरि की ओर चले।

दूहा। अमरसिंघ बंधव समर। समर समोकलि दीन॥
ते सामंतन संग लै। देवग्गिरि मग लीन॥ छं०॥ ५६॥

(१) ए. कृ. को.-दीहि। (२) ए.-समतं।

हम सु राज चहुआन नें। राषे घेरी राइ ॥
पंग [1]औट बर कोट ह्वै। देवग्गिरि गढ़ जाइ ॥ छं० ॥ ५७ ॥

जयचन्द को गढ़ घेरे देख चामुंडराय ने चढ़ाई की ॥ इधर राजा भान मिला।

कवित्त ॥ देवग्गिरि गढ़ घरि। ढोह मंड्यौ बर पंगं ॥
[2]रन व्विघोष प्रमान। बीर बाजे रन जंगं ॥
चिहुदिसान उड़ि चक्क। उनैभ्भो भ्भंभ्भर लग्गा ॥
द्वादस दिन रन मंडि। राव चामँड भिरि भग्गा ॥
सामंत पंग वित्ते न्रपति। छल सज्जे बलहारियां ॥
दाहिम्म राव दाहिर तनय। रत्ति वाह बिचारियां ॥ छं० ॥ ५८ ॥
मिलि जद्दव चामंड। रत्ति वाहं संपन्नौ ॥
जोइज्जै सथ टारि। साथ टारिजै अपन्नौ ॥
अंत साथ सो साथ। और सब साथ [3]सुपन्नौ ॥
कै भर तरकस वंध। थान मन [4]आकन्नौ ॥
जीवंत दान भोगह समर। मरन तित्थरँभ [5]भिरन गति ॥
ए करैं बात उभ्भैत नर। ता स राज मंडल [6]मिलति ॥ छं० ॥ ५९ ॥

राजा भान और चामंडराय की सेना का वर्णन।

हथ्थ हथ्थ सुभ्भभ्भैन। मेघ डंमरि मडि रज्जौ ॥
निशि निशीथ अंतरी। भान उत्तरि सथ सज्जौ ॥
विज्ज बीर भ्भलकंत। [7]पवन पच्छिम दिशि वज्जै ॥
मोर सोर प्पपीह। अवनि सक्कित घन गज्जै ॥
बढ्ढी जु सिलह निशि सत्त मिलि। [8]धसिय पंग दरबार दिसि ॥
चामंड राइ दाहर तनौ। लरन लोह कढ्ढे ति रिसि ॥ छं० ॥ ६० ॥

राजा भान का मिलना देखकर जयचन्द का क्रोध करना।

---

(१) ए.-ओर। (२) ए.-इन।
(३) ए.-सुपंथं। (४) ए. कृ.को.-आकथ्थ। (५) ए.-निरन।
(६) मो.-मिलनि। (७) ए.-भवन। (८) ए. कृ. को.-सधिय।

धसि नरिंद चामंड। कूह बज्जी रन जंगं॥
भर भग्गी चौकी समूह। लग्गा रन जंगं॥
रन नरिंद [1]वाहन कुआर। सारह हसि झिल्लै॥
पंग टटी बौछार। जितै भिंजे तित मिल्लै॥
आरिष्ट काल बज्जत घरी। उघरि मेह घन सार जल॥
जग्गयौ जोध कमधज्ज अब। मनों सिंघ जुथ्यौ सु छल॥छं०॥६१॥
तब [2]रावत उच्चरे। राज जोरी बर पंगं॥
जिन [3]चंपे बल पुंछ। रोस जग्यौ नृप [4]दंगं॥
नाग पत्ति कोपत्ति। अप्प बर कन्ह जगायौ॥
राह सुमनि बित्तए। जम्म जुग राज झुकायौ॥
उच्चरे वीर कुट वार रिन। रन रुंधया अप डिंभरू॥
संभरे बीर कमधज्ज कौं। भये रोम गति विब्भरू॥ छं० ॥ ६२ ॥

अमरसिंह ने जयचन्द के हाथी को मार गिराया।

अमरसिंह आहुट्ठ। नाग [5]मुष्षी बर कड्ढी॥
शीश शोभि गजराज। नाग मुष नागिनि चढ्ढी॥
हाड हटक्की हथ्थि। बीर षच्यौ कर सद्दे॥
कै हथनापुर चन्द। बीर षंचै बलिभद्रे॥
दंती सुभग्गि धर पर पऱ्यौ। इल षुच्यौ दत अद्धकबि॥
सिंघ हति भूमि बर सुब्भई। मिलत भूमि हथ्थह तिरव॥ ६३ ॥

हाथी के मारे जाने पर जयचन्द का क्रोध करना और स्वयं टूट पड़ना।

हस्ति काल जम जाल। काल रुध्यौ चामंडह॥
सुनत पंग रस भगं। सीस लग्यौ ब्रह्मंडह॥
रन रूंध्यौ बछछरू। मीन गति [6]नीर प्रमानं॥
जग्गि बीर पहुपंग। तोन पारथ्थ प्रमानं॥

(१) कृ.-प्रति में "पंगु पुत्र" भी पाठ ऊपर दिया हुआ है।
(२) ए.-राजन, रावन। (३) ए.-जंपे। (४) ए.-दंसं।
(५) ए.-मुठी मुट्ठी। (६) मो.-हीन।

जग लोह कोह कढ्ढिय सु असि। भिरत न अपु अरि तक्कए ॥
रहि जाम एक निसि पच्छली। चढ़ि विहूर हय नष्षए ॥ छं० ॥ ६४ ॥

रसावला ॥ पंग जंगं षुलं, कूह मच्ची हुलं। सार तुट्टे पलं, षग्ग मच्चे षलं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
हाल हाला हलं, सोइ वित्यौ तलं। गिद्ध कोलाहलं, अंत हंती रुलं ॥ छं० ॥ ६६ ॥
उद्धपीयं छलं, चर्म अस्तिं तलं। वीर निद्धीचलं, सिद्ध ठढ्ढे रुलं ॥ छं० ॥ ६७ ॥
संभु मालं गलं, ब्रह्म चित्ता चलं। भूत वित्ता तलं, पथ्थ पारथ्थलं ॥ छं० ॥ ६८ ॥
देव देवा नलं, फट्टि फारक्कलं। घाय छज्जे घलं, सूर घुम्मै रुलं ॥ छं० ॥ ६९ ॥
तारचौ सट्ठलं, बाइ भूत त्तलं। रीति पच्छी षिनं, तार आयासनं ॥ छं० ॥ ७० ॥
सूर उग्यो ननं। कोर चढ्ढ फनं ॥............ छं० ॥ ७१ ॥

लड़ाई खतम होने पर जयचन्द का अपने घायलों को उठवाना।

दूहा ॥ रन मुक्के गो भान चढ़ि। सब सामंतन सथ्थ ॥
भृत्त बीर पहु पंग ने। षेत सु ढुक्यौ तथ्थ ॥ छं० ॥ ७२ ॥

इस युद्ध में मारे गए सूर सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ पऱ्यौ बंध गोइंद। नाम हरचन्द प्रमानं ॥
पऱ्यौ बंध नरसिंघ। रेह रष्षन चहुआनं
पऱ्यौ कन्ह पुंडीर। बीर जैचन्द सु जायौ ॥
पऱ्यौ सूर बाघेल। हक्कि कपि जिम बल धायौ ॥
चतुरंग सब्ब मिल्लिय वही। असिन ढार बड़गुज्जरै ॥
सामंत हयय बर बज्र सम। षेत सु ढुंढहि पंगरै ॥ छं० ॥ ७३ ॥

रणभूमि में जयचन्द के घोड़े की चंचलता और तेजी का वर्णन।

रिस छुट्यौ कमधज्ज । बोल बंका बर बोले ॥
ज्यौं बावन बल रूप । कुहर थानह बल मेलहै ॥
रावन पबय समान । काज कैलास झुलावै ॥
कै बलि बंधन पाज । द्रोन हनुमंत जु ल्यावै ॥
गिरिराज काज साइर मथन । कै अमरस मिल्लिय नहीं ॥
[1]नंषयौ अश्व कमधज्ज नै । सो उप्पम कवि भाषहीं ॥
॥ छं० ॥ ७४ ॥

देवगिरि के किले की नाप और जंगी तैयारी का वर्णन ।

मापि पंग गढ़ देखि । कोस द्वादस बर ऊँचौ ॥
दहति कोस विसतार । कोठ मरहथ्थ चिपुंचौ ॥
नारिगोरि सा बत्ति । राज मंडी चावद्दिसि ॥
ढोह मंडि पाषान । तीर बरषंत मंच असि ॥
पावस्स मास बीतौ उभै । जुरि कमधज्ज सु छंडयौ ॥
मंची सुमंच परधान ने । फेरि मंच[2]तब मंडयौ ॥ ७५ ॥

जयचन्द का राजा भान को मिलाने का प्रबंध करना ।

बल बंध्यौ कमधज्ज । किल्ह भंज्यौ भंभानं ॥
लग्गि चरन पहु पंग । बंदि लीनौ फुरमानं ॥
दूत भेज्यौ मंडि । द्रब्ब नंषै चावद्दिसि ॥
कछु सलोभ कछु मोह । मेल्हि पर ध्यान पलहनिसि ॥
अप्पनौ साथ लै सिंघ तब । जियन मरन ते उद्दए ॥
जम जीव जार पंजर परै । कोइन कालि महि छुट्टए ॥ छं० ॥ ७६ ॥
संवत ग्यार सँजुत्त । अदिस उन लग्गिय पंचं ॥
मरन अग्गि जांनिय न । गोऊ पल्हन जो पंचं ॥
दिन नछित्र रोहिनी । समय च्यालीस बिअग्गल ॥
मत्त बीर जद्दव नरिंद । भग्गी ग्रह भग्गल ॥
जग्गयौ धार धारह धनी । भोज कुंअर रन मंड कै ॥
सा ध्रम्म ध्रम्म छंडै नहीं । गो अध्रंम छिति छंडि कै ॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए.-अंषयौ । (२) ए.-सब ।

इधर अमर सिंह का घोर युद्ध करना।

बज्जि कूह संमूह। अमर[1] उट्ठे समरं भिरि॥
षंड मुष्ष भौ कोट। समर बंध सुड्ड जुरि॥
रा चावँड जैतसी। राव बड़गुज्जर धाए॥
आहुट्ठे कमधज्ज। सार बज्जै सुरझाए॥
बर यंग जंग भज्जी सहर। लुथ्थि लुथ्थि आलुथ्थि परि॥
चहूने अरिय संग्राम भिरि। षट्ट सहस सेना गिरी॥ छं०॥ ७८॥

जयचन्द का किले पर सुरंग लगाना।

परत पंग आरोहि। सुरँग दीनौ सुभान गढ़॥
नाग[2] समूह ढ्ढरी। ढाहि देवल सुरंग मढ़॥
थान थान नर उड़ैं। चंद तस उप्पम पाइय॥
कालबूत[3] कागह। पंग इह काज उड़ाइय॥
अज्जुन सषिद्दिय सेन को। दच्छ देव बर बोलहीं॥
सामंत सूर संग्राम कल। ताप तुरंग न डोलहीं॥ छं०॥ ७९॥
चौपाई॥ बहु परपंच किए पहुपंगं। गढ़े तूटंत मग्ग मन अंगं॥
गिरि सम्मूह बंक भर ठट्टं। मंतौ मडि मुक्यौ बर भट्टं॥छं०॥ ८०॥

जयचन्द का किर्तिपाल नामक भाट को भीमदेव और चामंड के पास संधि का संदेसा लेकर भेजना।

कवित्त॥ कित्तिपाल बर भट्ट। बंधि[4] फुरमान पंग रन॥
जहँ जद्दव चामंड। द्रुग्ग दोय छचन जुरन॥
चौज चक्क चहुआन। पर्‌यौ सगपन मिस अट्टौ॥
उह मारन इन मरन। बज्जि बाहं बिन घट्टौ॥
आतुच्छ मिलौ बंधौ जियन। जुद्ध मोहि क्यों पूजिहौ॥
शृंगार भोग आनन्द रस। सबै बीर रस चुक्किहौ॥ छं०॥ ८१॥

राजा भान को समझा कर जयचन्द के दूत का वश कर लेना।

(१) ए.-ठडे।　(२) कृ.-समुह धद्धरी ए.-समुहरद्धी, समूरहधरी।
(३) ए.-कागच्छ.कागछ।　(४) ए. कृ. को.-फुरमारस।

तब बसीठ न्टप पंग। भान एकत्त मंत करि॥
मिलौ पंग कमधज्ज। जंम संसार जंम डरि॥
तमस भेद न्टप एह। बाल उत्तर गढ़ भेदं॥
अरि अमंत जद्दव। नरिंद कीनौ घर छेदं॥
लगि कान बात मंची कही। आहुट्टां बल गढ्डियां॥
चिय पुत्त हत्त पुची लिये। दुज्जत जनम सुवद्ढियां॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ विष धर दुज्जन सिंघ फुनि। अग्गि अनंग अनेह॥
ए अपना ना लेषिये। ये परि अप्पै छेह॥ छं० ॥ ८३ ॥

कवित्त ॥ हसि जद्दौं चामँड। पँवार हथ्थें दिय तारी॥
सुनि बड़गुज्जर राम। मतौ अप्पौ मो भारी॥
सामि एक बंदी स। प्रीति जल जंतं तक्की॥
लियौ अधर सम रस्स। वात सा दोहमन क्की॥
क्यौं जामन मंत रहंत इत। केह कंत जो मंगयौ॥
सो मंत पंग कमधज्ज नें। अप्प हेत सो उग्गयौ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दूहा। इह उत्तर न्टप पंग सौं। कहै सु जद्दव राय॥
दूध विनट्ठौं सुद्ध हिय। किन अप्पन मुष पाइ॥ छं० ॥ ८५ ॥

चौपाई॥ उठे भट्ट तिहि ठौर विचारी। ज्यों उठि जोगी कंथा झारी॥
मन की मनें रही मन माया। ज्यों तरंग जल जलें समाया॥छं०॥८६॥

कवित्त॥ मतौ मंडि न्टप पंग। गट्ट मुक्के धर लीनी॥
पट्टन पाट नरिंद। थान थानं रचि दीनी॥
उभै बीर जौजन प्रमान। भारह रचि गाढ़ी॥
[1]अप्पनगै कमधज्ज। हाम राजसु मन बाढ़ी॥
कनवज नरिंद अज्जू समन। जोगी मिसि कर कढ्ढयौ॥
दिसि विदिसि पंग जीपन सुबल। रचि चतुरंगी चढ्ढयौ॥छं०॥८७॥

जयचन्द का विचारना कि वह धन छोड़ कर यदि यह धरती मिली भी तो किस काम की।

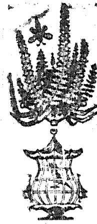
(१) कृ.-अपनग्गौ।

दूहा। कोन हीन कों नीर बिन। को तप भान नरिंद ॥
सह धन धर मुक्की मिलै। लज्ज एह जय चंद॥ छं० ॥ ८८॥

इसके परिणाम में चहुआन और राजा भान को यश मिला और जयचन्द नवमी को कन्नौज को फिर गया।

जस्स तिलक ग्रह भान कौ। जोगिन पुस्तर चिन्ह ॥
मोकलिजै आहुट्ट पति । पग्ग पंग करि हीन ॥ छं० ॥ ८९ ॥
गयौ पंग कनवज्ज दिसि। घन रष्षे धन मास ॥
नव नवमी नव सरद निसि। तिन मुक्की अरि चास ॥ छं० ॥ ९० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके देवगिरि युद्ध वर्णनं नाम छावीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २६ ॥



अथ रेवा तट समयौ लिख्यते ।

(सत्ताइसवां समय ।)

देवगिरि से विजय कर चामंडराय का आना ।

दूहा ॥ देवग्गिरि जीते सुभट । आयौ चामँडराय ॥
जय जय नृप कीरति सकल । कही कब्बिजन आय ॥ छं० ॥ १ ॥

चामंडराय का पृथ्वीराज से रेवा तट के बन की प्रशंसा करके वहां शिकार के लिये चलने की सलाह देना ।

मिलत राज प्रथिराज सों । कही राय चामंड ॥
रेवा तट जौ मन करौ । बन अपुब्ब गज झुंड ॥ छं० ॥ २ ॥

उक्त बन के हाथियों की उत्पत्ति और शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ विन्द लिलाट प्रसेद । कर्‌यौ शंकर गज राजं ॥
एरापति धरि नाम । दियौ चढ़नै सुर राजं ॥
दानव दल तिहि गंज । रंजि उमया उर अंदर ॥
होइ क्रपाल हत्तिनी । संग बगसी रचि सुंदर ॥
औलादि तास तनु आय कें । रेवा तट बन विस्तरिय ॥
सामंत नाथ सों मिलत इह । दाहिम्मै कथ उच्चरिय ॥ छं० ॥ ३ ॥

राजा का चन्द से पूछना कि मुख्य चार जाति में से यह किस जाति के हाथी हैं और स्वर्ग से इस लोक में क्यों आए ।

अरिल्ल ॥ च्यारि प्रकार पिष्षि बन वारुन । भद्र मंद म्रग जाति सधारन ॥
पुच्छि चंद कवि को नरपत्तिय । सुरवाहन किम आइ धरत्तिय ॥
छं० ॥ ४ ॥

चन्द का वर्णन करना कि हेमाचल पर एक वृक्ष था जिसकी शाखें सौ सौ योजन तक फैली हुई थीं मतवाले हाथियों ने उन्हें तोड़ दिया इस पर क्रोध करके मुनिवर ने शाप दिया कि तुम मनुष्यों की सवारी के लिये पृथ्वी पर जन्म लो।

कवित्त ॥ हेमाचल उपकंठ। एक वट दृष्ष [1]उसंगं ॥
सौ जोजन परिमान। साष तस भंजि मतंगं ॥
बहुरि दुरद मद अंध। ढाहि मुनि बर आरामं ॥
दीर्घ [2]तपारो देषि। श्राप दीनों कुपि तामं ॥
अंबर बिहार गति [3]मंद हुअ। नर आरूढ़न संग्रहिय ॥
संभरि नरिंद कबि चंद कहि। सुरग इंद इम भुवि रहिय ॥ छं० ॥ ५ ॥

अंग देश के पूर्व एक सुन्दर बनखंड है वहीं वह गजयूथ बिहार करता था। वहां पालकाव्य नामक एक थोडी अवस्था का ऋषीश्वर रहता था उसे इन सभों से बडा स्नेह होगया था परंतु राजा रोमपाद फंदा डालकर हाथियों को चंपापुरी में पकड़ ले गया।

अंग देस पूरब्ब मझि। बन षंड गहब्बरि ॥
उज्जल जल दल कमल। बिपुल लुहिताच्छ सरब्बर ॥
आपति गज को जूथ। करत क्रीड़ा निसि बासर ॥
पालकाव्य लघु वेस। रहत एक तहां रुषेसर ॥
तिन प्रीति बंधि अति परसपर। रोमपाद न्रप संभरिय ॥
आषेट जाइ फंदनि पकरि। दुरद आनि चंपापुरिय ॥ छं० ॥ ६ ॥

पालकाव्य मारे बिरह के मरकर हाथी के रूप में जनमा।

(१) कृ.-उतंग। (२) ए.मो.-तयारी। (३) को.ए.-मंड।

दूहा ॥ पालकाव्य के विरह करि। अंग भए अति षीन ॥
मुनि बर तब तहँ आय कें। गज चिगछग्गुन कीन ॥ छं० ॥ ७ ॥
गाथा ॥ कोपर पराग पत्तं। [1]छालं डाल फूल फल कंदं ॥
फली कली दै जरियं। कुंजर करि थूलयं तनयं ॥ छं० ॥ ८ ॥

उधर ब्रह्मा के तप को भंग करने के लिये इन्द्र ने रंभा को भेजा था उसे शापवश हथिनी होना पड़ा वह भी वहीं आई ।

कवित्त ॥ ब्रह्मा रिष तप करत। देषि कंप्यौ मघवानं ॥
छलन काज पहु पठय। रंभ रुचिरा करि मानं ॥
श्राप दियौ तापसह। अवनि करिनी सु अवत्तरि ॥
क्रम्म बंधि इक जती। लषित हूऔ सुपनंतरि ॥
तिहि ठाम आइ उहि हस्तिनी। बीर लियो पोगर सुनमि ॥
उर सुक्र अंस धरि चंद कहि। पालकाव्य मुनिवर जनमि ॥छं०॥९॥

पालकाव्य उस के साथ बिहार करने लगा ।

दोहा ॥ ताथें तिन मुनि करिन सों। बांधि प्रीत अत्यंत ॥
चंद कह्यौ न्रप पिथ्थ सम। सकल मंडि बरतंत ॥ छं० ॥ १० ॥

चन्द ने उस बन और जन्तुओं की प्रशंसा करके कहा कि आप अवश्य वहां चलकर शिकार खेलिए ।

कवित्त ॥ सुनहि राज प्रथिराज। विपन रवनीय करिय जुथ ॥
रेवा तट सुंदर समूह। गजवंत चवन रथ ॥
आषेटक आचंभ। पंथ पावर रुकि पिल्लौ ॥
सिंघ वट्ट दिलि समुह। राज पिल्लत दोइ चल्लौ ॥
जल जूह कूह कसतूरि म्रग। पहपंगी अरु पर्वतह ॥
चहुआन मान देषें न्रपति। कहिन बनत दच्छिन सुरह ॥छं०॥११॥

(१) ए.-ढलं, ढालं, छलं।

एक तो जयचन्द पर जलन हो रही थी दूसरे अच्छा रमणीक स्थान सुन पृथ्वीराज से न रहा गया।

दूहा॥ एक ताप पहु पंग कौ। अरु रवनीक [1]जु थान॥
चावँडराव बचन्न सुनि। चढ़ि चल्यौ चहुआन॥ छं० ॥ १२॥

पृथ्वीराज धूम से चला। रास्ते के राजा संग हो गए, स्वयं रेवानरेश भी साथ हुआ। इस समय सुलतान के भेदुए (नीतिराय) ने लाहौर से यह समाचार गजनी भेजा।

कवित्त॥ चढ़त राज प्रथिराज। बीर अगनेव दिसा कसि॥
सब्ब भूमि न्रप न्रपति। चरन चहुआन लग्गि धसि॥
मिल्यौ भान विस्तरी। मिल्यौ षट्टल गड्डी न्रप॥
मिल्यौ नंदि पुर राज। मिल्यौ रेवा नरिंद अप॥
बन जूथ म्रग्ग सिंघह रु गज। न्रप आषेटक खिल्लई॥
लाहौर थान सुरतान तप। वर कग्गद लिषि सिल्लई॥ छं० ॥ १३॥

मारू खां और तत्तार खां ने दिल्ली पर आक्रमण करने का *बीड़ा उठाया।

दूहा॥ षां ततार मारूफ षां। लिये पान कर साहि॥
धर चहुआनी उप्परै। बज्जा बज्जन बाइ॥ छं० ॥ १४॥

यह समाचार पा शहाबुद्दीन का चढ़ाई की तयारी करना।

साटक॥ श्रोतं भूपय गोरियं वर भरं, बज्जाइ सज्जाइने।
सा सेना चतुरंग बंधि उल्ललं, तत्तार मारूफयं॥
तुब्भ्मी सार स उप्प राव सरसो, पल्लानयं षानयं।
एकं जीव साहाब साहि ननयं, बीयं स्तयं सेनयं॥ छं० ॥ १५॥

(१) मो.-सु।

* प्राचीन समय में यह नियम था कि जब कोई कठिन कार्य्य आ उपस्थित होता था तो दरबार में पान का बीड़ा रख कर अपेक्षित कार्य्य की सूचना दी जाती थी अतएव जो सरदार अपने को उस काम के करने योग्य देखता वह बीड़ा उठा लेता।

तातार खां आदि सभों ने कुरान हाथ में लेकर शपथ करके प्रस्थान किया।

दूहा ॥ अहि वेली फल हथ्थ लै। तो ऊपर तत्तार ॥
मेच्छमल्हूरति सत्ति कैं। बंच कुरानी बार ॥ छं० ॥ १६ ॥

तत्तार खां का कहना कि चन्द पुंडीर को मार कर एक दिन में दिल्ली ले लूंगा।

कुंडलिया ॥ बर [1]मुसाफ तत्तार खां। मरन किति [2]नन बान ॥
मैं भंजे लाहौर धर। लैहूं सुनि सु बिहान ॥
लैहैं सुनि सु विहान। सुनै ढिल्ली सुरतानं ॥
लुथ्थि पार पुंडीर। भीर परि है चहुआनं ॥
दुचित्त चित जिन करहु। राज आषेट [3]उथापं ॥
गज्जनेस आयस्स। चले सब छूप मुसाफं ॥ छं० ॥ १७ ॥

चन्द पुण्डीर ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा। पृथ्वीराज का छः कोस लौट कर कूच का मुकाम करना।

दूहा ॥ षट मुर कोस मुकाम करि। चढ़ि चल्यौ चौहान ॥
चंद बीर पुंडीर कौ। कग्गद करि परिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का पंजाब तक सीधे शहाबुद्दीन को सेना के रुख पर जाना और उधर से शहाबुद्दीन की सेना का आना।

गोरी बै दल संमुहौ। गौ पंजाब प्रमान ॥
पुब्ब रू पच्छिम दुहु दिसा। मिलि चुहान सुरतान ॥ छं० ॥ १९ ॥

उसी समय कन्नौज के दूतों का यह समाचार जयचन्द से कहना।

दूत गये कनवज्ज दिसि। ते आए तिन थान ॥
कथा मंड चहुआन की। कहि कमधज्ज प्रमान ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) ए.-सु साफ। (२) ए. कृ. को.-तन। (३) ए.-उथानं।

पृथ्वीराज का रेवा तट आना सुनकर सुलतान का सेना सजकर चलना ।

रेवा तट आयौ सुन्यौ । बर गोरी चहुआन ॥
बर अवाज सब मिट्टि कै । सजे सेन सुरतान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि बहुत बड़े शत्रुरूपी मृगों का समूह शिकार करने को मिला ।

दूत बचन संभलि न्रपति । बर आषेटक षिल्ल ॥
रेंवातट [1]पद्धर धरा । जूह म्रगन बर मिल्लि ॥ छं० ॥ २२ ॥

राज्य मंत्रियों ने यह सम्मति दी कि अपने आप झगड़ा मोल लेना उचित नहीं किसी नीति द्वारा काम लेना ठीक है ।

कवित्त ॥ मिले सब्ब सामंत । मत्त मंड्यौ सु नरेसुर ॥
दह गूना [2]दल साहि । सज्जि चतुरंग सजी उर ॥
मवन मंत चुक्कौ न । सोइ बर मंत विचारौ ॥
बल घट्यौ अप्पनौ । सोच पछ्छिलौ निहारौ ॥
[3]तन सट्टौ लीजै मुगति । जुगति बंध गोरी दलह ॥
संग्राम भीर प्रथिराज बल । अप्प मत्ति किज्जै कलह ॥ छं० ॥ २३ ॥

यह बात सुन कर सामंतों का मुसका कर कहना कि भारथ का बचन है कि रण में मरने से ही बीर का कल्याण है ।

सुनिय बत्त पज्जून । राव परसंग [4]मुसक्यौ ॥
देव राव वग्गरी । सेन दे पाव कसक्यौ ॥

---

(१) ए.-धधार । (२) मो.-बल ।
(३) मो.-सँट्टे लीजै, ए.-सद सटें । (४) मो.-सुसक्यौ ।

तन सट्टै [1]सहि मुकति। बोल भारथ्थी बोलै ॥
लोह अंच उड्डंत। पत्त तरवर जिम डोलै ॥
सुरतान चंपि मुष्षां लग्यौ। दिल्ली न्रप दल वानिवौ ॥
भर भीर धीर सामंत पुन। अबै पटंतर आनिबौ ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय का कहना कि मैंने सब शत्रुओं को पराजित किया और शहाबुद्दीन को भी पकड़ा। अब भी उस से नहीं डरता।

कहै राव पज्जून। तार कव्यों तत्तारिय ॥
मैं दष्षिन वै देस। भीर जद्दव पर [2]पारिय ॥
मैं बंध्यो जंगलू। राव चामंड [3]सु सथ्थे ॥
बंभन वास विरास। बीर बड़ गुज्जर तथ्थे ॥
भर विभर सेन चहुआन दल। गोरी दल [4]कित्तक गिनै ॥
जानै कि [5]भीम कौरव सुबर। जर समूह तरवर किनै ॥छं०॥२५॥

जैत राव का कहना कि शहाबुद्दीन की सेना से मिलान होना लाहौर के पास अनुमान किया जाता है अत एव अपनी सब तैयारी कर लेनी उचित है आगे जो आप की इच्छा हो।

कहै जैत पंवार। सुनहु प्रथिराज राज मत ॥
जुद्ध साहि गोरी। नरिंद लाहौर कोट गत ॥
सबै सैन अप्पनो। राज एकट्ठ सु किज्ज ॥
इष्ट भ्रत्य सगपन सु। हित कागद लिषि दिज्जै ॥
सामंत सामि इहि मंत है। [6]अरु जु मंत चित्तै न्रपति ॥
धन रहै ध्रम्म जसु जोग ह्वै। दिपति दीप दिव लोकपति ॥छं०॥२६॥

---

(१) ए.-साटि। (२) मो.-परिहरिय।
(३) मो.-जु। (४) मो.-किन्ती।
(५) ए.-भीम, कौरू, कौरूं, कौरौं। (६) ए.-अरु जुद्ध।

रघुबंस राम का कहना कि हम सामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल मरना जानते हैं, पहिले शाह को पकड़ा था अब भी पकडेंगे।

वह वह कहि रघुबंश। राम हक्कारि सु उठ्यौ ॥
सुनौ सब्ब सामंत। साहि आए बल [1]छुथ्यौ ॥
गज रु सिंघ सा पुरिष। जही रुंधै तहां सुभ्भै ॥
[2]असम समौ जानहि न। लज्ज पंकै आलुभ्भै ॥
सामंत मंत जानैं नही। मत्त गहैं इक मरन कौ
सुरतान सेन पहिलै बंध्यौ। फिर बंधां तौ करन कौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

कविचन्द का कहना कि हे गुज्जर गँवारी बातें न कहो इन्हीं बातों से राज्य का नाश होता है। हम सब के मरने पर राजा क्या करेगा।

रे गुज्जर गांवार। राज लै मंत न होई ॥
अप मर छिज्जै न्रपति। कौन कारज यह जोई ॥
सब सेवक चहुआन। देस भग्गै धर षिल्लै ॥
पच्छि काम कह करै। स्वामि संग्राम इकल्लै ॥
पंडित्त भट्ट कबि गाइना। न्रप सौदागिर वार हुअ ॥
गजराज [3]सीस सोभा वरन। क्रन उड़ाइ वह सोभ लह ॥ छं० ॥ २८ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उस के लिये जुद्ध का सामान करो।

दूहा ॥ परी षोर तन दंग [4]गम। अग्ग जुद्ध सुरतान ॥
अब इह मंत विचारये। लरन मरन परवान ॥ छं० ॥ २९ ॥

---

(१) ए.-घटयो, (२) ए. कृ. को.-समौ, असमौ।
(३) सा.-सोस। (४) ए.-मम।

[1]गजत संग प्रथिराज कैं। है दिष्षिय परवान ॥
बज्जी पष्षर षंड रै। चाहुआन सुरतान ॥ छं० ॥ ३० ॥

ग्यारह अष्षर पंच षट। लहु गुरु होइ समान ॥
कंठ सोभ वर छंद कौ। नाम कह्यौ परवान ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के घोड़ों की शोभा वर्णन।

छंद कंठशोभा ॥ फिरे हय बष्षर पष्षर से। मनै फिर इंदुज पंष कसे ॥
सोई उपमा कविचंद कथे। सजे मनों पौंम पवंग रथे ॥ छं० ॥ ३२ ॥
उर पुट्ठिय [2]सुट्ठिय दिट्ठय ता। वपरी पय लंगत ता धरिता ॥
लग्गे उड़ि छित्तिय [3]चौ नलयं। सुनै षुर केह अबत्तनयं ॥ छं० ॥ ३३ ॥
अग बंधि सु हेम हमेल घनं। तब चामर जोति पवंन रुनं ॥
ग्रह अट्ठस तारक [4]बीत षगे। मनों सुत के उर भान [5]उगे ॥ छं० ॥ ३४ ॥
पय मंडिहि अंसु धरै उलटा। मनौ बिंटय देषि चलै कुलटा ॥
मुष कट्टिन घूंघट अस्सु बली। मनों घुंघट दै कुल बद्धु चली ॥
छं० ॥ ३५ ॥
तिनं उपमा बरनो न घनं। पुजै नन बग्ग पवंन मनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

आधी रात को दूत पृथ्वीराज के पास पहुंचा और समाचार दिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख सेना के साथ सुलतान लाहौर से चौदह कोस पर आ पहुंचा।

कुंडलिया ॥ नव बज्जी घरियार घर। राज महल उठि जाइ ॥
निसा अद्ध बर उत्तरे। दूत संपते आइ ॥
दूत संपते आइ। धाइ चहुआन सु जग्गिय ॥
सिंघ विहथ्थें मुक्कि। साहि साहीउर तग्गिय ॥
अट्ठ सहस गजराज। लष्ष अट्ठारह [6]ताजिय ॥
उभै सत्त वर कोस। साहि गौरी नव बाजिय ॥ छं० ॥ ३७ ॥

(१) ए. कृ. को.-गजन सिंग (२) ए. कृ. को.-उर उप्पर पुट्ठिय दिट्ठियत।
(३) ए.-दो, दी। (४) ए. कृ. को.-पीत पगे। (५) ए.-उड़े। (६) ए. कृ. को.-राजिय।

पृथ्वीराज ने दूत से पत्र लेकर पढ़ा—हिन्दुओं के दल में शोर मच गया।

दूहा ॥ बचि कागद चहुआन नें। फिरन चंद [1]सह थान ॥
मनो बीर तनु अंकुरे। मुगति भोग वनि प्रान ॥ छं० ॥ ३८ ॥
मची कूह दल हिंदु के। [2]कसे सनाह सनाह ॥
बर चिराक दस [3]सहस भइ। बजि निसांन अरिदाह ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का दरबार में आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुस्लमान सेना चिनाब के पार आगई। चन्द पुंडीर ने उसका रास्ता बांध कर मुझे इधर भेजा है।

*बा बद्ध न्रप मुक्कतें। दूत आइ तिहि वार ॥
सजी सेन गोरी सुभर। उत्तरए नद पार ॥ छं० ॥ ४० ॥
पंचासज गोरी न्रपति। बंध उतरि नहिं पार ॥
चंद बीर पुंडीर नें। [4]थटि मुक्कै दरबार ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सुलतान का अपने सामंतों के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

कवित्त ॥ षां मारुफ ततार। षान षिलची बर गढ्ढे ॥
चामर छच मुजक्क। गोल सेना रचि गढ्ढे ॥
नारि गोरि जम्बूर। सुबर कीना गजसारं ॥
नूरीं षां हुज्जाव। नूर महमद सिर भारं ॥
वज्जीर षान गोरी सुभर। षान षान हजरत्ति षां ॥
बिय सज्जि सैन हरवल्ल करिय। तहां उभौ सजरत्ति षां ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) क.-सर। (२) ए. कृ-कैरे सनाह अनाह। (३) ए. कृ. को.-दस दस।
(४) ए.-उत्तर यो नदि पार, मो.-घट मुक्यौ दरवार।
* यह दोहा ए. को. और कृ. प्रति में नहीं है।

शाहजादे का सरदारों के साथ सेना हरवल रचना और सेना के मुख्य सरदारों के नाम स्थान और उन का पराक्रम वर्णन।

रचि हरवल सुरतान। साहिजादा सुरतानं॥
षां पैदा महमूद। बीर बंध्यौ सु विहानं॥
षां मंगोल लल्लरी। बीस टंकौ बर षंचै॥
चो तगीसह बाज। बान अरि प्रान सु अंचै॥
जँहगीर षान जह गोर बर। षां हिंद बर बर बिहर॥
पच्छिमी षान पठ्ठान सह। रचि उभ्भै हरवल गहर॥छं०॥४३॥
रचि हरवल पठ्ठान। षान इसमान रु गष्षर॥
केली षां कुंजरी। साह सारी दल पष्षर॥
षां भट्टी मह नंग। षान षुरसानी बब्बर॥
हबस षान हुज्जाब। अब्ब आलम्म जास बर॥
तिन अग्ग अट्ठ गजराज बर। मद सरक्क पट्टे तिना॥
पंच बिन पिंड जो ऊपजे। जुद्ध होइ लज्जी बिना॥ छं०॥ ४४॥

शहाबुद्दीन का इस पार तीस दूतों को रख कर चिनाब पार करना।

[1]करित माय बहु साहि। तीस तहँ रष्षि फिरस्ते॥
आलम षान गुमाम। षान उजबक्क निरस्त॥
लहु मारूफ गुमस्त। षान दुस्तम बजरंगी॥
हिंदु सेन उप्परें। साहि बज्जै रन जंगी॥
सह सेन टारि सोरा रच्यौ। साहि चिन्नाव सु उत्तर्यौ॥
संभले सूर सामंत न्टप। रोस बीर बीरं हुर्यो॥ छं०॥ ४५॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दूत का कहना पुंडीर उसे रोके हुए है।

(१) ए.-करत माइ चौसाहि।

दूहा ॥ तमसि तमसि सामंत सब । रोस भरिग प्रथिराज ॥
जब लगि रुपि पुंडीर नें । रोक्यौ गोरी साज ॥ छं० ॥ ४६ ॥

जहां पर सुलतान चिनाब उतरने वाला था वहीं पुण्डीर ने रास्ता रोका । घोर युद्ध हुआ । चन्द पुण्डीर घायल हो कर गिरा । सुलतान चिनाब पार होने लगा ।

भुजंगी ॥ जहां उतर्‌यौ साहि चिन्हाव मीरं । तहां नेज गड्यौ ठठ्ठक्के पुडीरं ।
करी आनि साहाव सा बंधि गोरी । धके धींग धींगं धकावै सजोरी ॥
छं० ॥ ४७ ॥

दोज दीन दीनं कढ़ी बंकि असी । किधौं मेघ में बीज कोटि निकस्सी ॥
किए सिप्परं कोर ता सेल अग्गी । किधौं बद्दरं कोर नागिन्न नग्गी ॥
छं० ॥ ४८ ॥

हबक्के जु मेछं भ्रमंतं जु छुट्टै । मनों घेरनी घुम्मि पारेव तुट्टै ॥
उरं फुट्टि बरछी बरं छब्बि नासी । मनों जाल में मीन अद्धी निकासी ॥
छं० ॥ ४९ ॥

लटक्के जुरंनं उड़ै हंस हल्लै । रसं भीति छूरं चवग्गान षिल्लै ।
लगे सीस नेजा भ्रमें मेजि तथ्यें । भषै वाइसं भात दीपत्ति सथ्यें ॥
छं० ॥ ५० ॥

करै मार मारं महाबीर धीरं । भये मेघ धारा बरष्षंत तीरं ॥
परे पंच पुंडीर सा चंद कढ्यौ । तबै साहि गोरी स चन्हाव चढ्यौ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

सुलतान का चिनाब उतरना और चन्द पुण्डीर का गिरना देख कर दूत ने बढ़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया ।

कवित्त ॥ उतरि साहि चिन्हाव । घाय पुंडीर लुथ्थि पर ॥
उप्पार्‌यौ बर चंद । पंच बंधव सु पथ्थ धर ॥
दिषिष दूत बर चरित । पास आयौ चहुआनं ॥
उप्पर गोरी नरिंद । हास बढ्ढी सुरतानं ॥

बर मीर धीर मारूफ दुरि। [1]पंच अनी एकठ जुरी॥
मुर पंच कोस लाहौर तें। मेच्छ मिलानह सो करी॥ छं०॥ ५२॥

पृथ्वीराज ने क्रोध के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेश्वर का बेटा जो फिर सुलतान को कैद करूं। पृथ्वीराज ने चन्द्र ब्यूह की रचना करके चढ़ाई की।

दूहा॥ बीर रोस बर बैर बर। झुकि लग्गौ असमान॥
तौ नंदन सोमेस कौ। फिरि बंधौ सुरतान॥ छं०॥ ५३॥
चन्द्रव्यूह न्रप बंधि दल। धनि प्रथिराज नरिंद॥
साहि बंध सुरतान सौं। सेना बिन विधि कंद॥ छं०॥ ५४॥

पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने चढ़ाई की। (कवि ने उस दिन के ग्रह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है)

कवित्त॥ बर मंगल पंचमी। दिन सु दीनौ प्रथिराजं॥
राह केत जय दीन। दुष्ट टारे सुभ काजं॥
अष्ट चक्र जोगनी। भोग भरनी सुधि रारी॥
गुर पंचम रबि पंच। अष्ट मंगल न्रप भारी॥
कै इंद्र बुद्ध भारथ्थ भल। कर चिह्लल चक्का बलिय॥
सुभ घरिय राज बर लीन बर। चल्यौ उदै क्रूरह बलिय॥छं०॥५५॥

दूहा॥ सो रचि उद्ध अवद्ध अध। [2]उग्गि महब विधि [3]कंद॥
बर निषेद न्रप बंदयौ। को न भाय कबिचंद॥ छं०॥ ५६॥

जिस प्रकार चक्रवाक, साधु, रोगी, निर्धन, विरह वियोगी लोग रात्रि के अवसान और सूर्य्योदय की इच्छा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वीराज भी सूर्य्योदय को चाहता था।

(१) ए.-खंच। (२) ए.-लगी। (३) ए.-मंडि, कृ.-मंदि मंड।

कवित्त ॥ प्रात सूर बंछई। चक्क चक्किय रबि बंछै ॥
प्रात सूर बंछई। सुरह बुद्धि बल सो इंछै ॥
प्रात सूर बंछई। प्रात बर बंछि वियोगी ॥
प्रात सूर बंछई। ज्यौं मु बंछै बर रोगी ॥
बंछयौ प्रात ज्यौं त्यौं उनन। वंछै रंक करन्न बर ॥
बंछयौ प्रात प्रथिराज नें। सती सत्त बंछैति उर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज की सेना तथा चढ़ाई का वर्णन।

दंडमाली ॥ भय प्रात रत्तिय, जुरत दीसय चंद मंदय चंद यौ।
भर तमस तामस, सूर वर भरि, रास तामस छंद यौ ॥
बर बज्जियं नीसान धुनि, घन बीर बरनि अँकूरयं।
धर धरकि धाइर, करषि काइर, रस मिसूर स क्रूरयं॥ छं० ॥ ५८॥
गज घंट घनकिय, रुद्र [1]भन किय, घनकि संकर उद्दयौ।
रन नंकि [2]भेरिय, कन्ह होरिय, दंति दान धनं [3]दयौ ॥
सुनि बीर सद्दइ, सबद पद्धई, सद्द असद्दइ छंडयौ।
तिह ठौर अदभुत, होत न्रप दल, बंधि दुज्जन षंडयौ ॥छं०॥५९॥
सन्नाह सूरज सज्जि घाटं, चंद ओपम राजई।
मुकर में प्रतिव्यंब राजय, सत्त घन ससि साजई ॥
बर फल्लि बंबर, टोप आयो, त रोस सीसत आइए।
नष्षिच हस्त कि, भान चंपक, कमल सूरहि साइए ॥ छं० ॥ ६० ॥
बर बीर धा जोगिंद पत्तिय, कब्बि ओपम पाइयं ॥
तजि मोह माया, छोह कल बर, धार तित्थह धाइयं ॥
संसार शंकर वंधि, गज जिम, अप्प वंधन हथ्थयं।
उनमत्त गज जिमि, नंख दीनी, मोह माया सथ्थयं ॥ छं० ॥ ६१ ॥
सो प्रवल मह जुग, बंधि जोगी, मुनी आरम देवयौ।
सामंत धनि जिम, षित्ति कीनी, पत्त तरु जिम भेवयौ ॥ छं० ॥ ६२॥

(१) ए.-भनषिय। (२) ए.-भोरिय।
(३) ए.-घनंजयौ।

दूहा ॥ क्रंम गाह इक मुगत की। क्यों करिजै बाषान ॥
मन अनंष सामंत नै। [1]कच कर बति पाषान ॥ छं० ॥ ६३ ॥
बाई बिष धंधरि परिय। बद्दर छाए भान ॥
कुन घर मंगल बज्जही। कै चढ़ि मंगल आन ॥ छं० ॥ ६४ ॥

दोनों ओर की सेनाओं के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र और निशानों का वर्णन।

दिष्ट देषि सुरताम दल। लोहा षक्कत बान ॥
षहकि फेरि उड़गन चले। निसि आगम फिरि [2]जान ॥ छं० ॥ ६५॥
धजा बाइ बंकुर उड़ति। छबि कबिंद इह आइ ॥
उड़गन चंद नरिंद बिय। लगो [3]मनों अइ पाइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
से सनि संकहि बजतहि। बाजे कुहक सुरंग ॥
मेटै सद्द निसान के। सुनै न श्रवनति अंग ॥ छं० ॥ ६७ ॥

जब दोनों सेनाएं साम्हने हुईं तब मेवारपति रावल समरसिंह ने आगे बढ़कर युद्ध आरम्भ किया।

अनी दोउ घन घोर ज्यौं। [4]घाय मिले कर घाट ॥
चिचंगी रावर बिना। करै कोन दह वाट ॥ छं० ॥ ६८ ॥
कवित्त ॥ पवन रूप पाचंड। घालि असु असि वर झारै ॥
मार मार सुर बज्जि। पत्त तरू अरि सिर पारै ॥
फहकि सद्द [5]फेफरा। हड्ड कंकर उप्पारै ॥
कटि भसुंड परि मुंड। भिंड कंटक उप्पारै ॥
बज्जयौ विषम मेवारपति। रज उडाइ सुरतान दल ॥
समरथ्थ समर [6]सम्मर मिलिय। अनी मुष्ष पिष्षौ सबल ॥छं०॥६९॥

रावल, जैत पँवार, चामंड राय और हुसैन षां का क्रमानुसार हरावल में आक्रमण करना। पीठि सेना का पीछे से बढ़ना।

(१) मो.-ज्यौं कचकरवर्ती। (२) को.ए.-जाम। (३) ए. मो.-मानों-मानो।
(४) ए. कृ. को.-घाघा मिलेक थाट, कर थाट।
(५) ए. कृ. को.-फीफरा। (६) ए. कृ. को.-मनमथ मिल, मिली, मिल्यौ।

रावर उप्पर धाई। पऱ्यौ पांवार जैत षिझि ॥
तिहि उप्पर चांमंड। कऱ्यौ हुस्सेन षान सजि ॥
धक्काई धक्काइ। दोइ हरवल बर मझ्झै ॥
पच्छ सेन आहुट्टि। अनी बंधी आलुझ्झै ॥
गजराज बिय सु सुरतान दल। दह चतुरँग बर बीर बर ॥
धनि धार धार धारह धनी। बर भट्टी उप्पारि कर ॥ छं० ॥ ७० ॥

हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना।

छत्र सु जीक सु अप्पि। जैत दीनौ सिर छत्रं ॥
चन्द्रव्यूह अंकुरिय। राज [1]दुअ इहां इकत्रं ॥
एक अग्र हुसेन। बीय अग्रह पुंडीरं ॥
मद्धि भाग रघुवंस। राम उभ्भौ बर बीरं ॥
सांषलौ सूर सारंग दे। उररि षान गोरीय मुष ॥
हयनारि [2]गोर जंबूर घन। दुहू बांह उभ्भंति [3]रष ॥ छं० ॥७१ ॥

दो पहर के समय चंद पुंडीर का तिरछा रुख दे कर शत्रु सेना को दबाना।

छुट्टि अद्ध बर घटिय। चढ्यौ मध्यान भान सिर ॥
सूर कंध बर कढ्ढि। मिले काइर कुरंग बर ॥
घरी अद्ध बर अद्ध। लोह सों लोह जु रुक्के ॥
मन अग्गै अरि मिले। चित्त में कंक धरक्के ॥
पुंडीर भीर भंजन भिरन। लरन तिरच्छौ लग्गयौ ॥
नव बधू जेन संका सुबर। उदौ जानि जिम भग्गयौ ॥ छं० ॥७२॥

पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन का सम्मुख घोर युद्ध होना। योगिनी भैरव आदि का आनन्द से नाचना।

भुजंगी ॥ मिले चाइ चहुआन सा चंपि गोरी। स्वयं पंच कोरी निसानं अहोरी॥
वजे आवछं संभरे अद्ध कोसं। घने अग्ग नौसान मिलि अद्धकोसं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

(१) छ. मो.-हुअ। (२) ए. कृ. को. जो, जोरो। (३) कृ.-सख।

बर बंबर चौर माहीति साई। हले छच पीतं बले यार घाई॥
बुलै सूर हक्के दहक्के पचारं। घलै बथ्थ दोऊ धरं जा [1]अपारं॥
छं० ॥ ७४ ॥

उतंमंग तुट्टै परैं श्रोन धारी। मनों दंड सुक्की अगीवाइ वारी॥
नचैं कंध बंधं हकैं सीस भारी। तहां जोग माया [2]जकी सी बिचारी॥
छं० ॥ ७५ ॥

बढ़ी साँग लग्गी बजी धार धारं। तहां सेन दूनं करैं मार मारं॥
नचै रंग भैरू गहै ताल बीरं। सुरंग अच्छरी बंधि नारद्द तीरं॥
छं० ॥ ७६ ॥

इसी जुद्ध वधं उब्बद्दे उभानं। भिरैं गोरियं सेन अरु चाहुआनं॥
करै कुंडली तेग बग्गी [3]प्रमानं। मनों मंडली रास तं कन्ह वानं॥
॥ छं० ॥ ७७ ॥

फुठी आवधं माहि सामंत सूरं। बजैं गोर ओरं मनों बज्ज झूरं॥
लगै धार धारं तिनै धरह तुट्टै। दुहूं कुंभ भग्गे करंकं अहुट्टै॥
॥ छं० ॥ ७८ ॥

फुटी श्रोन भोमं [4]अर्पं बिंब राजं। मनों मेघ बुद्ढें प्रथीमी समाजं॥
पराक्रम्म राजं प्रथीपत्ति रुथ्यौ। रनं रुंधि गोरी सहं जंग जुथ्यौ॥
छं० ॥ ७९ ॥

सुलतान का घबराना। तातार खां का धैर्य दिलाना।

दूहा॥ तेज छुट्टि गोरी सुबर। दिय धीरज तत्तार॥
मो उभ्भै सुरतान को। [5]भोर परी इन वार॥ छं॥ ८०॥

उक्त युद्ध की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

मोतीदाम॥ रतिराज रु जोवन राजत जोर। चँप्पी ससिरं उर शैशव कोर॥
उनी मधि मद्धि मधू धुनि होय। तिनं उपमा बरनी कबि [6]जोय॥
छं० ॥ ८१ ॥

(१) ए.-अपारं। (२) मो.-जुकीयं बिचारी। (३) ए. कृ.-पमानी।
(४) कृ. ए.-अपी। (५) ए.-भरी। (६) ए. कृ. को.-कोह, कोय, होइ।

सुनी बर आगम [1]जुब्बन बैन । नच्यौ कबहूं न सु उद्दिम मैन ॥
कबहूं ढुरि क्रंनन [2]पुच्छत नैन । कहौ किन अब्ब ढुरी ढुरि बैन ॥
छं० ॥ ८२ ॥

शशि रोर नसै सब दुंदभि बज्जि । उभै रतिराज [3]सुजोवन सज्जि ॥
कही बर ओन सुरंगिय रज्जि । चंपे [4]रन दोउ बनं बन भज्जि ॥
छं० ॥ ८३ ॥

इय मीनन लीन भये रत रज्जि । भम विब्भम भारु परी गहि नज्ज॥
मुर मारुत फौज प्रथंम चलाइ । गति लज्जि सकुच्चि कछे मिलि आइ॥
छं ॥ ८४ ॥

दहि सीत मधूप न कंदहि जीव । प्रकटै उर तुच्छ सोज उर भीव॥
बिन पल्लव कोरहि [5]तारहि रंभ । गहना बिन बाल बिराजत अंभ॥
छं० ॥ ८५ ॥

कलि कंठन कंठ सज्यौ अलि पंष । न उड्डिय भ्रंग नवेलिय अंष ॥
सजी चतुरंग सज्यौ बन राइ । बजी इन उप्पर सैसब जाइ ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कवि मत्तिय जूह तिंन बहु घोर । बनं तब संधय चंद कठोर॥
छं० ॥ ८७॥

रसावला ॥ बोल षुच्चै घनं, स्वांमि जंपे मनं । रोस लग्गो तनं, सिंघ मद्दं मनं॥
छं० ॥ ८८ ॥

छोह मोहं षिनं, दांन छुट्टे ननं । नाम राजं घनं, ध्रंम सातुक्कनं ॥
छं० ॥ ८९ ॥

मेच्छ वाहं बिनं, रत्त कंधं मनं । ढल्ल जा ढाहनं, जीवता सा हनं॥
छं० ॥ ९० ॥

वान जा संधनं, पंषि जा बंधन । स्यांम सेतं अनी, पीत रत्तं घनी ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कूह मच्ची षरी, रोस दंती फिरी । फौज फट्टी पुनं, सूर ऊभे घनं॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) ए.-जुब्बन । (२) मो. ए. कों.-पुच्छन। (३) ए.-सजीवन ।
(४) ए. कृ. को.-नर । (५) ए.-तारै संभ ।

लेहु लेहु करी, लोह कढ्ढे अरी। कन्ह जा संभरी, पाइ मंडे फिरी ॥
छं० ॥ ६३ ॥

बीर हक्कं करी, नैन रत्तं बरी। षंड जा षोलियं, बीर सा बोलियं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

बीर बज्जे घुरं, दंति पट्टे छुरं। झार संकोरीयं, फौज बिप्फोरियं ॥
छं० ॥ ६५ ॥

दंत रुद्धी परे, अग्ग फूलं झरे। हेमयं नारियं, जावकं ढारियं ॥
छं० ॥ ६६ ॥

आननं हंकयं, अंग 'जानंचयं। सत्त सामंतयं, वांन सा पथ्थयं ॥
छं० ॥ ६७ ॥

फौज दोऊ फटी, जांनि जूनी टटी। .... ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सोलंकी माधव राय से खिलजी खां से तलवार का युद्ध होने लगा। माधव राय की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने लगा। शत्रुओं ने अधर्म युद्ध से उसे मार गिराया।

कवित्त ॥ सोलंकी माधव। नरिंद षिलची मुष लग्गा ॥
सुबर बीर रस बीर। बीर बीरा रस पग्गा ॥
दुअन बुड्ढ जुध तेग। दुह्ह हथ्थन उब्भारिय ॥
तेग तुट्टि चालुक्क। बथ्थ परि कढ्ढि कटारिय ॥
अग अग्ग हक्कि ठिल्ले बलन। अधम जुद्ध लग्गे लरन ॥
सारंग बंध घन घाव परि। गोरी बै दिन्नौ मरन ॥ छं० ॥ ६९ ॥

वीर गति से मरने पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा।

षग्ग हटक्कि जुटिक्क। जमन सेना समंद गजि ॥
हय गय वर हिल्लोर। गरुअ गोइंद दिष्षि सजि ॥

(१) ए.-जानं।

अनम अठेल अभंग। नीर असि मीर समाहिय॥
अति दल बल आहुट्टि। पच्छ लज्जी पर वाहिय॥
रज तज्ज रज्ज मुक्कि न रह्यौ। रज न लगी रज रज भयौ॥
उच्छंगन अच्छर सो लयौ। देव विमानन चढ़ि गयौ॥ छं०॥१००॥

जै सिंह की वीरता और उसकी वीर मृत्यु की प्रशंसा।

परि पतंग जै सिंघ। पतँग अप्पुन तन दझ्झै॥
नव पतंग गति लीन। करे अरि अरिधज धज्जै॥
तेल ठांम बात्तीय। [1]अगन्नि एकल विरुझाइय॥
पंच अप्प अरि पंच। पंच अरि पंथ लगाइय॥
आरन्नि कूंआरी बर बर्‌यौ। दै दाहन दुज्जन दवन॥
जीतेव असुर महि मंडलह। और ताहि पुज्जै कवन॥ छं०॥१०१॥

वीर पुंडीर के भाई की वीरता और उस के कमंध का खड़ा होना।

रुप्पौ बीर पुंडरी। फिरी पारस सुरतानी॥
शस्त्र बीर चमकंत। तेज आरुहि सिर [2]ठानी॥
टोप ओप तुटि किरच। सार सारह जरि भारे॥
मिलि नछिच रोहनी। सीस ससि उडगन चारे॥
उठि परत भिरत भंजत अरिन। जै जै जै सुर लोक हुअ॥
उठ्यौ कमंध पलपंच चव। कौन भाइ कप्पौ जु धुअ॥ छं०॥१०२॥

पज्जून राय के भाई पल्हान राय का खुरसान खां के हाथ से मारा जाना।

दुजन सल कूरंभ। बंध पल्हन सक्कारिय॥
संम्हौ षां षुरसान। तेग लंबी उब्भारिय॥
टोप टुट्टि बर करी। सीस परि तुट्टि कमंधं॥
मार मार उच्चार। तार तं नंचि कमंधं॥

(१) मो.-अगान्नि। (२) ए.-तानी।

तहँ देषि रुद्र रुद्रह [1]हस्यौ। [2]हय हय हय नंदी कह्यौ ॥
कविचंद [3]शैलपुची चकित। पिष्षि बीर भारथ नयो ॥छं०॥१०३॥

जै सिंह के भाई का मारा जाना।

सोलंकी सारंग। षान षिलची मुष लग्गा ॥
वह पंगानौ भृत्त। इते चहुआन विलग्गा ॥
है कंध न दिय पाय। कन्ह उत्तरि बिय बाजिय ॥
गज गुंजार हुँकार। धरा गिर कंदर गाजिय ॥
जय जयति देव जै जै करहिं। पहुपंजलि पूजत रिनह ॥
इक पर्यौ षेत सोधै सकल। इक रह्यौ बंधे धुनह ॥ छं० ॥ १०४ ॥

गोइन्द राय का तत्तार खां के हाथी और फीलवान को मार गिराना।

करी मुष्ष आहुट्ठ। बीर गोइंद सु अष्षै ॥
कबिल पीख जनु कन्ह। दंत दारुन गहि नष्षै ॥
सुंड दडं भये षंड। पीलवानं गज मुक्यौ ॥
गिद्धि सिद्धि बेताल। आइ अंषिन पल रुक्यौ ॥
बर बीर पर्यौ भारथ्थ बर। लोह लहरी लगात झुल्यौ ॥
तत्तार षान सम्हौ सु क्रत। सिंघ हक्कि अंबर डुल्यौ ॥ छं० ॥ १०५ ॥

नरसिंह राय के सिर में घाव लगने से उसके गिर जाने पर चामुंडराय का उस की रक्षा करना।

षोलि षग्ग नरसिंघ। षिझिझ षज सीसह झारिय ॥
तुटि धर धरनि परंत। परत संभरि कट्टारिय ॥
चरन अंत उरझंत। बीर कूरंभ करारौ ॥
तेग घाइ चुक्कंत। झरी झर लोह सँभारौ ॥
चलि गयौ [4]क्रमन क्रम्मन चलै। डुल्यौ न [5]डुल्ल तन हथ्थ बर ॥
तिन परत बीर दाहर तनौ। चामंडा बज्जी लहर ॥ छं० ॥ १०६ ॥

(१) मो.-भयौ। (२) मो.-हयं हयं। (३) ए.- सवल, कृ. को.- सयल।
(४) मो.-न क्रमन क्रमनत। (५) ए.-नर डुलतन।

रात हो गई दूसरे दिन सबेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं को आ घेरा।

भुजंगी ॥ [1]छुटी छंदनी छंद सीमा प्रमानं। मिली ढालनी माल राही समानं॥
निसा मान नीसान नीसान धूत्रं। धुत्रं धूरिनं मूरिनं पूर कुत्रं॥
छं० ॥ १०७॥

सुरत्तान फौजं तिनैं [2]पत्ति फेरी। मुषं लग्गि चहुआन पारस्स घेरी॥
भये प्रात सुज्जात संग्राम षालं। चहुव्वान उठ्ठाय सालोपि थाल॥
छं० ॥ १०८॥

जैत राय के भाई लक्ष्मण राय के मरते समय अप्सराओं का उसके पाने की इच्छा करना परंतु उसका सूर्य्य लोक भेद कर मोक्ष पाना।

कवित्त ॥ जैत बंध ढहि पर्‍यो। लष्ष लष्षन कौ जायौ॥
तहं झगरी मह माय। देवि हुंकारौ पायौ॥
हुंकारै हुंकार। जूह गिद्धनि उड्डायौ॥
गिद्धिन तें अपछरा। लियौ चाहत नहि पायौ॥
अत्र तरन सोइ उतपति गयौ। देवथान बिभ्रम [3]बियौ॥
जम लोक न शिवपुर ब्रह्मपुर। भान थान भानै बियौ॥छं०॥१०९॥
तन झंझरि पाधार। पर्‍यौ धर मुच्छि [4]घटिय बिय॥
बर अच्छर बिंटयौ। सुरंग मुक्के सुरंग हिय॥
[5]तिहित बाल तत काल। सलष बंधिव ढिग आइय॥
लिषिय अंग बिय अच्छ। सोई बर बंच दिषाइय॥
जनम मरन सह दुह सुगति। नन मिट्टै भिंटह न तुअ॥
ए वार सुबर बंटहु नहीं। बंधि लेहु सुक्की बधुअ॥ छं० ॥ ११०॥

महादेव का लक्ष्मण का सिर अपनी माला के लिये लेना।

(१) ए.-छंदानं, कृ. मो.—छदनी, छंदनीमा। (२) ए. कृ. को.—पंति।
(३) मो.-भयौ। (४) ए.-घटय। (५) मो.-तिहित काल सतबाल।

दूहा ॥ राम बंध कौ सीस बर। ईस गह्यौ कर चाइ ॥
[1]अथ्थि दरिद्री ज्यौं भयौ। देषि देषि ललचाइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

एक पहर दिन चढ़े जंघा योगी ने त्रिशूल लेकर घोर युद्ध मचाया।

जाम एक दिन चढ़त बर। जंघारौ झुकि बीर ॥
तीर जेम तत्तौ पर्‍यौ। धर अष्षारे मीर ॥ छं० ॥ ११२ ॥

कवित्त ॥ जंघारौ जोगी। जुगिंद कढ्यौ कट्टारौ ॥
परस पानि तुंगी। त्रिसूल मष्षर अधिकारौ ॥
जटत वांन सिंगी। विभूत हर वर हर सारौ ॥
सबर सद्द बद्दयौ। विषम मद गंधन झारौ ॥
आसन सदिट्ठ निज पत्ति में। लिय सिर चंद अखित अमर ॥
मंडलीक राम [2]रावत भिरत। नभौ बीर इत्तौ समर ॥छं०॥११३॥

शस्त्र सजकर सुलतान का युद्ध में टूटना। लंगरी राय का घोर युद्ध मचाना। लंगरी राय की बीरता की प्रशंसा।

सिलह सज्जि सुरतान। झुकि बज्जे रन जंगं ॥
सुनें श्रवन लंगरी। बीर लग्गा अनभंगं ॥
बीर धीर सत मध्य। बीर हुंकरि रन धायौ ॥
सामंता सत मद्धि। मरन दीनं भय सायौ ॥
पारंत धक्क छक्कंत [3]रन। पग प्रवाह षग पुल्लयौ ॥
बिभूत चंद अंगन तिलक। बहसि बीर हकि बुल्लयौ ॥छं०॥११४॥
लंगा लोह उचाइ। पर्‍यौ घुंमर घन मझ्झै ॥
जुरत तेग सम तेग। कोर बद्दर कछु सुझ्झै ॥
यौं लग्गौ सुरतान। अनल दावानल दग्गं ॥
ज्यों लंगूर लग्गया। अगनि अग्गै आलग्गं ॥
इक मार उझ्झार अपार मल। एक उझ्झार सुझ्झारयौ ॥
इक बार तर्‍यौ दुस्तर रुपे। दूजै तेग उभारयौ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.-अथिर। (२) मो.-रावन। (३) ए.-रिन, तरिन।

कुंडलिया ॥ तेग झारि उझ्झारि बर। [1]फिरि उपमा कबि [2]कथ्थ ॥
नैन बान अंकुर [3]बुहुरि। तन तुट्टै वहि हथ्थ ॥
तन तुट्टै बहि हथ्थ। फेरि बर बीर स बीरह ॥
मरन चित्त सिंचयौ। जनम [4]जिन तजी ज जीरह ॥
हथ्थ वथ्थ आहित्त। फेरि तक्कै उर वेगा ॥
लंगा लंगरि राइ। बीर [5]उचाइ सु तेगा ॥ छं० ॥ ११६ ॥

लोहाने की वीरता का वर्णन। चौसठ खाँओं का मारा जाना।

कवित्त ॥ लोहानौ मद मुंद। बान मुक्कै बहु भारी ॥
फुट्टि सु ठट्टर ज्वान। पिठ्ठ जरद्द निकारी ॥
मनों किवारी लागि। पुठ्ठि षिरकी उघ्घारिय ॥
बट्टारी बर कढ्ढि। बीर अवसान संभारिय ॥
एक झर मीर उरझारि [6]झर। करि सुमेर परि अरि सु फिरि ॥
चवसठ्ठि षान गोरी परै। तिन [7]रावव इक राज परि ॥ छं० ॥ ११७ ॥

मानि लोह मारूफ। रोस विड्डुर गाहक्के ॥
मनु पंचानन बाहि। सद्द [8]सिरहद्द हहक्के ॥
दुहूं मीर बर तेज। सीस इक सिंघह बाही ॥
टोप टुट्टि बहकरी। चंद [9]ओपमता पाई ॥
मनु सीस बीय शृंग विज्जुलह। रही हेत तुटि भान हति ॥
उतमंग सुहै बिब टूक ह्वै। मनु उड़गन न्रप तेज मति ॥ छं० ॥ ११८ ॥

चौसठ खान मारे गए और तेरह हिन्दू सरदार मारे गए। हिन्दू सरदारों के नाम तथा उनका किससे युद्ध हुआ इसका वर्णन।

(१) क.-फेरि उपम। (२) मो.-तत्थ। (३) मो.-परैं।
(४) ए.-कृ.-को.-तिन (५) ए.-उच्चार।
(६) ए.-कर। (७) ए. कृ. को.-राइ। (८) मो.-सिरदस, सिरद्दसु।
(९) ए. कृ. को.-उपमा सु, उपमा सुइ।

भुजंगी ॥ परे षान चौसट्ठि गोरी नरिंदं । परे सुभर तेरह कहै नाम चंदं ॥
परे लुथ्थिलुथ्थी जु सेना अलुझ्झै । लिषे कंक अंकं बिना कौन बुझ्झै॥
छं० ॥ ११९ ॥
पन्यौ गोर जैतं मधिं सेस ढारी । जिनं राषियं रेह अजमेर सारी ॥
पन्यौ कनक आहुट्ठ गोविंद बंधं । जिने मेछकी पारसं सब्ब षद्धं ॥
छं० ॥ १२० ॥
पन्यौ प्रथ्थ बीरं रघूबंस राई । जिनें संधि षंधार गोरी गिराई ॥
पन्यौ जैत बंधं सु पावार भानं । जिनें भंजियं मीर बानेति बानं ॥
छं० ॥ १२१ ॥
पन्यौ जोध संग्राम सो हंक मोरी । जिनें कट्टियं वैर गोदंत गोरी ॥
पन्यौ दाहिमो देव नरसिंघ अंसी । जिनें साहि गोरी मिल्यौ षान गंसी॥
छं० ॥ १२२ ॥
पन्यौ बीर बानेत नादंत नादं । जिने साहि गोरी [1]गिल्यौ साहि जादं॥
पन्यौ जावलौ जाल्हते सैन भषं । हए सार मुष्षं [2]निकस्संत नषं ॥
छं० ॥ १२३ ॥
पन्यौ पाल्हनं बंध माल्हन राजी । जिनें अग्ग गोरी क्रमं सत्त भाजी ॥
पन्यौ बीर चहुआन सारंग सोरं । बजे दोइ ग्रैहं ज आकास तोरं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
पन्यौ राव भट्टी बरं पंच पंचं । जिनें मुक्ति के पंथ चल्लाइ संचं ॥
पन्यौ भान पुंडीर ते सोम कामं । [3]झिलं जुझ्झयं बज्झयौ पंच जंमं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
पन्यौ राउ परसंग लहु बंध भाई । तिनं मुक्ति अंसं छिनं मंझि पाई ॥
पन्यौ साहि गोरी भिरै चाहुआनं । कुसादे कुसादे चवै मुष्ष षानं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

दूसरे दिन तत्तार खां का शहाबुद्दीन को विकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ बढ़ना।

(१) ए.-मिल्यौ । (२) मो.-तिसक्कंत । (१) ए.-जिने जुझ्झतें बज्जयो पंच जंमं ।

कवित्त ॥ दस हथ्थी सु बिहान । साहि गोरी मुष किन्नौं ॥
कर अक्कास बादी । ततार चवकोद स दिन्नौं ॥
नारि गोरि जंबूर । कुहक बर बान अघातं ॥
गज्जि भग्ग प्रथिराज । चित्त करयो अकुलातं ॥
सो मोह कोह बर बज्जि कैं । भ्रज उन धारय धमसि कैं ॥
सामंत सूर बर बीर बर । उठे बीर बर हमसि कैं ॥ छं० ॥ १२७ ॥
अद्ध अद्ध जोजनह । मीर उड़ि संगा केरी ॥
तब गोरी सुरतान । रोस सामंतह घेरी ॥
चक्क अवन चौंडोल । अग्ग [1]सेषन पंचासौ ॥
सूर कोट ह्वै जोट । सार मारनह हुलासौ ॥
बर अगनि बगी [2]हल्लौ नहीं । पद्दर कोट सुजोट हुअ ॥
बर बीर रास समरह परिय । सार [3]धार बर कोट [4]हुअ । छं० ॥ १२८ ॥
रसावला ॥ मेलि साहं भरं, षग्ग षोले रुरं । हिंदु मेछं जुरं, मंत जा जंभरं ॥
छं० ॥ १२९ ॥
दंत कड्ढे करं, उप्पमा उप्परं । केद भीलं जुरं, कोपि कड्ढे करं ॥
छं० ॥ १३० ॥
कंध ननं धरं, पंष जष्षं फिरं । तीर नंषे करं, मेघ बुट्ठं बरं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
आवधं संभ्भरं, बंक तेगं करं । चंद बीजं बरं, अद्ध अद्धं धरं ॥
छं० ॥ १३२ ॥
बीय बंधं धरं, कित्ति जपै सरं । अस्सु ढुंढै फिरं, रंभ बंछै बरं ॥
छं० ॥ १३३ ॥
थान थांनं नरं, धारधारं तुटं । भ्रंम वासं छुटं, ... ॥
छं० ॥ १३४ ॥
साह गोरी बरं, षग्ग षोले करं । .... ॥ छं० ॥ १३५ ॥

खुरासान खां का सुलतान के बचन पर तैश में आकर घोर युद्ध मचाना ।

(१) ए.-नेषन । (२) मो.-हसौ, हस्यौ । (३) ए.कृ को.-धरि ।
(४) ए.-तुत्र ।

कवित्त ॥ षाँ षुरसान ततार। षिभ्भि दुज्जन दल भष्षै ॥
बचन स्वामि उर षटकि। हटकि तसबी कर नंषै ॥
कजल पंति गज बिथुरि। मध्य सैनं चहुआनी ॥
अजै मानि जै रारि। बियस तेरह चषि प्रानी ॥
धामंत फिरस्तन कढ़ि असी। दहति पिंड सामंत भजि ॥
बर बीर भीर बाहन [1]कहर। परे धाइ चतुरंग सजि ॥छं० ॥१३६॥

रघुवंसी के घोर युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ पऱ्यौ रघ्घुबंसी अरी सेन जाड़ी। हुतौ बाल बेसं संषं लज्ज डाड़ी ॥
बिना लज्ज पष्षै सची ढुंढि पिष्षौ। मनों डिंभरू जानि कै मीन कष्षौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

पऱ्यौ रूक रिनवट्ट अरि सेन माही। मनो एक तेगं झरी नीर दाही ॥
फिरैं अट्टबट्टे उपम्मान बट्टे। बिस्वंकम्म बंसी कि दारुन्न गट्टे ॥
छं० ॥ १३८ ॥

परे हिंदु मेच्छं [2]उलथ्थी पलथ्थी। करैं रंभ भैरं ततथ्थे ततथ्थी ॥
गहे अंत गिद्धं बरं जे करालो। मनों [3]नाल कट्टैं कि सोभै म्नालो ॥
छं० ॥ १३९ ॥

तुटे एकटं गाढ़ि कै षग्ग धायौ। मनौं बिक्रमं राइ गोबिंद पायौ ॥
गहै हिंदु हथ्थं मलेच्छं भ्रमायौ। जनौं भीम हथ्थीन उप्पम्म पायौ ॥
छं० ॥ १४० ॥

ननं मानवं जुद्ध दानव्व ऐसौ। ननं इंद तारक्क भारथ्थ कैसौ ॥
झकं बज्जि झंकारयं झंपि उट्ठै। बरं लोह पंचं बधं पंच छुट्टै ॥
छं० ॥ १४१ ॥

मनों सिंघ उझ्झै अरुझ्झंत छुट्टै। रनं देव सांई सए आव षुट्टै ॥
घनं घोर ढुंढं उतक्कंठ फेरी। लगै झग्गरैं हंस हज्जार एरी॥छं०॥१४२॥
तुटै रुंड मुंडं बरं जो करेरी। बरद्दाइ रिझ्झैं दुहूं दिन्न भेरी ॥छं०॥१४३॥

(१) ए.-करह। (२) मो.-उलथ्थी। (३) ए. को.-माल।

लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तू उदास क्यों है ? उसने उत्तर दिया कि आज किसी को वरन करने का अवसर नहीं मिला।

कवित्त॥ पच्छै भौ संग्राम। अग्ग अप्छर विचारिय॥
पुछै रंभ मेनिका। अज्ज चित्तं किम भारिय॥
तब उत्तर दिय फेरि। अज्ज पहुनाई आइय॥
रथ्थ बैठि औथांन। सोइतह कंत न पाइय॥
भर सुभर परे भारथ्थ भिरि। ठाम ठाम चुप जीत सथ॥
उथकीय पंथ हक्कै चल्यौ। सुथिर सभौ देषीय तथ॥छं०॥ १४४॥

रम्भा ने कहा कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये सूर्य में जा समाए।

कुंडलिया॥ कहैं रंभ सुनि मेंनकनि। ए रहु जिन मत जुथ्थ॥
अरिय अनंमति जानि करि। जुति आवें ग्रह रथ्थ॥
जुति आवें ग्रह रथ्थ। ब्रह्म शिव लोकह छंडी॥
विश्न लोक ग्रह कार ।भान तन सों तन मंडी॥
रोमंचि तिलकं वसि वरी। इंद्र बधू पूजन जही॥
ओपम्म जोग नन हुअ बहुरि। अब तारन बरहै कही॥छं०॥१४५॥

हुसैन खां घोड़े से गिर पड़ा, उजबक खां खेत रहा, मारूफ खां, तातार खां सब पस्त हो गए, तब दूसरे दिन सबेरे सुलतान स्वयं तलवार निकाल कर लड़ने लगा।

कवित्त॥ षां हुसेन ढरि पर्यौ। अस्व फुनि पर्यौ सार बहि॥
झुझ्झ फेरि सति सीव। षान उजबक्क षेत रहि॥
षां ततार मारूफ। षान षाना घट घुम्मैं॥
तब गोरी सु बिहान। आइ दुज्जन मुष झुम्मैं॥

(१) ए.कृ.को.-नथ।

कर तेग झल्लि [1]मुट्ठिय सुबर। नहि सुलतानह पन करी ॥
अदि हार दीह पलटे सुबर। तबहि साहि फिरि पुक्करी ॥छं०॥१४६॥

सुलतान ने एक बान से रघुवंस गुसाईं को मारा दूसरे से भीम भट्टी को तीसरा बान हाथ का हाथ ही में रहा कि पृथ्वीराज नें उसे कमान डालकर पकड़ लिया।

तब साहिब गोरी नरिंद। सतबान समाहिय ॥
पहिल बान बर बीर। हने रघुबंस गुसाँइय ॥
दूजै बानत कंठ। भीम भट्टी बर भंजिय ॥
चाहुआन तिय बान। षान अद्ध धरि रज्जिय ॥
चहुआन कमान सु संधि करि। तीय बान हथ हथ रहिय ॥
तब लग्गि चंपि प्रथिराज नें। गोरी वै गुज्जर गहिय ॥छं० ॥१४७॥

सुलतान को पकड़ कर और हुसैन खां तातार खां आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए। चारों ओर जैजैकार हो गया।

गहि गोरी सुरतान। षान हुस्सैन उपाऱ्यौ ॥
षां ततार निसुरत्ति। साहि झारी करि डाऱ्यौ ॥
चामर छत्र रषत्त। बषत लुट्टे सुलतानी ॥
जै जै जै चहुआन। बज्जी रन जुग जुग बानी ॥
गज बंधि बंधि सुरतान कों। गय ढिल्ली ढिल्लीन्द्रपति ॥
नर नाग देव अस्तुति करैं। दिपति दीप दिव लोकपति ॥
छं० ॥ १४८॥

एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया।

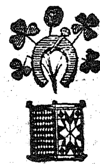
दूहा ॥ समै एक बत्ती न्रपति। बर छंड्यौ सुरतान ॥
तपै राज चहुआन यौ। ज्यों ग्रीषम मध्यान ॥ छं० ॥ १४९॥

(१) मो.-पुट्ठिय।

एक महीना तीन दिन क़ैद रखकर नौ हज़ार घोड़े और
बहुत से माणिक्य मोती आदि लेकर
सुलतान को गज़नी भेज दिया।

मास एक दिन तीन। साह संकट में रुंद्धौ ॥
करिय अरज उमराउ। दंड हय मंगिय सुद्धौ ॥
हय अमोल नव सहस। सत्त सै दिन ऐराकी ॥
उज्जल दंतिय अट्ठ। बीस मुर ढाल सु जक्की ॥
नग मोतिय मानिक नवल। करि सलाह संमेल करि ॥
परि राइ राज मनुहार करि। गज्जन वै पठयौ सुघरि ॥छं०॥१५०॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके रेवातट
पातिसाह ग्रहनं नांम सप्तवीसमो प्रस्ताव
संपूरणम् ॥ २७ ॥



अथ अनंगपाल समयौ लिख्यते ।

(अट्ठाइसवां समय ।)

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परंतु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया, इस कथा का वर्णन ।

दूहा ॥ दिय दिल्ली चहुआन कौं । तूंअर बद्री जाइ ॥
कहौ दंद क्यौं युक्करिय । फिरि दिल्ली पुर आइ ॥ छं० ॥ १ ॥

अनंगपाल के बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली का निर्द्वन्द शासन करना ।

रष्षि बीर प्रथिराज कौं । गै तीरथ्थह राज ॥
व्यास बचन आनंद सजि । तिहँ पुर बज्जन बाज ॥ छं० ॥ २ ॥
जुग्गिनिपुर प्रथिराज लिय । वज्जि त्रिघोष सुदंद ॥
अनंगपाल तूंअर बरन । किय तीरथ्थ अनंद ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह समाचार देश देशान्तर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निर्द्वन्द राज्य करता हुआ स्वजनों को मान देता है और उपकार को न मान कर अनङ्गपाल की प्रजा को बड़ा दुःख देता है ।

पद्धरी ॥ तूंअर नरिंद तप तेज जानि । प्रथिराज व्यास बचनह प्रमानि ॥
त्रिमान ग्यान मेटै न कोइ । इंद्रादि अंत कलपंत होइ ॥ छं० ॥४॥
दस दिसा अमिट धरती अकास । [1]चंद्रादि सूर ग्रह ग्रह प्रकास ॥
ब्रह्मा टरंत टारंत काल । रहंत पंच भूते विचाल ॥ छं० ॥ ५ ॥
विष्यात बात दस दिसि कहंत । विथ्थुरी देस देसन तुरंत ॥
अप अप्प आनि दीजै निवास । तूंअर नरिंद परजा निकास ॥ छं० ॥६॥

(१) ए.कृ.को.-चंद्रमा सूर दिन दिन प्रकास ।

निरदै नरिंद इन विधि विसास। आनंग लोक हिरदै निरास॥
उपगार को न मानै विवेक। संसार माहिं ऐसे अनेक॥ छं० ॥ ७॥

अग्नि, पाहुना, विप्र, तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनङ्गपाल पराए की भांति तप करता है।

कवित्त॥ तसकर चेलक विप्प। बैद [1]दुरजन अति लोभी॥
प्राहुन अहि जल ज्वाल। काल न्त्रिप इन में मोभी॥
इन परचिंता नाहिँ। बहुत करि जौपै कहिये॥
[2]अप्प सहज चालंत। चित्त की बात न लहिये॥
प्रथिराज लोक तूंअर घरह। अरुचि दिष्ट मंडै तनह॥
भोगवै धरा जीवत धनिय। संक न कोइ मानै मनह॥ छं० ॥ ८॥

सोमेश्वर अजमेर में राज्य करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली यह सुनकर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा।

दूहा॥ संभरि वै सोमेस न्रप। अति उतंग आचार॥
ढिल्ली प्रथि तूंअर दइय। सुन्यौ षिज्यौ महिपार॥ छं० ॥ ९॥

मालवापति ने चारों ओर के राजाओं को पत्र लिख कर बुलाया। गक्खर, गुण्ड, भदौड़ और सोरपुर के राजा आए। सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय।

कवित्त॥ चंदेरी चतुरंग। सैन हय गय पल्लानं॥
ठौर ठौर कग्गदह। दए मालव धरवानं॥
गषड़ गुंड भदौड़। सोरपुर सूर समाहे॥

(१) ए.-को. जुरजन।
(२) ए.कृ.को.-आप।

मिलि आए महिपाल। अप्प बल सेन उमाहे॥
एकंत मत्त सोमेस पर। धुर संभरि वै लिज्जिये॥
प्रथिराज तुँअर ढिल्ली दिसा। फिरि कलहंतर किज्जिये॥
छं०॥ १०॥

मालवपति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चंबल नदी पार होना।

बर मालव महिपाल। चढ्यौ चहुआन [1]सु उप्पर॥
सेन सजी चतुरंग। दियौ मेलानह सो पुर॥
हय गय थट्ट अघट्ट। घाट चंबिल परि आइय॥
घुरि निसान घमसान। थान थानह हल्लाइय॥
जादव नरिंद हरिबंस कुल। अति आतुर अजमेर पर॥
उत्तऱ्यौ सरित [2]संमित सकल। धुंस धरा रावत्त धर॥ छं०॥ ११॥

शत्रुओं के आने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामंतों को इकट्ठा करके बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर शत्रु चढ़े हैं, ऐसा न हो कि कायरता का धब्बा लगै और नाम हँसा जाय।

सुनि सोमेसर सूर। चिंति मन मंत उपाइय॥
बर प्रथिराज नरिंद। अनँगपालह बुल्लाइय॥
रज रजवट रषियै। राव रावत्तन कीजै॥
रहै गल्ह संसार। आव जल अंजुल छीजै॥
मो बंस अंस आनल अटल। कोइ न कहो काइर कहिय॥
अप्पान सुभ्भ संबोधि न्रप। जुद्ध घात [3]पुव्वत लइय॥छं०॥१२॥

सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के समय छल करके जीतना चाहिए।

(१) ए. कृ. को.-जु। (२) ए.-समंत। (३) ए. कृ. को.-पुस्तक।

सिंघ पँवार अ्रसिंघ। गौड़ संजम चहुआनं॥
बाहन बीर सधीर। राज गुर राम सुजानं॥
मंत मंति भर अवर। करे समचित्त अनेकं॥
तुम लज्जा धर धीर। बीर बीराधि [1]विवेकं॥
संभरिय सोम पुच्छत बयन। कहिय बत्त सम तत्तकल॥
छल बल अनेक छचिय करन। तुच्छ सत्थ पुज्जै न [2]षल॥छं०॥१३॥
दूहा॥ चंद चंद निसि दंद मति। [3]रुतु सरद गुरवार॥
तेरसि तकि सज्यौ सयन। रचि [4]रति वाह विचार॥ छं०॥१४॥

सोमेश्वर ने कहा कि तुम ने नीति ठीक कहा पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी।

कवित्त॥ रत्ति वाह छल जुद्ध। अधम [5]षिची परिमानं॥
[6]कूड़ कपट मारियै। अधम निद्रा गति जानं॥
मल मोचन रति रवन। सेन पूजन जल न्हानं॥
मंच जाप जप्पंत। करै नह घात सुजानं॥
तुम मंत तंत संचौ कहिय। इह अध्रम्म ध्रम हारिये॥
जो गिनइ पुरुष निंदा अपर। लछ रति वाह विचारिये॥
छं०॥१५॥

सामंतों ने कहा कि सेतु बांधने में श्रीराम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप के मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस के मारने में छल किया, इस में कोई दूषण नहीं है।

छल तक्यौ श्री राम। सेत साइर तब बंध्यौ॥
छल तक्यौ सुग्रीव। बालि जिउ ताड़ह संध्यौ॥
छल तक्यौ लछिमना। सूर मंडल अरि बेध्यौ॥
छल तक्यौ नरसिंघ। अग्गकुस नष उर छेद्यौ॥

(१) ए.कृ.को.-बिमेकं। (२) ए.कृ.को.-पल। (३) ए.कृ.को.-रित, रति। (४) मो.-रवि। (५) ए.कृ.को.-छत्रि। (६) ए.कृ.को.-कूड कूड़।

छल बल्ल करंत दूषन न कोइ। किस्न कलह कंसह करिय ॥
सोमेस राज तकि अप्प बिधि। रत्तिवाह छल मन धरिय
छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ ससि न्त्रिम्मल ससि सूर अप। दिय अस अस्त्र उतान ॥
प्रथुक जोग जिन साल [1]धर। संजोजन सव्वान ॥ छं० ॥ १७ ॥

सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तयारी करना।

भुजंगी ॥ ग्रहे सूर सोमेस सा आयुधेसं। इकं सोभई राज जोगिंद भेसं ॥
तजे मोह माया ग्रहन्नी कहन्नी। तजे बंध पुत्तं हरिं चित्त मन्नी ॥
॥ छं० ॥ १८ ॥

इकं सामि धम्मं ग्रहे अंग लाजं। * तिनं सस्त्र झल्ले जुधं कित्ति काजं ॥
न काया न कामं धरे रामराजं। हवैं हाक सूरां कपै काइराजं ॥
छं० ॥ १९ ॥

पचं विसनुकान्ता जलं जान्हबीयं। वपुं उद्धरे कोटि सौ पाप कीयं ॥
बरै रंभ वामं दुती साम कामं। मनों दाहिनाहत्त षीरंभ रामं ॥
छं० ॥ २० ॥

तिनं सस्त्र हल्लै जुधं क्रित्य काजं। हुवै हाक सूरं कपैं काइराजं ॥
मुरं द्वादसं आयुधं दंड धारै। तिनं नाम चंदं मु छंदं उच्चारै ॥
छं० ॥ २१ ॥

नसी तन्न चंसं ग्रहे सूल पासं। परस्सं असन्नी सकत्ती बिकासं ॥
ग्रहे तून तोमार भल्ली कपानं। जुधं काज नालीक नाराज जानं ॥
छं० ॥ २२ ॥

सरं चक्र सारंग वज्रं गदायं। दंड मुद्गरं भिंडिमालं सघायं ॥
हलं मूसलं सेल सावल्ल षग्गं। ग्रहे सूरता अप्प अपपन्न बग्गं ॥
छं० ॥ २३ ॥

छुरिका कती कन्न बक्री कुंतायं। [2]फलकं कनीका भुसुंडी बतायं ॥
लियं संक [3]दुस्फोटकं पारिघायं। पटीसं छतीसं ग्रहे आयुधायं ॥
छं० ॥ २४ ॥

---

(१) मो. जर।　　* यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।
(२) ए. कृ. को.-पलक्कं।　　(३) मो.-दुस्पोटं।

पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला। अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था।

दूहा ॥ पट्टन जादव आय नृप। किय डेरा बरबान ॥
सुनि सोमेसर दौरि करि। ज्यों निधि रंक प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
अति आतुर अजमेर पहु। आइ कुलिंगन बाज ॥
यों रस रत्ता सूर भर। मुकति त्रिया धरि साज ॥ छं० ॥ २६ ॥

चारों ओर खलबली मच गई। रुद्रगण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे।

कवित्त ॥ अप्प अप्प मुष अरिन। सूर संमुह झल्लारिय ॥
हाइ हाइ उच्चार। धरनि अंबर तुटि डारिय ॥
चमकि चित्त त्रिपुरारि। अष्ट गन नारद नंचिय ॥
सेस सटप्पटि सलकि। दिसा दंतिन तन अंचिय ॥
मानौं कि जलद तुट्टिय तड़ित। बर पट्टन आहुट्ट भर ॥
रति वाह मात हूं ते दियौ। अगनि सार बुब्यो कहर ॥ छं० ॥२७॥

योद्धाओं की तयारी तथा उनके उत्साह का वर्णन।

रसावला॥ कढ्ढि षग्गं लगं, आइ जुट्टे अगं। जानि सूरं उगं, लग्गि षग्गं बगं॥
छं० ॥ २८ ॥
जानि प्रल्लै जगं, सामि ध्रम्मं मगं। षंड षंडं अगं, स्रोन [1]तुट्टे रगं॥
छं० ॥ २९ ॥
पानि वाहै षगं, सूर साधैं सगं। देवि [2]ताली ठगं, ठाम ठामं ठगं ॥
छं० ॥ ३० ॥
डंक्कनीयं डगं, एक एकं दिगं। सूर रोपे पगं, नग्ग मानौं नगं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
सार धारं तमं, जानि ऊकं अगं। बसं जालंदगं, फुट्टि [3]षोपं षगं॥
छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. कृ.-बुद्दे। (२) ए. कृ. को.-लागी।
(३) मो.-षोपे।

दृढ़ि मट्टं भगं, हंस उड्डै मगं। मार मारं रगं, मुष्ष बोले दगं॥
छं० ॥ ३३ ॥

लट्ट चट्टं परं, लथ्थ वथ्थं भरं। अंत ओनं भरं, जानि पब्बै सरं॥
छं० ॥ ३४ ॥

कट्टि षंडं गुरं, हथ्थ जंगं जुरं। जानि षित्ति षलं, चंच गिद्धी पलं॥
छं० ॥ ३५ ॥

ईस सीसं भलं, माल मध्ये [1]घल्लं। सूर जद्दौं बलं, अब्भ तुथ्यौ कलं॥
छं० ॥ ३६ ॥

भूर भूपं मिलं, आयुधं अत्तुलं। .... ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ सार मार मची कहर। दोउ दलनि सिर मंधि॥
प्रौढ़ा नायक छयल रमि। प्रात न बंछै संधि॥ छं० ॥ ३८ ॥

सोमेश्वर ने पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ सोमेश्वर भजि सूर। सूर उभ्भारिग भरि भरि॥
सार फुट्टि चहुआन। भिरिय जद्दौं भरि लरि लरि॥
घरी एक तिन रत्त। सार मैगल सिर बुट्टिय॥
संभर वैर सु आनि। सार भग्गि जु सिर तुट्टिय॥
भग्गइय सूरमा दुहुं सयन। किहि न कोई बर चंपयौ॥
उप्पारि लियौ अजमेर पहु। दागन [2]किहुं दीयौ गयौ॥ छं० ॥ ३९ ॥

हथ्थिय ढाल ढलकि। घालि लीनौ अजमेरी॥
परि लंगा लंगरी। सेन दुज्जन दल फेरी॥
भाग वीर प्रथिराज। अरिन उप्पारि स लीनौ॥
इन सोमेसर राव। सत्त हथ्थिन बर कीनौ॥
जिम तिमर सूर भंजै सुभर। गुरु गल्हान न कवि टरै॥
जब लगै भूमि साइर [3]सुम्रित। तव लगि कवित सु [4] उब्बरै॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए.-घलं, वलं। (२) मो.-किन। (३) मो.-सुप्रति। (४) मो.-विस्तरै।

संसार में एक मात्र कविकथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है।

दूहा ॥ रह्यौ न को रवि मंडलह । रहि कबि मुष्ष सु भल्ह ॥
जीरन जुग पाषान ज्यों । पूर रहंदी गल्ह ॥ छं० ॥ ४१ ॥

यादव राज ऐसा घायल होकर गिरा कि मुंह से बोल न सकता था।

फिरि जद्दव भर देस दिसि । समर घाइ लै सैन ॥
अवर चित्त तें अवर परि । कढ्ढि न सक्कै बैन ॥ छं० ॥ ४२ ॥

सोमेश्वर उसे घर उठा लाया बड़ा यत्न किया। एक महीना बीस दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया। सोमेश्वर ने बहुत दान दिया।

ग्रिह सोमेसर आनि तिन । मास एक दिन बीस ॥
रष्षि जतन किय न्हान जब । दियौ दान सु जगीस ॥ छं० ॥ ४३ ॥

पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना। उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊंगा शत्रुओं को मजा चखाऊंगा।

सुनिय (१)बत्त प्रथिराज न्रप । चिंति भविष्षत बत्त ॥
अरियन तौ आहोड़ियै । जो लब्भीजै घत्त ॥ छं० ॥ ४४ ॥

इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनङ्गपाल के पास जाकर पुकारा कि महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए।

कवित्त ॥ अनँगपाल प्रज लोक । जाइ बद्री (२)पुकारिय ॥
हम तुम सेवक सामि । छंडि ग्रह राज निकारिय ॥
नहि अदब्ब मन्नयौ । क्रूर मच्यौ चहुआनं ॥

(१) मो.-षबर। (२) मो.-पुकारय, निकारय।

हो अनगेस नरेस। गई ढिल्ली धर जानं॥
जा जियत राज धर पर बसिय। मीति न्याय न प्रकासियै॥
नर नाग देव निंदैं सकल। न्रिप करंत तहँ बासियै॥ छं०॥ ४५॥

अनङ्गपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा। मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए।

सुनिय तेज जाजुल्य। दूत परधान पठाइय॥
हम भँडार धर धान। द्रब्ब सब्बह भार लाइय॥
व्यास बचन संभारि। कहै तब मंची पुच्छह॥
देस क्रषी धन आदि। राज ग्रहयो गढ़ सब्बह॥
न्रिप सेव देव दुज्जन उरग। इन ढिल्लै नन मुक्कियै॥
बर बंध पुच अरु तात न्रप। इन बिसास धर चुक्कियै॥ छं०॥ ४६॥

राज्य प्राप्त करने के लिये गत ऐतहासिक घटनाओं का वर्णन।

धर काजैं कौरवन। पंड जानिय न [1]बंध गति॥
धर काजैं [2]दसग्रीव। बंध बंध्यौ भभिषन मति॥
धर काजैं नल राइ। बंधवन षेत न अप्पौ॥
धर काजैं बलि राइ। देव देवाधि उथप्पौ॥
धर काज मुंज चिय के कहै। भोज प्रहारन मत कियौ॥
धर काज कन्ह तूंअर अधम। पुत्तह सैं मुष [3]बिष दियौ॥ छं०॥ ४७॥

तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिले किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वीराज को राज्य दिया।

दूहा॥ तुम तूंअर मति चूकना। करि किल्ली ढिल्लीय॥
फुनि मत अप्पन ही करिय। प्रथीराज धर दीय॥ छं०॥ ४८॥

राजा हाथी घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परंतु राज्य की सर्प मणि के समान रक्षा करे।

(१) मो.-वेध। (२) मो.-दशशीश। (३) मो.-बसि।

राज दाम गज तुरिय [1]द्रब। देत न लग्गे बार ॥
धरतिय रष्षन यौ सुदृढ़। अहि मनि रष्षन हार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला।

मंचि सु मंतह सीष लै। चलि दिल्लिय चहुआन ॥
आइस क्रौं जोइस का हा। [2]इह अत अम्म प्रमान ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज से मिलकर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो।

चंद्रायना ॥ मिल्यो न्रिपह सोमंत बसीठ जु मुक्कल्यौ ॥
सा चहुआनह पास नरिंद सु इक्कल्यौ ॥
षिज्यो अनंग नरिंद भूमि हमहीं तजौ ॥
कै मिलौ आइ चहुआन सुबुद्धिय मंत जौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना।

बोल्यो हंकि नरिंद बसीठ जु दुब्बर्यौ।
तब कमधज्ज नरिंद न उत्तर संभर्यौ ॥
बात अनंकन कीन हीन हुइ उट्ठयौ।
चंपि लुहट्टिय हथ्थ बीर बर टुट्टयौ ॥ छं० ॥ ५२ ॥

बसीठ का कहना कि जिस का राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं।

दूहा ॥ उट्ठौ बीर बसीठ बल। करि जुहार चहुआन ॥
धनी उभै धर लुट्टियै। इह अचिज्ज परिमान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं।

---

(१) मो.-बर। (२) मो.-भूत्त ध्रम्म सुप्रमान।

कवित्त ॥ रे बसीठ मति [1]ढीठ। बोल बोलै मतिहीना ॥
सनेपात उप्पनं। किनें सक्कर [2]पय दीना ॥
[3]धर कर छुट्टी संगि। हथ्थ चढ़ें मरदाना ॥
फिरि बंछै जो मूढ़। होइ ताही जिय ज्याना ॥
सट्ठीय बुद्धि नट्ठिय न्त्रपति। तुम [4]बिमत्ति दिन लहि कहिय ॥
उग्गमैं सूर पच्छिम [5]आरक। तौ दिल्ली धर तुम नहिय ॥छं०॥५४॥

मंत्री का यह सुनकर उदास मन हो चला आना।

दूहा ॥ सुनि यह बत्त सो दूत चलि। बिन आदर मन मंद ॥
हीन दीन दिष्षत इसौ। मनों कि [6]वासर चंद ॥ छं० ॥ ५५ ॥

मंत्री ने अनङ्गपाल से आकर कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान कभी राज्य न लौटावैगा। पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए।

कवित्त ॥ [7]तूंअर बीर बसीठ। सामि संदेस सु अष्षिय ॥
तुम हृद्धत्तन कुसल। वत्त पहिलैं हम भष्षिय ॥
वह बलिष्ट दैवान। दैत्यबंसी चहुआनं ॥
सूज अग्र उप्परै। देय नह तास प्रमानं ॥
तुम दई भूमि निज हथ्थ करि। अथ्थ मित्त नन षोइये ॥
संभरहि देस देसन न्त्रपति। तौ हृद्धत्त बिगोइये ॥ छं० ॥ ५६ ॥

अनङ्गपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया। पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कैमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए।

(१) दीठ, ढीठ, धठि। (२) ए.-पर। (३) मो.-धर कर संगिय बुद्धि।
(४) ए. कृ. को.-विपति। (५) ए. कृ. को. परक।
(६) ए. कृ. को.-वासुर। (७) मो.-तोअर।

अनगपाल न न मानि। कूंच किन्नौ दिल्लीय दिसि ॥
भूत [1]भविष आनी न। किये रत्तेत नयन [2]रिस ॥
अप्प सेन सजि जूह। आइ ढिल्ली धरवानं ॥
मात पिता मरजाद। चिंत लग्गो चहुआनं ॥
कैमास मंत पुच्छ्यौ नृपति। कहौ कहा अब किज्जिये ॥
अहि ग्रहिय छछुंदरि जो तजै। नैन जठर भषि छज्जिये ॥छं०॥५७॥

जो लड़ाई करता हूं तो अपनी मा के पिता (नाना) से लडता हूं और जो छोड देता हूं तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो।

दूहा ॥ जो मारौं तौ मातपित। छंडौ तौ बल हानि ॥
कहि मंची मंचं गपति। न्याय रीति विधि जानि ॥ छं० ॥ ५८ ॥

कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए, इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानैं यहीं आकर भिड़ें तो फिर लड़ना चाहिए।

कवित्त ॥ सुनौ नृपति चहुआन। न्याय तौ कलह न किज्जे ॥
इन दीनी धर अप्प। अप्प तौ इनह न दिज्जे ॥
जो न्रिमान प्रमान। होइहै सोइ नियानं ॥
जब लग्गौ गढ़ आइ। जाइ तब जुद्ध जुरानं ॥
सजि कोट ओट सामंत सथ। नारि गोर जंबूर वहि ॥
लग्गै न जोर छिज्जै सुभर। इत सामंत लगंत नहि ॥ छं० ॥ ५९॥

अनंगपाल ने धूमधाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लडाई हुई अन्त में अनंगपाल की हार हुई।

(१) ए. कृ. को.-भवष। (२) मो.-रस।

अनंगपाल बल मंडि। सुभर ढिल्ली गढ़ लग्गा ॥
लेहु लेहु करि दौरि। अप्प बर अप्प बिलग्गा ॥
नारि गोरि आतस्स। कोट पारस भर घाइय ॥
जे भर मंहे आइ। सोर करि मोर उठाइय ॥
लग्गै न घात तूंअर न्रपति। दिवस च्यार मंडिय ररिय ॥
पुज्यौ न प्रान पानप घटत। दिल्ली धर ढिल्ली करिय ॥ छं० ॥ ६० ॥

हार कर अनंगपाल का फिर बद्रीनाथ लौट जाना।

चौपाई ॥ दीह च्यारि ढिल्ली न्रप भारी। बर चहुआन संमुहै हारी ॥
गोतं चर फिर रावर छंडिय। बद्री छोर सरन ग्रह मंडिय ॥छं०॥६१॥

आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड़ कर अनंगपाल लौट गया।

अनगपाल पंडिय गयौ। सैन सु बंधिय थट्ट ॥
अद्ध सैन अजमेर पर। [1]टारे हथ्थ सुभट्ट ॥ छं० ॥ ६२ ॥

मंत्री सुमन्त की सलाह से अनङ्गपाल ने माधो भाट को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा।

बीर बसीठ सुमंत मिलि। स्वामि बचन [2]समुझाइ ॥
मतौ मंडि चहुआन कौ। माधो भट्ट चलाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥

माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ चला।

माधो भट्ट सु मुक्कल्यौ। मिल्यौ जाइ सुलतान ॥
चढ्यौ साहि गोरी सुबर। मिलि बंधन चहुआन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
तूंअर अरु चहुआन कें। [3]घर बज्यौ बहु दंद ॥
माधौ भट्ट सु मुकल्यौ। बर गज्जनै नरिंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥

(१) मो.-टारिग। (२) मो.-मम काय। (३) कृ.-धर।

नीतिराव खत्री ने अनङ्गपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया।

नीति [1]राव षिची सुबर। तूंअर तिहि परधान॥
गोरी दिसि न्रप अप्प दिसि। भेद दियौ चहुआन॥ छं०॥ ६६॥
अनँगपाल मान्यो नहीं। बरजिय पंडि नरिंद॥
तूंअर अरु चहुआन कै। रहै न एकै बंध॥ छं०॥ ६७॥

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैलाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं?

कवित्त। दई भूमि मापित्त। लई हम हथ्थ पसारह॥
सो पाओ फिर किम सु। बोल बोलहु अविचारह॥
तुम बिरद्ध तप जोग। राज चाहौ सु करन अब॥
दयौ राज तुम हमह। कहा उपजी चित्तह तब॥
मंगौ जु आइ फिरि भूमि तम। सोब राज पाओ नहीं॥
जो गयौ जंत चलि ग्रेह जम। कहौ सु फिरि आवै कहीं॥छं०॥६८॥

जैसे बादल से बूंद गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए।

जलद बूंद परि धरनि। कबहुँ जाबै न [2]नभ्भ फिर॥
पवन तुट्टि तरु पच। तरु न लग्गै सु आइ थिर॥
तुटि तारक आकास। बहुरि आकास न जाअै॥
सिंघ उलंघि सवजह। सोइ फुनि हनि नह षाअै॥

(१) ए.-तत्त। (२) मो. को.-अम्भ।

अपिपत्र सु पहमि तुम उदक सह। सो पाओ दूजै जनम ॥
तप्पौ सु जाइ बद्री तपह। मत विचार राजस मनम ॥ छं० ॥ ६९ ॥

आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उसे तो हमने कई बार बाँध बाँध कर छोड़ दिया है।

तुम गोरी पतिसाह। कहैं जिन [1]मत भरमावहु ॥
सत्त ध्रंम साहस्स। काइ पर कहैं गमावहु ॥
सामंतनि सुलतान। बार बहु गहि गहि छंड्यौ ॥
उन अपत्ति के सथ्थ। सपति तुम मत्त सु मंड्यौ ॥
जिम लग्गि जन्ह विधवा चरन। अप समान होवन कहै ॥
मंगौ सु द्रव्य कारन स ध्रम। कछू अप्प चित्तह चहै ॥ छं० ॥ ७० ॥

हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। सँदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा।

अरिल्ल ॥ सुनि सु दूत आयौ हरद्वारह। कथ्थिय अनग सम सकल विचारह ॥
सुनत श्रवन अति रोस [2]भ्रुकित मनु। जिम सु सिंघ चुक्कत कुलिंग जनु ॥
छं० ॥ ७१ ॥

अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को ग़ज़नी की ओर भेजा। पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए हम और आप मिलकर दिल्ली को विजय करें।

कवित्त ॥ अनँगपाल भ्रुकि आप। दूत ढिंग हुंते साह जे ॥
तिनहि कह्यौ तुम जाइ। कहौ साहब लिषषौ ते ॥
दिय पत्र [3]तिन हथ्थ। धरा देत न चहुआनह ॥
तुम आवहु चढ़ि अतुर। कूंच पर कूंच मिलानह ॥
मिलि अप्प एक एकह सुमंति। लरि सु लेंहि दिल्लिय धरा ॥
तुम मत्त छंडि तप बद्रिबर। अब सु पाँइ रुप्पें षरा ॥ छं० ॥ ७२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मन। (२) ए. कृ. को.-झुकत। (३) ए. कृ. को.-फुनि।

दूत ने आकर अनंगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान सुनते ही चढ़ चला।

गए दूत गज्जनै। साहि सम बत्त बदै बर॥
तप सु छंडि तोंबरह। आइ हरद्वार लियन घर॥
पहुमि मंडि प्रथिराज। राज अप्पै न इक्क तिल॥
दैवादर चढ़ि साहि। भूमि लिज्जै सु उभय मिलि॥
सुनि साह घाव नीसान किय। चढ्यौ सेन चतुरंग सजि॥
हय गय समूह साकति सकल। अनंगपाल साहस्स कज॥छं०॥७३॥

सुलतान शाहबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सरदारों का वर्णन।

चढ़त साहि साहाब। चढ्यौ तत्तार खान बर॥
षान षान [1]षुरसान। षान मारुफ महा भर॥
कालिम षान कमाम। मीर [2]नासेर अभंगह॥
अलूषान आलील। चढ़िय हय गय चतुरंगह॥
सथ सयन सकल सारड्ड [3]लष। उभय सहस मत मत्त इभ॥
नीसान बज्जि नौबति निहसि। रहे गज्ज धर पुर सु नभ॥छं०॥७४॥

छंद लघुनाराच॥ चढ्यौ सहाव सज्जियं। निसान जोर बज्जियं॥
मिले [4]सु साह उम्मरं। सजै अनूप संभरं॥ छं०॥७५॥
गयंद मद्द गंधयं। सुझ्झै न राह अंधयं॥
पगं ठिलै पहारयं। नगं परं निहारयं॥ छं०॥७६॥
सकाज बाज साजयं। कुरंग देषि लाजयं॥
अनूप चाल उज्जवै। सहूर चित्त रिझ्झवै॥ छं०॥७७॥

(१) ए.-षुरसेंम। (२) ए. कृ. को.-नासेंन।
(३) ए.-लष, लष्षि। (४) ए. कृ. को.-जु।

रजोद मोद उष्षलौ। सपूर ह्वर पष्षलौ॥
रिधें सु साहि आतुरं। कँपें सु अंग कातरं॥ छं०॥ ७८॥

लगन्न छीन उल्लहं। षँड़े जु दूरि दुल्लहं॥
न आन पान जानयं। उड़ान ज्यौं सिँचानयं॥ छं०॥ ७९॥

करंत इल्लगारयं। सु आप सिंधु पारयं॥ छं०॥ ८०॥

सिन्धु पार उतरकर, बीस हज़ार सेना साथ देकर सुलतान ने तातार ख़ां को अनंगपाल को लाने के लिये हरिद्वार भेजा। तातार ख़ां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला।

कवित्त॥ सिंधु उतरि सुरतान। कह्यौ सम षान ततारह॥
तुम अनगेसह लैन। जाहु जँह तँह हरिद्वारह॥
सहस बीस लै सेन। अनँग सम मिलिय सोनपुर॥
बिलम करहु जिन बहुत। अभँग सजि आवहु आतुर॥
करि नवनि षान तत्तार चलि। पहुँच्यौ हरद्वारह सहर॥
करि षवरि तब्ब अति प्रीत तन। मिल्यौ राज अनगेस बर॥
छं०॥ ८१॥

अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिये और सेना भरती करके लड़ाई की तयारी की।

दूहा॥ तहँ तोंअर अनगेस न्रप। लए मोल बहु बाज॥
उभय सहस सेना सजित। रष्षि सुभर किय साज॥ छं०॥ ८२॥

तीन सौ वीर जो अनंगपाल के साथ वैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने के लिये तयार हुए।

सत्त तीन भर सुभर जे। निज वैराग सरूप॥
तिन बंधी तरवार फिरि। बदलि भेष बहु रूप॥ छं०॥ ८३॥

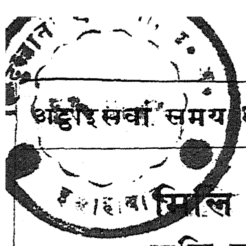
तातार खां ने रात भर रहकर सबेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर आगे से बढ़कर उसने सुलतान को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे।

कवित्त ॥ मिले षान तत्तार। बत्त मत तत्त रत्त बर ॥
दै निसान पहु फटत। चले पुर सोन उभै भर ॥
भए साह दल निकट। रषि जोजन जुग अंतर ॥
दई षबरि सुलतान। चढ्यौ साहाब समंतर ॥
दस कोस अग्ग अनगेस कहूं। मिल्यौ जाइ साहिब सुहित ॥
बैठे सु उतरि अति प्रीति पर। भनहु उभै जन इक्क चित ॥ छं० ॥ ८४ ॥

अनंगपाल ने सब वृत्तान्त सुनाया, दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप आकर हाजिर हो जाय तो उसे जीव दान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा कि ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करे अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता।

पद्धरी ॥ सुरतान समिलि न्टप अन्नगेस। किय अनग समह पतिसाह पेस ॥
गज पंच मत्त पंचास बाज। साकत्ति सज्जि दिय अनगराज ॥
छं० ॥ ८५ ॥
किरवान [1]तीन कम्मान एक। सिरपाव स्वातसुत माल मेक ॥
दै प्रीति चढ़े निस्सान पाव। आए सु सोनपुर उभै ठाव ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) ए.-तीन, संमान, सामान।



मिलि साह अनग बैठे सुमत्त। तत्तार षानषाना सुचित्त॥
कहि अनगपाल न्रप पुब्ब कथ्थ। चहुआन मन न मानै समथ्थ॥
छं० ॥ ८७ ॥

जंपै सु साह चढ़ि चलौ प्रात। भंजे सु जुग्गनिय पुरह जात॥
जो मिलिह अप्प चहुआन आनि। दीजै तौ उभय मिलि प्रान दान॥
छं० ॥ ८८ ॥

मंनी सु राज अनगेस मन्न। उच्चर्यौ तांम तत्तार षन्न॥
देषो सु अप्प दूतह पठाइय। लिष्यौ सुबत्त सम विषम दाई॥
छं० ॥ ८९ ॥

चर चारु चाहि हक्कारि लीन। लिषि तत्त पत्त तिन हथ्थ दीन॥
अनगेस पुचि सुत तुम्म अप्प। तुम समपि राज गय बद्रि तप्प॥
छं० ॥ ९० ॥

करि तप्प आइ फिरि अन्नगेस। दिज्जै सु इनहि हय गय सु देस॥
आनौ न चित्त चहुआन और। जग्गें सु सामि न विरस्स चौर॥
छं० ॥ ९१ ॥

भुगई न जाइ पर लेइ बस्त। समपौ सुराइ आनग समस्त॥
गे चार पहर चारै सु गोइ। कबहूं न धेन बर धनी होइ॥छं०॥९२॥
थनवार अस्व सौंपै सु राज। ना होइ ओय पति तास बाज॥
कारसनी क्रुषि रष्षी सुभाय। तिन भोग सुभर रावर [1]सुभाय॥
छं० ॥ ९३ ॥

अप्पौ सु देस अनगेस रस्स। जिन करौ अप्प मभ्भह विरस्स॥
भयें बिरस सुष्ष पावै न कोइ। हम देत सीष तुम हितू होइ॥
छं० ॥ ९४ ॥

भये वीरस सुष्ष कह भयौ पंड। कुल सकल नास भौ वप्पु षंड॥
अप्पौं न भूमि जो जीय सुद्ध। तो सजहु आनि इन समहि जुद्ध॥
छं० ॥ ९५ ॥

दिय पच दूत प्रथिराज जाइ। सुनि श्रवन अप्प बहु दुष्ष पाइ॥
अनगेस राज सुलतान जोर। ऐसे जु सजै कोटिक्क ओर॥छं०॥९६॥

(१) मो.-सुजाय।

पावै न तज दिल्ली सु थान। झुकि राव घाव कीनौ निसान ॥
छं० ॥ ९७ ॥

पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट लगा कर सब सरदारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला।

गाथा ॥ झुकि किय घाय निसानं। चढ़ि प्रथिराज बाज साजेयं ॥
सब सामंत समेतं। दिय डेरा सु दोइ जोजनयं ॥ छं० ॥ ९८ ॥

दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से कहा। जो सब सरदार विरक्त हो गए थे वे भी स्वामि के काम के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए।

दूहा ॥ देषि दूत गये साहि ढिग। कही षबरि प्रथिराज ॥
चढ्यौ सूर संभर धनी। हय गय दल बल साज ॥ छं० ॥ ९९ ॥
सामत सूर समस्त बर। भय संसार विरत्त ॥
स्वामि ध्रम्म साधन सु बर। मरन लरन मन रत्त ॥ छं० ॥ १०० ॥

सुलतान ने दूत से समाचार सुन कर चढ़ाई का हुक्म दिया।

अरिल्ल ॥ संभलि बत्त [1]चरं [2]सुलतानं। निहसे [3]बज्जि सु बीर निसानं ॥
भयौ हुकुम साहाब अमानह। सजहु अमीर उम्मरा षानह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा।

दूहा ॥ चर सु दिष्षि चहुआन कै। साह षबरि कहि राज ॥
सुनत राज प्रथिराज बर। चल्यौ जुद्ध कज साज ॥ छं० ॥ १०२ ॥

धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला, जब दोनों सेनाएं एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट दी।

(१) ए.-बरं। (२) कृ. ए.-सुरतानह, निसानह। (३) मो.-बज्जे।

चोटक ॥ सजि साज चल्यौ प्रथिराज बरं। सत सामत सूर सपूर भरं॥
विरदैत महाबर बीर बली। तिन सों किन जात न रार कली॥
छं० ॥ १०३॥
[1]परसें भिरि भारथ पारथ से। न वदें अप ऊपर आनन से॥
जुध कों तिनके मुष कोंन जुरे। न मुरें मुष धार अनी सुमुरे॥
छं० ॥ १०४॥
सजि साहन सेंन हजार दसं। रह सेर सवान सु बीर रसं॥
गज [2]सत्त दसं मुर मत्त गजै। तिन देषि बंध्याचल पब्ब लजै॥छं०॥१०५॥
घमके घन घुघ्घर घंट बनं। भननंकत भौरनि झौर भनं॥
गति देषि तुरंग कुरंग दुरें। तिन के उर अठ्ठन कोट परें॥छं०॥१०६॥
चहुआन चढ्यौ चतुरंग दलं। सजि भैरव भूत विताल बलं॥
चर चौसठ जुग्गिनि सथ्थ चलीं। किलकैं करि भारथ बैर रलीं॥
छं० ॥ १०७॥
चमकंत सनाह सु जोति इसी। सु करं मधि मूरति बिंब जिसी॥
सजि टोप रंगावलि [3]हथ्थ लयं। बनि राज सु [4]पष्षर सा [5]वलयं॥
छं० ॥ १०८॥
दोइ कोस रह्यौ विच साहि दलं। चहुआन निसान वजे सबलं॥
छं० ॥ १०९॥

पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया।

दूहा ॥ सजि आयौ चहुआन जुध। सुन्यौ श्रवन पतिसाहि॥
हुकम षान उमरान हुअ। सज्यौ अंग सन्नाह॥ छं० ॥ ११०॥

आगे तातार खां को रक्खा, मारूफ खां को बाईं ओर और खुरासान खां को दाहिनी ओर अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया।

(१) मो.-परसें। (२) ए. कृ. को.-सत्त मुरं मदमत गजै। (३) ए.-हाथ। (४) मो.-परकर। (५) मो.-बनयं।

गाथा ॥ मुष्ष सु रिष्षी ततारं । बांई दिसा षान मारूफं ॥
दाहिन षाँ षुरसानं । मद्धि अनगेस पुट्ठि साहाबं ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना की। आगे कैमास को और पीछे चावंडराय को कर दिया।

सजि ठट्ठौ सुलतानं । सुनि चहुआन अप्प व्यूहानं ॥
मुष कीनौ कैमासं । चावँडराइ पुच्छ सज्जायं ॥ छं० ॥ ११२ ॥

अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं, जीते ही पकड़ना चाहिए।

दूहा ॥ मद्धि फौज प्रथिराज रचि । कह्यौ सु कर करि उंच ॥
अनँग राज जीवत [1]गहौ । इह सु रचौ परपंच ॥ छं० ॥ ११३ ॥

दोनों दलों का सामना हुआ कैमास ने युद्धारम्भ किया।

जिन सु हनौ अनगेस जिय । गहौ सु जीयत [2]सास ॥
इतें दुदल दिठ्ठाल भय । लई बग्ग कैमास ॥ छं० ॥ ११४ ॥

दोनों दल का सामना होते ही घमसान युद्ध होने लगा।

बिह दल बल सिंधू बजैं । उपजत सूर उहास ॥
[3]ष्योहनि पर नष्षौ षयंग । करि कलकी कैमास ॥ छं० ॥ ११५ ॥

कैमास ने शस्त्र संभाल कर युद्धरम्भ किया। युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ लई षग्ग कैमास बीरं अमानं । धमंके धरा गोम गज्जे गुमानं ॥
उतें उप्परी बाग तत्तार षानं। मिले हिंदु मीरं दोऊ दीन मानं ॥
छं० ॥ ११६ ॥
[4]वजे राग सिंधू सु मारू अवग्गे । गजे सूर सूरं असूरं सु [5]भग्गे ॥
चढ़े व्योम विम्मान देषंत देवं। वढ़ै स्वामि कज्जै सु सज्जै उभेवं ॥
छं० ॥ ११७ ॥

(१) ए. कृ. को.-गहें गहे। (२) मो.-साह। (३) ए. कृ. को.-षोहनि। (४) ए. कृ. को.- वज्जे। (५) ए. कृ. को.-भज्जे।

छुटै नाल गोला हवाई उछंगं। [1]न षिचं मनों जानि [2]तुट्टे निहंगं॥
करष्षै चलै बान बानं कमानं। भई अंध धुंधं न [3]सुझ्झैति भानं॥
छं० ॥ ११८ ॥

मिले सेल भेलं समेलं अपारं। सनाहं फटें हीय होवत्त पारं॥
मदं मत्त दंतं उषारै मसंदं। मनों भिल्लिया पब्ब उष्पालि कंदं॥
छं० ॥ ११९ ॥

लगै नाग नागं सुषी सूर ऐचै। हथन्नापुरं जानि बलिभद्र षैचै॥
झरं ओझरं झार झारं झनंकै। करै गज्ज चिक्कार [4]ताजी किनंकै॥
छं० ॥ १२० ॥

छत्रं पूरनं जाम मध्यान जंची। मिले दिठ्ठ तत्तार आनंग मंची॥
चलै मातुलं ओर हक्कै कमासं। हन्यो षान षग्गं पहुंचे हहासं॥
छं० ॥ १२१ ॥

तकै तूंवरं पै लयौ गज्ज राजं। षपे दाहिमा पागरा छंडि बाजं॥
जरी सेल गाढ़ी विचं [5]पीलवानं। बियो घाव कीयौ सु कड्डै कृपानं॥
छं० ॥ १२२ ॥

कटी दंत लौ सुंड लोही भभक्कै। मनों सारदा कंदरा थी उबक्कै॥
पऱ्यो कज्जलं कूट ज्यौं तूटि हथ्थी। तजे तूंअरं भज्जिगे सब्ब सथ्थी॥
छं० ॥ १२३ ॥

भगंदंत वालौ किधौं सु प्रतीकं। महा दिघ्घ कायं अरज्जुन्न भीकं॥
दबी द्वादसं कोस भू घंट मद्धे। पढ़े वेद बानी पुरानं प्रसिद्धे॥
छं० ॥ १२४ ॥

पऱ्यौ दाहिमा भीम ज्यौं गोल कूंडै। घटो काल पथ्थं न सथ्थं उमंडै॥
अलुझ्यो पगं अग्ग में इभ्भ राजं। हरी जेम कूदे करी मध्य गाजं॥
छं० ॥ १२५ ॥

किलावा रह्यौ पग्ग में लग्ग पासी। ग्रह्यौ जीवतौ बद्रिकाश्रम्म बासी॥
सनद्धं रहि कढ्ढियं अद्ध विद्धी। चढ़ी हथ्थ दिल्ली न कारज्ज सिद्धी॥
छं० ॥ १२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-नछत्रं। (२) मो.-छुट्टे। (३) ए. कृ. को.-सुझ्झैसु।
(४) मो.-बाजी (५) मो कृ.को.-पति।

उभै मीत मानौं रहे लग्गि छत्ती। पछैं भीर सामंत की आइ पत्ती॥
षुरासान मारूफ तत्तार जोरी। करें एक फौजं धप्पौ साहि गोरी॥
छं० ॥ १२७॥

इत चहुआनं भुजा के भरोसैं। मनौं [1]लंघनो सिंघ तुट्टो सरोसैं॥
[2]गढ़ं इंदपथ्थं सु हायं सु कज्जें। उभै दीन जुट्टे करे षग्ग धज्जें॥
छं० ॥ १२८॥

रसं लूक लग्गै हुए टूक टूकं। रिनं षत्त पट्टैं [3]पुराने अचूकं॥
थटे जाइ आघाट बैकुंठ थानं। मिथ्यौ नट्ट गोटा जिसौ आव जानं॥
छं० ॥ १२९॥

बरं चंग चंगे परी हूर हूरं। रचें रुंडमालं महेसं गरूरं॥
सिवा ओन [4]धप्पौ सु कीनौ डकारं। करें षेचरा भूचरा किल्लकारं॥
छं० ॥ १३०॥

उड़ै रेन गेनं भयौ अंधकारं। पराए न अप्पं न सुझ्झै लगारं॥
इसौ भांति भारथ्थ मंतौ करूरं। घरी च्यार पंचै रह्यौ रथ्थ हूरं॥
छं० ॥ १३१॥

हरद्वार लों जाइ लायौ सु भग्गौ। सबै सेन भग्गौ तिनं लार लग्गौ॥
रह्यौ पातिसाहं भुजं लाज झल्लै। षरं षंचि साइक्क छंडै सु भल्लै॥
छं० ॥ १३२॥

गनें कौन नामं अनेकं फवज्जं। लग्यौ दाहिमा कै तुरंगम्म कज्जं॥
बड़ंगुज्जरं कम्मधज्जं पुंडीरं। छलं पारि दौर्‍यौ करे नाहिं सीरं॥
छं० ॥ १३३॥

धरे सिप्परं अड्ड ह्वै काल भेसं। लियौ संग्रहै चौंडरा गज्जनेसं॥
फटे पारसं सत्त साहस मीरं। परे पंचसै षेत हिंदू सु बीरं॥
छं० ॥ १३४॥

उभै पाहुने कीन चंदं प्रकासे। ढले मुष्ष मंगे प्रथीपत्ति पासे॥
छं० ॥ १३५॥

(१) ए.-लंघलं, लंघने, लंघनं। (२) मो.- प्रति "हकं एक एकं सहायं सु कज्जे"।
(२) मो.-सही कें।
(३) ए. कृ. को.-पीनौ।

शहाबुद्दीन को चावंड राय ने पकड़ लिया, पृथ्वीराज की जय हुई सात हज़ार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए।

कवित्त ॥ बंधि साहि साहाब। लियौ चावंड राय बर ॥
हय कंधह लै डारि। गयौ निज सथ्थ सेन नर ॥
नीर उतरि पतिश्रसुर। षेत ढुंढ्यौ प्रथिराजं ॥
मुसलमान सत सहस। परे सामथ करि काजं ॥
पंच सै सुभर हिंदू सु परि। उभै सत्ति श्रोरी सु जगि ॥
जित्यौ सु राज सोमेस सुश्र। [1]घनै जैत बज्जै बजिग ॥ छं० ॥१३६॥

पृथ्वीराज का सुलतान को क़ैद में भेज कर अनंगपाल को आदर सहित दरबार में बुला कर उन के पैर पड़ना।

मुसलमान धर गड्डि। दाग निज सुभर दिवायौ ॥
लियें जीति प्रथिराज। समह सामँत घर श्रायौ ॥
सभा बैठ भर सुभर। कह्यौ कैमास राइ गुर ॥
श्रनंगेसह लै श्राउ। चल्यौ मंचीं सु लेन घर ॥
श्रान्यौ सु राज श्रनगेस तह। प्रथीराज लग्गौ सु पय ॥
सनमान प्रान श्रति प्रीति सों। भाव भगत राजन करय ॥ छं० ॥१३७॥

दाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार में बुलाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बड़े बुद्धिमान हैं आप इस शाह के बहकाने में क्यों आ गए ?

दियौ हुकम दाहिम्म। ल्याउ दीवान साह कहु ॥
सब देषें सामंत। मुक्कि श्रानन श्रपत्ति बहु ॥

(१) ए. कृ. को.-बजै।

आन्यौ साहि हजूर। मिल्यौ प्रथिराज राज बर॥
बैठि साह साहाब। मुष्ष देषें जु [1]सुभर भर॥
बोल्यौ जु राज प्रथिराज बर। अनँगराइ तुम अति सुमति॥
भरमौ सु केम कहिं साहि के। इह तौ [2]पति उत्तरि अपति॥
छं०॥ १३८॥

दूहा॥ कहै राज प्रथिराज गुर। सुभर बोलि बर अग्ग॥
अनँग सीस उंच न करै। नाग दमन सिर नग्ग॥ छं०॥ १३९॥

सरदार गहलौत ने कहा इसमें महाराज अनंगपाल का दोष नहीं है यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है।

कवित्त॥ कहै [3]गज्जि गहिलौत। कहूं सामंत सुनौ सहु॥
अप्प अमी [4]एकंत। [5]असुर सुरतान बही कहु॥
समुद सजल जल षार। ससी लग्गौ सु कलंकह॥
हर गिलै रस राह। पंथ लुट्टाइ गोय बहु॥
दसरथ्थ आप काक सु विक्रम। दइ दिवान विपरीत गति॥
पतिसाह कही सुनतें सकल। अनगपाल नठ्ठी सुमति॥ छं० ॥१४०॥

चामुंड राय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है।

दूहा॥ वदै राइ चामंड बर। इह अवस्थ होइ अंग॥
जब सु मानसर तजि करै। हंस काग कौ संग॥ छं०॥ १४१॥

सामंतों ने जितनी बातें कहीं सब अनङ्गपाल नीचा सिर किए सुनता रहा कुछ न बोला।

जिते वचन सामँत कहे। तिते सहे अनगीस॥
पील चील्ह सम सुनि रह्यौ। उद्यौ न ऊरध सीस॥ छं०॥ १४२॥

पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरोपाव (खिल्लत) देकर छोड़ देना।

(१) मो.-सुर सुभर। (२) ए. कृ. को.-पानिं (३) कृ.-गाजि। (४) मो.-एकंग
(५) ए. कृ. को.-असुरन नं निवही कहूं।

भाव भगति प्रथिराज ने। कीनौ अति महिमान ॥
इक बाज सिरपाव दै। छंडि दियौ सुरतान ॥ छं० ॥ १४३ ॥

शहाबुद्दीन का घोड़े हाथी और दो लाख मुद्रा दंड देना और पृथ्वीराज का उसे सामंतों में बांट देना।

कवित्त ॥ छांड़ि दियौ सुरतान। डंड [1]कबूल कियौ सिर ॥
बीस [2]हस्ति सत बाज। [3]उंच जाति गातह गिर ॥
उभै लष्ष बर द्रब्य। दियौ साहाब सु दंडं ॥
सो प्रथिराज नरिंद। अद्ध दीनौ चामंडं ॥
अध दंड सब्ब सामंत कहुं। बंटि दियौ चहुआन बर ॥
दै दंड षत्त नर बर सुभर। प्रथीराज छीवै न कर ॥ छं० ॥ १४४ ॥

म्लेच्छ को जीत कर पृथ्वीराज दिल्ली आया।

दूहा ॥ मेच्छ बंध चहुआन ने। लिये हयग्गय भार ॥
फिरि प्रसन्न प्रथिराज किय। ढिल्ली कोटह बार ॥ छं० ॥ १४५ ॥
बरष एक पच्छै न्त्रपति। तब लगि भर सबलान ॥
समी हयग्गय दल सजे। चतुरंगी चहुआन ॥ छं० ॥ १४६ ॥

राजा से राव पज्जून, गोयन्द राय आदि सामंत आकर मिले।

कवित्त ॥ मिल्यौ राव पज्जून। मिल्यौ मोरी महनंसिय ॥
मिले राव पुंडीर। गए [4]दुज्जन बल नंसिय ॥
मिले निडर रट्ठौर। मिल्ल गोइंद गहिलौतं ॥
मिल्लि षीची पज्जून। जाम जद्दौं पहिलौतं ॥
आरंभ राव कनक्क मिल्यौ। रघुबंसी हय जारहौ ॥
कविचंद मिल्यौ जयचंद कौं। नाम सभट्टा भारहौ ॥ छं० ॥ १४७ ॥

अनंगपाल का मंत्री से पूछना कि अब मुझे क्या करना उचित है।

---

(१) मो.-कछू लै। (२) ए.-हस्ति। (३) ए. ऊंच जाति सुताहि गिर।
(४) मो.-खल।

अरिल्ल ॥ तब सुमंत परधानह पुच्छिय। कहौ मंत मंची मत अच्छिय ॥
किहिं विधि क्रम्म ध्रम्म जस रष्षै। सुनि परधान एह विधि अष्षै ॥
छं० ॥ १४८ ॥

मंत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय निकट है और पृथ्वीराज को दिल्ली आप दे चुके हैं अब इसका मोह छोड़ कर धर्म कर्म कीजिए।

दूहा ॥ अनगपाल तिन पावि ग्रह। अरु बर बंधव साल ॥
वृद्ध जोग वपुजोग धरि। चंपि जरा अरि काल ॥ ॥छं० ॥१४९॥
जोगिनपुर प्रथिराज कौ। दैव दियौ दिन वित्त ॥
मोह बंध बंधन तजे। ध्रम क्रम कीजै चित्त ॥ छं० ॥ १५० ॥

मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं इस की चिन्ता न कीजिए।

कवित्त ॥ न रहै सर वापीय। अनुप गढ़ मँडप बहुज्जं ॥
न रहै धन बन तरुनि। कूप प्रवत फिरि छज्जं ॥
न रहै ससि रबि भोम। जाइ [1]थावर अरु जंगम ॥
न रहै सात समंद। धरै भंजय सोइ अंगम ॥
जानहु न प्रलै चतुरंग तम। प्रलै इहै सो दिष्षियै ॥
राषौ न चिंत आचिंतका। जीमन मरन विसिष्षियै ॥ छं० ॥१५१ ॥

रानी का सलाह देना कि पृथ्वीराज से आधा पंजाब का राज्य ले लो अथवा जो व्यास जी कहैं सो करो।

पुनि बरज्यौ नृप चीय। जीय तिय [2]तीय उतारिय ॥
तजिय मान घरवार। पुच्छयौ व्यास हँकारिय ॥
चाहुआन अरि भज्जि। होइ धर अनग नरेसं ॥
पंच नदी करि अद्ध। बंटि अप्पै अध देसं ॥

(१) ए.-अवर अंवर।　　　　(२) मो.-मीस।

तुम कहौ जोति[1] जग जोति बिय। इह अपुब्ब कथ मंडिकैं॥
कै ग्रहौ पंथ बद्री सरन। धरा काम कलि छंडि कैं॥ छं० ॥ १५२॥

व्यास जी का कहना कि बलवान पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य करने दीजिए आप गुरु का ध्यान करके तप कीजिए।

कहै व्यास अनगेस। तपै ढिल्ली चहुआनं॥
बहु बर बल छज्जिहै। बंध मीषन सुलतानं॥
तुम बद्री तप जाहु। धरा संदेस न आनहु॥
इह न्रिम्मान प्रमान। पुब्ब संबंधन जानहु॥
न्रिम्मलौ ध्यान गुर ग्यान करि। हरि भजि न्रिम्मल[2] होइहै॥
नन करौ चित्त दुविधा न्रपति। अत्त पुरत्तन षोइहै॥छं० ॥१५३॥

राज्य धन सम्मान मांगने से नहीं मिलता और न बल से स्नेह होता है।

न लहै मांग्यौ देस। वेस पुनि मांग्यौ न लहै॥
न लहै मंग्यौ मान। पान फुनि मांग्यौ न लहै॥
न लहै धन मंगत्त। गत्त फुनि रूप[3] बिनानं॥
पुब्ब निबंध्यौ बंध। लहै सोई परिमानं॥
तुम जान ग्यान मतिमान गुर। नेह न लब्भै जोर बर॥
आतम्म चित्त अनचिंत तजि। इहै मत्त तुम सत्त करि॥छं०॥१५४॥

मेरा मत मानो कि बद्रीनाथ जी की शरण में जाकर कन्दमूल फल खाकर तप करो।

अरिल्ल॥ मानि मंत तुम तूंवर छंडिय। जाइ सरन बद्री तप मंडिय॥
कंद मूल आहार अचानिय। कै बन फल तन धारन पानिय॥
छं० ॥ १५५॥

(१) ए.-तन, कृ.-मम (२) मो.-षोइये, हांइये। (३) ए.-निनानं।

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल की बड़ी सेवा की जब तेरह महीने बीत गए तब अनङ्गपाल ने दौहित्र (पृथ्वीराज) से कहा कि अब मुझे बद्रीनाथ पहुंचा दो वहां बैठ कर तप और भगवान का भजन करूं, पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठकर तप भजन कर सकते हैं।

कवित्त ॥ अनगराइ अति सेव। करै प्रथिराज राज अति ॥
मास एक त्रष वित्त। बहुरि उपजी सु राज मति ॥
कह्यौ पुचि सुत सभह। मोहिं मुक्कलि बद्री दिस ॥
तहां [1]बपु साधन करौं। धरौं [2]हरि ध्यान अहो निसि ॥
बोल्यौ सु राज चहुआन बर। रहौ इहां साधन करौ ॥
तप तुला दान धर्मह बिबिध। ध्यान ग्यान हिरदै धरौ ॥
छं० ॥ १५६ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत समझाया पर अनङ्गपाल ने एक न माना उसे बद्रीनाथ जाने की लौ लगी रही। तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर के साथ दस लाख रुपया सात नौकर और दस ब्राह्मण साथ देकर उन्हें बद्रीनाथ पहुंचा दिया। अनङ्गपाल वहां जाकर तपस्या करने लगा।

कही सुत्त सोमेस। राज अनगेस न मानी ॥
बपु साधन तप काज। बद्रि दिसि मनसा ठानी ॥
तब पुची बर पुच। लष्ष दह द्रब्य सु अप्पौ ॥
सत अनुचर इक जान। बिप्र दस एक समप्पौ ॥

(१) मो.-तप। (२) ए.-अहि।

चल्यौ अनंग बद्री सरन। पहुंचायौ प्रथिराज न्रप ॥
तहं जाइ राज तोंवर सुवर। तपै राज उग्रह सु तप ॥ छं० ॥ १५७ ॥

पृथ्वीराज की सहानुभूति दयालुता और बीरता की प्रशंसा।

धनि सु चित्त प्रथिराज। करुन रस आप उपन्नौ ॥
द्रब्ब दरक सत अद्ध। पुन्य कारन भरि दिन्नौ ॥
सबै सुभर अनगान। आनि आदर ग्रह बासिय ॥
धनि धनि जंपै लोइ। कित्ति भू मंडल भासिय ॥
आषेट दुष्ट दुज्जन दलन। करै केलि सामंत सथ ॥
कबि चंद छंद बंधिय कवित। प्रथ्थिराज भारथ्थ कथ ॥ छं० ॥ १५८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल ढिल्ली आगमन फिरि प्रथिराज जुरन बद्री तप सरन नाम अठाविसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २८ ॥

[दूसरा भाग समाप्त।]

